CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 159 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 02 जुलाई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.50 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

मुख्यमंत्री भजनलाल की संवेदनशील पहल बन रही मददगार

राजस्थान में 20 लाख बुजुर्गों को मिला रामाश्रय वार्डों से स्वास्थ्य का संबल

रामाश्रय वार्ड बन रहे हैं वरिष्ठजनों की सेहत का आधुनिक केंद्र

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर सभी जिला अस्पतालों में शुरू किए गए रामाश्रय वार्ड (जीरियाट्रिक वार्ड व जीरियाट्रिक क्लिनिक) वृद्धजनों के लिए स्वास्थ्य का अनुपम उपहार साबित हो रहे हैं। ये वार्ड जनसेवा का एक सार्थक माध्यम बनकर उभरे हैं। अब तक इस मानवीय पहल से करीब 20 लाख बुजुर्ग लाभान्वित हो चुके हैं। मुख्यमंत्री के इस संवेदनशील नवाचार से हमारे बुजुर्गों को न केवल स्वास्थ्य लाभ मिला है बल्कि उनके जीवन में आशा और विश्वास का नया संचार हुआ है। उन्हें उपचार को लेकर चक्कर काटने से मुक्ति तो मिली ही है, वे अस्पतालों में विभिन्न प्रक्रियाओं से होने वाली कठिनाई से भी चिंतामुक्त हुए हैं। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री के निर्देशों के बाद चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में 14 मार्च, 2024 से प्रदेश के जिला अस्पतालों में बुजुर्गों के स्वास्थ्य की समुचित देखभाल और अस्पतालों में सम्मानपूर्वक उपचार के लिए रामाश्रय वार्डों का शुभारम्भ किया गया था। गौरतलब है कि राजस्थान सरकार के इस सेवाभावी नवाचार

का लाभ लेने के लिए करीब 19 लाख 70 हजार बुजुर्गों ने अब तक रजिस्ट्रेशन करवाया है।

12.2 लाख लैब टेस्ट और 27 हजार फिजियोथेरेपी सेवाएं

चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने बताया कि बुजुर्गों के लिए प्रारंभ किए गए इस नवाचार के तहत करीब 18 लाख बुजुर्गों ने ओपीडी सेवाओं का और 1 लाख 5 हजार से अधिक वृद्धजनों ने आईपीडी सेवाओं का लाभ मिला है। करीब 12 लाख 20 हजार लैब टेस्ट इन वार्डों के माध्यम से किए गए हैं। साथ ही, 27 हजार से अधिक रोगियों को फिजियोथैरेपी की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।

हर वार्ड का नोडल अधिकारी, बैड पर ही जांच

हर वार्ड का एक नोडल अधिकारी बनाया गया है जो वार्ड की समस्त व्यवस्थाओं का प्रबंधन करता है। रोगियों की देखभाल के लिए अलग से नर्सिंग स्टाफ और साफ-सफाई के लिए कार्मिक नियोजित किए गए हैं। वृद्धजनों को आईपीडी के समय विशेषज्ञ सेवाएं वार्ड में ही उपलब्ध हो रही हैं। जांच के लिए सैम्पल भी वार्ड से ही एकत्र कर रिपोर्ट भी बैड पर ही उपलब्ध करवाई जा रही है। वृद्धजनों के उपचार व अन्य व्यवस्थाओं से संबंधित सभी चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, फिजियोथैरेपिस्ट व अन्य कार्मिकों के दूरभाष नंबरों की सूची वार्ड के बाहर प्रदर्शित की गई है।

ओपीडी सेवाओं के लिए जीरियाट्रिक क्लिनिक

राजकीय जिला अस्पतालों व उप जिला अस्पतालों में वृद्धजनों को ओपीडी सेवाओं के लिए जीरियाट्रिक क्लिनिक की व्यस्था की गई है। साथ ही अस्पतालों में रजिस्ट्रेशन काउंटर, जांच काउंटर, दवा वितरण केंद्र आदि पर वृद्धजनों के लिए अलग से व्यवस्था सुनिश्चित की गई है, ताकि उन्हें अधिक समय कतारों में नहीं खड़ा रहना पड़े और आसानी से उपचार मिल सके।

हर वार्ड में 10 आरक्षित बैड, नर्सिंग अलार्म और फिजियोथैरेपी इकाई

रामाश्रय वार्डों में 10 फाउलर बैड आरक्षित किए गए हैं। इनमें से 5 बैड महिला व 5 बैड पुरूषों के लिए हैं। हर बैड के बीच पार्टिशन कर परदे लगाए गए हैं। बैड के पास नर्सिंग अलार्म सिस्टम लगाए गए हैं ताकि आपात स्थिति में वृद्धजन तुरंत नर्सिंग स्टाफ को बुला सकें। वार्ड में महिला व पुरूष रोगियों के लिए अलग-अलग शौचालय हैं। इन शौचालयों में ग्रेब-बार लगाए गए हैं। वार्ड में फिजियोथेरेपिस्ट व फिजियाथैरेपी से संबंधित उपकरणों की समुचित व्यवस्था की गई है। इनमें शॉर्ट वेव डायाथर्मी, अल्ट्रासाउण्ड थैरेपी, सरवाइकल ट्रेक्शन, पैल्विक ट्रेक्शन, ट्रांस इलेक्ट्रिक नर्व स्टिमुलेटर जैसे उपकरण शामिल हैं। वार्ड में व्हील चेयर, ट्रॉली, मेडिसिन कैबिनेट व अन्य आवश्यक फर्नीचर उपलब्ध करवाया गया है।

सुप्रीम कदम, पहली बार स्टाफ के लिए आरक्षण नीति लागू

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 75 साल के इतिहास में पहली बार स्टाफ के लिए आरक्षण नीति लागू की है। इसके तहत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों को सुप्रीम कोर्ट के गैर न्यायिक पदों पर नियुक्तियों और प्रमोशन में आरक्षण का लाभ मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट में आरक्षण नीति 23 जून 2025 को लागू हुई। यह भारत के सर्वोच्च न्यायालय में प्रशासनिक कामकाज में बड़े बदलाव का संकेत है। हालांकि जजों पर आरक्षण लागू नहीं होगा और सिर्फ रजिस्ट्रार, वरिष्ठ निजी सहायक, सहायक लाइब्रेरियन, जूनियर कोर्ट सहायक, चैंबर अटेंडेंट आदि पदों पर आरक्षण लागू होगा। सुप्रीम कोर्ट में आरक्षण के तहत तीन कैटेगरी होंगी, जिनमें एससी, एसटी और गैर आरक्षित शामिल होंगी। आरक्षण लागू करने को लेकर मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बीआर गवई ने कहा कि अगर सभी सरकारी संस्थानों और विभिन्न उच्च न्यायालयों में आरक्षण नीति लागू है तो फिर सुप्रीम कोर्ट को ही क्यों अपवाद रखा जाए? उन्होंने कहा कि हमारे मूल्य हमारे एक्शन का आईना होना चाहिए। 24 जून को जारी सर्कुलर के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट में अनुसूचित जाति (एससी) के कर्मचारियों को 15 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा, जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) वर्ग को 7.5 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा।

एडहॉक कमेटी के सदस्यों ने की सीएम से मुलाकात

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मंगलवार को मुख्यमंत्री निवास पर राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) की एडहॉक कमेटी के नवनियुक्त सदस्यों ने शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने मुख्यमंत्री शर्मा को पुष्पगुच्छ भेंट कर राज्य में क्रिकेट गतिविधियों को बढ़ावा देने और युवा खिलाड़ियों को निरंतर प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर एडहॉक कमिटी के संयोजक दीनदयाल कुमावत, सदस्य धनंजय खींवसर, आशीष तिवाड़ी, मोहित यादव व पिंकेश पोरवाल उपस्थित रहे।

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस दिखाए दुनिया: जयशंकर

जयपुर टाइम्स

वाशिंगटन/एजेंसी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने मंगलवार को कहा कि हम सभी एक खुला और स्वतंत्र हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र के देशों के पास विकल्पों की स्वतंत्रता होनी चाहिए, ताकि वे विकास और सुरक्षा को लेकर सही निर्णय ले सकें। पिछले कुछ महीनों में क्वाड की पहलों में हमने महत्वपूर्ण प्रगति की है। जयशंकर ने यह बात वॉशिंगटन में क्वाड के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक से पहले कही। जयशंकर ने कहा कि दुनिया को आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस दिखानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि आतंकवाद के पीड़ितों की तुलना आतंक फैलाने वालों से कभी नहीं की जानी चाहिए। विदेश मंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है और हम इस अधिकार का प्रयोग करेंगे। जयशंकर ने कहा था कि आतंकवादियों को बिना किसी सजा के काम करने की छूट नहीं दी जा सकती। उन्होंने कहा कि यह सोच कि आतंकवादी सीमा के उस पार हैं और इसलिए उन्हें जवाब नहीं दिया जा सकता, अब यह धारणा चुनौती देने योग्य है। और यही

हमने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए किया। न्यूयॉर्क में जयशंकर ने यह भी कहा कि भारत अब परमाणु ब्लैकमेल के झांसे में नहीं आएगा, खासकर उस स्थिति में जब सीमापार से आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा हो। उन्होंने कहा, अब हम इस झांसे में नहीं आने वाले। अगर वह (पाकिस्तान) हमारे यहां आकर कुछ करेगा, तो हम भी वहां जाकर उन्हीं लोगों को निशाना बनाएंगे। न तो परमाणु धमकी से डरना, न आतंकवादियों को बख्शना और न ही यह कहना कि वे सिर्फ किसी के एजेंट हैं- अब हम ऐसा नहीं मानते। हमें अपने लोगों की रक्षा के लिए जो करना पड़ेगा, करेंगे। भारतीय सेना ने 7 मई को जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर- ए-तैयबा और हिज्बुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के आतंकवादी ढांचों पर सटीक हमले किए थे।

उदयगिरि और आईएनएस तमाल से भारतीय नौसेना मजबूत

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना की ताकत लगातार बढ़ती जा रही है। मंगलवार को देश में बने अत्याधुनिक स्टील्थ युद्धपोत 'उदयगिरि' को नौसेना को सौंप दिया गया। वहीं रूस के यांतार शिपयार्ड में आईएनएस तमाल को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। दोनों ही जहाज भारत की समुद्री सुरक्षा को और मजबूती देंगे। उदयगिरि' प्रोजेक्ट 17ए के तहत बना दूसरा स्टील्थ युद्धपोत है, जिसे मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने तैयार किया है। इसमें आधुनिक हथियार और सेंसर लगे हैं। यह जहाज पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों तरह के खतरों से निपटने में सक्षम है। इसे बनाने में सिर्फ 37 महीने लगे, जो अपने आप में रिकॉर्ड है। प्रोजेक्ट 17ए, देश में बने शिवालिक क्लास फ्रिगेट्स का अगला संस्करण है। इसमें पुराने जहाजों के मुकाबले अधिक स्टील्थ तकनीक और ताकतवर हथियार लगाए गए हैं। इसके तहत कुल 7 युद्धपोत बन रहे हैं, जिनमें से दो 'उदयगिरि' सहित नौसेना को मिल चुके हैं। बाकी जहाज भी 2026 तक नौसेना में शामिल हो जाएंगे। उदयगिरि में सुपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल, मीडियम रेंज की

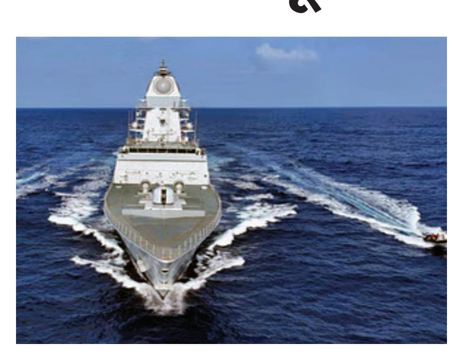

सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल, 76 मिमी की गन और तेज फायरिंग क्लोज-इन वेपन सिस्टम लगे हैं। यह पूरी तरह से भारतीय नौसेना की समुद्री ताकत को बढ़ाएगा। इसमें 75% से ज्यादा तकनीक और उपकरण स्वदेशी हैं। बता दें कि 'उदयगिरि' भारतीय नौसेना के पुराने आईएनएस उदयगिरि का आधुनिक रूप है। पुराना उदयगिरि 2007 में रिटायर हुआ था, जिसने 31 साल तक देश की सेवा की। नया 'उदयगिरि' न सिर्फ ज्यादा ताकतवर है, बल्कि इसकी डिजाइन भी पूरी तरह से भारतीय है, जिसे वारशिप डिजाइन ब्यूरो ने तैयार किया है।

केबिनेट सब कमेटी ने सौंपी रिपोर्ट

भजनलाल सरकार ने किया एसआई भर्ती रद्द करने से इंकार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राज्य सरकार ने एसआई भर्ती को रद्द करने से इंकार कर दिया है। मंगलवार को राजस्थान सरकार के एडवोकेट जनरल राजेंद्र प्रसाद ने कैबिनेट सब कमेटी की रिपोर्ट एडिशनल एफिडेविट के साथ कोर्ट में रखी। प्रसाद ने हाईकोर्ट को बताया कि कैबिनेट सब कमेटी ने भर्ती रद्द नहीं करने की सिफारिश की है, जिसे मुख्यमंत्री कार्यालय ने अप्रूव कर दिया है। इसके बाद कोर्ट ने सभी पक्षों को रिपोर्ट की कॉपी देने के निर्देश दिए। अब हाईकोर्ट ने मामले में 7 जुलाई को फाइनल सुनवाई करने के लिए कह दिया है। दरअसल 26 मई को हुई सुनवाई में सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेंद्र प्रसाद ने हाईकोर्ट में कहा था कि हम भर्ती पर स्पष्ट निर्णय लेना चाहते हैं। जब मुझसे ओपिनियन ली गई थी तो मुझे बताया गया था कि भर्ती में 400 से 500 लोग लिप्त हैं। एसओजी अभी तक केवल 55 लोगों को गिरफ्तार कर पाई है। भर्ती में 800 से ज्यादा अभ्यर्थियों के भविष्य का सवाल है। कोर्ट ने सवाल किया था कि सरकार को निर्णय लेने में इतना समय क्यों लग रहा है? इस पर महाधिवक्ता ने कहा था कि सीएम के स्तर पर निर्णय होना है, ऐसे में समय दिया जाए। वहीं याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि चार-चार एजेंसियां भर्ती रद्द करने की सिफारिश कर चुकी हैं, फिर भी सरकार निर्णय लेने में देरी कर रही है।

राजस्थान में कहर बरपा रहा घातक संक्रमण- एक ही दिन में 11 संक्रमित, 3 की मौत

जयपुर राजस्थान में कोरोना के मामले हाल में तेजी से बढ़े हैं. वहीं अब वायरल फीवर के मामलों में प्रदेश में तेजी से इजाफा देखा जा रहा है. इसके साथ ही प्रदेश में स्क्रब टाइफस का संक्रमण भी तेजी से बढ़ता दिख रहा है. राजस्थान में मंगलवार (1 जुलाई) को 11 स्क्रब टाइफस के नए मामले सामने आए हैं. इसमें सबसे ज्यादा मामला जयपुर में दर्ज किया गया है. बताया जा रहा है कि स्क्रब टाइफस के मामले जयपुर में 8, उदयपुर में 2 और चूरू में 1 मामले दर्ज किये गए हैं. जयपुर से दर्ज मामलों में एक-एक मरीज एम-जेनेक्स अस्पताल, बिलाल अस्पताल (2), जीएमसीएच उदयपुर, और एसडीएमएच (5) से हैं. संक्रमितों में 30 से 85 वर्ष तक के पुरुष व महिलाएं शामिल हैं. चूरू से 55 वर्षीय महिला और उदयपुर से 27 व 33 वर्षीय पुरुष, तथा 24 वर्षीय महिला संक्रमित पाए गए हैं. वर्तमान में 7 मरीज विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं. इनमें एक एसएमएस अस्पताल जयपुर, दो आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर शेष एसडीएमएच जयपुर और एम्स जोधपुर में उपचाराधीन हैं. इस साल राज्य में अब तक कुल 737 स्क्रब टाइफस के मामले दर्ज हो चुके हैं. इनमें से 661 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं, 73 सक्रिय मामले हैं और अब तक 3 लोगों की मौत हो चुकी है. स्वास्थ्य विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि किसी भी तरह का बुखार, बदन दर्द या वायरल लक्षण महसूस होने पर तुरंत जांच कराएं और इलाज में देरी न करें. साथ ही, साफ-सफाई, मच्छरों की रोकथाम और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें.

मरीजों के लिए अच्छी खबर: ऑनलाइन अपाइमेंट सिस्टम की होगी व्यवस्था

एसएमएस अस्पताल में लागू होगा क्यू मैनेजमेंट, मरीजों को लंबी कतारों से मिलेगी निजात

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मरीजों के लिए राहत की खबर है। सवाई मानसिंह अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले मरीजों को अब धक्के नहीं खाने होंगे। मरीजों की सहूलियत के लिए सरकार जल्द ही यहां क्यू मैनेजमेंट व ऑनलाइन अपॉइंटमेंट सिस्टम लागू करने जा रही है। राजस्थान के इस सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में हर दिन औसतन 15 हजार मरीजों का इलाज होता है। यानी सलाना करीब 65 से 70 लाख मरीज यहां आते हैं और करीब 2.5 लाख सर्जरी यहां हर साल होती है। मेडिकल एजुकेशन विभाग के सचिव आईएएस अम्बरीश कुमार ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश हैं कि एसएमएस में जो भीड़ आती है, उसे व्यवस्थित रूप से मैनेज किया जाए। इसके लिए राज्य सरकार ने क्यू मैनेजमेंट व ऑनलाइन अपॉइंटमेंट सिस्टम लागू करने की बजट घोषणा

भी की थी। राज्य सरकार कांवटिया अस्पताल में क्यू मैनेजमेंट सिस्टम पहले ही लागू कर चुकी है। उन्होंने बताया कि क्यू मैनेजमेंट सिस्टम के चलते मंगलवार को डॉक्टर्स डे पर कांवटिया अस्पताल में रिकॉर्ड 3500 मरीजों की ओपीडी हुई और इसमें कहीं कोई परेशानी नहीं आई। अब जिले के सबसे बड़े अस्पताल में इसे लागू करने की कवायद चल रही है। अंबरीश कुमार ने बताया कि क्यू मैनेजमेंट के लिए हर डॉक्टर के कैबिन के बाहर एक टीवी स्क्रीन लगाई जाएगी। जो मरीज डॉक्टर से मिलना चाह रहे हैं उनके नाम और टोकन नंबर स्क्रीन पर नजर आएंगे। मरीज वेटिंग एरिया में वेट कर सकते हैं और उन्हें डॉक्टर के चैंबर में भीड़ लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

राज उपचार पर मिलेगा अपॉइंटमेंट

इसके अलावा राज उपचार नाम से एक ऑनलाइन एप भी तैयार की गई है, जो एंड्रॉयड और आईफोन दोनों पर काम करती है। इस एप के जरिए मरीज डॉक्टर से मिलने का समय तय कर सकता है, इससे उसके समय की बचत भी होगी। जो मरीज अपॉइंटमेंट लेकर आएंगे, उनके काउंटर भी अलग होंगे। मरीज को जितने बजे की अपॉइंटमेंट मिलेगी, उससे 5 या 10 मिनट आगे डॉक्टर उसे देख लेगा।

जुलाई तक लागू होगी नई व्यवस्था

एसएमएस में नई व्यवस्था जुलाई से शुरू करना चाहते हैं। फिलहाल जयपुरिया और कांवटिया में इसे लागू कर दिया गया है। एसएमएस में टीवी और लैन कैबलिंग का काम किया जा रहा है और यहां यूपीएस भी लगाया जाएगा ताकि सिस्टम रिलायबल रहे।

दवा-लैब टेस्ट के लिए भी लाइन से मुक्ति

इसके दूसरे चरण में एक और व्यवस्था लागू होगी। मरीज जब डॉक्टर को दिखाकर आएगा तो उसकी पर्ची स्कैन होगी और वह फार्मासिस्ट के पास चली जाएगी। ताकि जब मरीज दवा की दुकान पर पहुंचे तो उसे इंतजार नहीं करना पड़े ौर उसे तुरंत ही दवा भी मिल जाए। इसी तरह से जितने भी लैब टेस्ट होंगे, सिटी स्कैन, एक्स-रे या एमआरआई, इन सबके लिए भी ऑनलाइन अपॉइंटमेंट सिस्टम लागू होगा, ताकि वहां पर भी लाइन लगाने की जरूरत न पड़े।

CMYK

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
2 जुलाई, 2025

दस्त रोकथाम अभियान का जिला स्तरीय शुभारम्भ

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.)। दस्त रोकथाम अभियान का जिला स्तरीय शुभारम्भ 1 जुलाई मंगलवार को सरदार जनाना अस्पताल पर सीएमएचओ डॉ. आशिष सिंह शेखावत द्वारा किया गया। सीएमएचओ ने बताया कि दस्त रोकथाम अभियान थीम "डायरिया की रोकथाम, सफाई और ओआरएस से रखें अपना ध्यान" पर आयोजित किया जा रहा है। बच्चों को डायरिया से होने वाले बाल मृत्यु को कम किया जाना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। अतिरिक्त सीएमएचओ डॉ जय भगवान यादव ने बताया कि अभियान 1 जुलाई से 15 अगस्त 2025 तक 06 सप्ताह के लिए चलाया जाएगा। इस बीच आशायें 5 साल तक के बच्चो का घर-घर जाकर सर्वे करेगी और दो- दो ओआरएस के पैकेट तथा 14 दिन की जिंक टेबलेट्स का वितरण करेंगी। सभी को ओआरएस घोल बनाने की विधि एवं जिंक टैबलेट की उपयोगिता बताई जावेगी। सभी राजकीय चिकित्सालय, आयुष्मान आरोग्य मंदिर तथा सामुदायिक/प्राथमिक/उप स्वास्थ्य केन्द्र पर ओआरएस जिंक कार्नर स्थापित किए जाएगे। इन कार्नर्स की मदद से ओआरएस तथा जिंक टेबलेट्स का निशुल्क विवतण किया जाएगा। साथ ही लोगों में डायरिया प्रबंधन के लिए प्राथमिक उपचार की जानकारी दी जाएगी। इस अवसर पर बीसीएमओ डॉ पूरण रहीसा , चिकित्सा अधिकारी डॉ दिलीप पंवार, डॉ? मोइनुद्दीन जिला नोडल अधिकारी रविकांत जांगिड़ , बीपीएम विजय तिवारी व समस्त अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिला कांग्रेस कमेटी (चिकित्सा प्रकोष्ठ) अलवर के अध्यक्ष की डॉ. संदीप सैनी ने ली शपथ

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। तोतूका भवन नारायण सिंह सर्किल टोंक रोड पर चिकित्सा प्रकोष्ठ प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रदेश चिकित्सा प्रकोष्ठ कमेटी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें अलवर जिले से डॉ संदीप सैनी ने अध्यक्ष चिकित्सा प्रकोष्ठ अलवर जिला के पद पर शपथ ली। तत्पश्चात डॉ संदीप सैनी ने प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा तथा नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली को पुष्प गुच्छ भेट कर आभार व्यक्त किया तथा साथ ही "डॉक्टर्स डे" के उपलक्ष में चिकित्सा सेवाओं के लिए डॉ संदीप सैनी को प्रदेश चिकित्सा प्रकोष्ठ अध्यक्ष विकास महला द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया इस मौके पर राजस्थान कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, राजस्थान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली पूर्व विधानसभा स्पीकर डॉ सीपी जोशी प्रदेश चिकित्सा प्रकोष्ठ अध्यक्ष डॉ विकास महला संगठन महामंत्री ललित तुनवाल चिकित्सा प्रकोष्ठ कार्यालय प्रभारी कृष्ण कुमार, डॉ वीरेंद्र सिंह तथा प्रदेश की समस्त कार्यकारिणी व प्रदेश के जिला अध्यक्ष उपस्थित रहे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडा

ग्रामीणों ने कहा आम रास्ता अतिक्रमण व कीचड मुक्त होने से अब होगी राहगीरों की राह आसान

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिले में आयोजित किए जा रहे पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के शिविर आमजन के लिए राहत लेकर आ रहे हैं। शिविरों में आमजन को मूलभूत समस्याओं समाधान मौके पर ही होने से उत्साह का माहौल है। लक्ष्मणगढ तहसील की ग्राम पंचायत दीनार में आयोजित शिविर में ग्राम खोह के ग्रामीणों की आम रास्ते से अतिक्रमण व साफ-सफाई कराने की परिवेदना का तुरन्त निदान कराया गया। ग्राम खोह के ग्रामीणों ने शिविर में पहुंचकर गांव के आम रास्ते पर हो रहे अतिक्रमण व रास्ते में गंदे पानी के भराव की समस्या से निजात दिलाने के लिए अधिकारियों को अवगत कराया, जिस पर अधिकारियों ने त्वरित संज्ञान लेकर जेसीबी की सहायता से रास्ते के अतिक्रमण व कीचड को हटाया गय, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में हो रही असुविधा से छुटकारा मिला। ग्रामीणों ने बताया कि गांव के रास्ते पर जगह-जगह अतिक्रमण होने से आने-जाने वाले राहगीरों को समस्या के साथ ही दुर्घटना की संभावना रहती थी। इसके अतिरिक्त रास्ते में गंदी पानी के निकास के कारण मच्छर इत्यादि से बीमारियां फैलने की आशंका थी। शिविर में तत्काल ही समस्या का समाधान होने से ग्रामीणों को आवागन की सुगमता होगी। समस्या का समाधान होने पर ग्रामीणों ने खुशी जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार जताया।

विद्याश्रम में मनाया राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। विद्याश्रम स्कूल, पोलो ग्राउंड में राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्राथमिक वर्ग तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें उन्हें स्वास्थ्य सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। डॉक्टर ऋचा मिश्रा ने विद्यार्थियों को दांतों की सुरक्षा और स्वच्छता के बारे में विस्तार से बताया। संस्था निदेशक मंजू लाटा ने डॉक्टर दिवस की बधाई देते हुए डॉक्टर ऋचा को गुलदस्ता देकर सम्मानित किया और उनका आभार व्यक्त किया।

रोटरी क्लब अलवर के नए सत्र का शुभारंभ वृक्षारोपण, रक्तदान, डॉक्टर डे व सीए डे मनाकर किया

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। रोटरी क्लब अलवर के नये सत्र की शुरुआत माँ के प्रेम और प्रकृति की छाया को एक साथ सलाम करते हुए एक पेड़ माँ के नाम वृक्षारोपण कार्यक्रम से की गई। वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने पेड़ लगा कर की। क्लब की प्रथम महिला अध्यक्ष बबिता खण्डेलवाल ने मंत्री संजय शर्मा का स्वागत कर बताया की महाराणा प्रताप पार्क मोती डूंगरी पर 101 पेड़ व 21 ट्री गार्ड लगाये सभी पेड़ माँ को समर्पित किये गए। सचिव ऋषि मित्तल ने बताया कि पेडों का रख रखाव मोती डूंगरी मॉर्निंग वॉक क्लब और श्री संत सामाजिक सेवा संस्थान द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम के संयोजक हरि प्रसाद खंडेलवाल ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। वृक्षारोपण में पंडित जले सिंह, रोटरी क्लब के पूर्व प्रान्तपाल क्रांति मेहता, पूर्व प्रान्तपाल पवन खंडेलवाल, असिस्टेंट गवर्नर राजेश सिंघल, पूर्व अध्यक्ष प्रमोद आर्य, पूर्व अध्यक्ष मनीष जैन, पूर्व अध्यक्ष सुरेश गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष जितेन्द्र खुराना, आगामी अध्यक्ष नीलू जैन, रोटेरियन अनिल जैन, दीपकमल अरोडा, हरीश जसोरिया, राजेश खंडेलवाल, प्रमोद विजय, घनश्याम गुप्ता, इंदिरा गुप्ता, कंचन खुराना, अन्नू मित्तल, कमला मेहता, सरोज गुप्ता, मंजू खंडेलवाल, राकेश खन्ना, ममता खन्ना, किरोड़ी गुप्ता , कुसुम गुप्ता, प्रवीण खंडेलवाल, चित्रा खंडेलवाल, सुनील अग्रवाल, बबिता अग्रवाल, मगन चंद जैन, आशुतोष शर्मा, अभिषेक तनेजा, डॉ के के शर्मा आदि उपस्थित थे । अंत मे रोटेरियन प्रमोद विजय व मंजू खंडेलवाल का जन्मदिन मनाया गया। वृक्षारोपण के बाद रक्तदान शिविर 7 का साथ का आयोजन जयंती फैक्टरी, राजगढ़ रोड, दादर में स्वर्गीय श्री जयंती प्रसाद जैन की याद में किया गया। रक्तदान दान की शुरुआत रोटरी क्लब की अध्यक्ष बबिता खंडेलवाल, सचिव ऋषि मित्तल, रोटरी संस्थान अध्यक्ष के के खंडेलवाल, सचिव राजेश सिंघल, सदस्य प्रमोद आर्य, जयंती परिवार से पारस जैन, अभिषेक जैन, अंशुल जैन, आँचल जैन ने दीप प्रज्वलन कर की। अध्यक्ष बबिता खंडेलवाल व सचिव ऋषि मित्तल ने सभी रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट प्रदान किये व जयंती परिवार तथा समस्त स्टाफ का आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर के संयोजक रोटेरियन विकास गुप्ता ने बताया कि जयंती परिवार से अभिषेक जैन व अंशुल जैन ने रक्त दे कर शिविर की शुरुआत की जिसके समस्त स्टाफ का हौसला बढ़ा व 55 यूनिट रक्त प्राप्त हुआ। शिविर में रोटेरियन नरेन्द्र हीरावत, संगीता हीरावत, राकेश खनना, ममता खनना, आशीष खंडेलवाल, दीपाली खंडेलवाल, सुमन यादव, अन्नू मित्तल, अशोक खंडेलवाल, साक्षी खंडेलवाल व समस्त जयंती स्टाफ उपस्थित रहे। रोटरी क्लब ऑफ अलवर द्वारा डॉक्टर डे व सीए डे मनाया गया। सचिव ऋषि मित्तल ने बताया कि रोटरी क्लब अलवर अध्यक्ष व सदस्यों ने शॉल व मोमेन्टो दे कर ष्टसह्राह डॉ योगेन्द्र शर्मा, डॉ सरोज शर्मा, डॉ मानवेन्द्र गोस्वामी, डॉ प्रमोद रावत, डॉ भुपेन्द्र गुप्ता, डॉ सुनील जैन, डॉ अमित खंडेलवाल, डॉ, धर्म सिंह, डॉ के के शर्मा, डॉ राजेन्द जुनेजा, सीए क्रांति मेहता, सीए के के खंडेलवाल, सीए ललित अग्रवाल, सीए जितेंद अग्रवाल आदि को सम्मानित किया।

डॉक्टर डे पर चिकित्सकों ने लगाए पौधे ओर दिया पर्यावरण को बेहतर बनाए रखने का संदेश

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिलेभर में मंगलवार को पौधरोपण करते हुए खुशहाली के बीच डॉक्टर डे मनाया गया। जहां चिकित्सकों ने पर्यावरण को बेहतर बनाए रखने के लिए पेड़ पौधों के महत्व को बताते हुए खुशी मनाई ओर पौधरोपण का संदेश दिया। महावीर इंटरनेशनल अलवर केन्द्र द्वारा आचार्य हस्ति चिकित्सालय परिसर में मंगलवार को डॉक्टर डे" के उपलक्ष्य में पोधा रोपण किया गया व संस्था के पदाधिकारियों द्वारा डाक्टरो का सम्मान किया गया। केन्द्र सचिव वीर सूर्यकान्त भारद्वाज ने बताया कि इस दौरान डॉ सुरेन्द्र जैन, डॉ हरिसिंह यादव, वीर जिनेन्द्र जैन, वीर हेमन्त मोदी, वीर अंजय जैन, वीर राजेश भट्ट, वीर सुनील जैन, वीर एम.एल. गुप्ता ने उपस्थित रहते हुए पौधे लगाए ओर सभी को पौधरोपण किए जाने का संदेश दिया। मित्तल हॉस्पिटल द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मंगलवार को चिकित्सक दिवस को हॉस्पिटल परिसर में ही 5 पेडो के पौधारोपण से प्रारंभ किया गया, जिसमे बडी संख्या में चिकित्सक, मरीजो के परिजनों एवं नर्सिंग सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में आर डी एन सी मित्तल फाउंडेशन की आजीवन ट्रस्टी आरुषी मित्तल ने स्वयं भी पौधा लगाते हुए पर्यावरण को बेहतर बनाने एवं हर व्यक्ति का स्वयं का पर्यावरण स्वच्छता के प्रति नैतिक दायित्व बताते हुए सभी को पेड लगाने, उनकी सुरक्षा करने एवं स्वच्छता बनाये रखने पर हेतु जागरूक किया ओर सभी चिकित्सको को बधाई दी। वहां लगाए पेड़ों की सुरक्षा के लिए ट्री गार्ड भी लगाये कुल 5 पेड लगाये गए। कार्यक्रम में डॉ.एस.सी.मित्तल, अल्का मित्तल, आरुषी मित्तल, गिरीश गुप्ता, डॉ.महेश जैन, डॉ. सुधीर गुप्ता सुधीर गुप्ता ,सुधीर गुप्ता, डॉ. कुमुद गुप्ता, डॉ अभिषेक खंडेलवाल, डॉ रोताश कुमार, डॉ. मयंक यादव, लता सी बोस , ओमना बीनू , पूजा शर्मा, गरिमा खट्टर, रवि शर्मा, सुनील क्षरमा, मुकेश, पुरन गार्ड इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

बाड़ी माता गौशाला में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष का जन्मदिन सेवा व श्रद्धा के साथ मनाया

जयपुर टाइम्स

विजयनगर(निसं.)। अखिल भारतीय जायसवाल कलाल सर्ववर्गीय महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं भारत विकास परिषद के सक्रिय सदस्य रामस्वरूप मेवाड़ा का जन्मदिवस श्रद्धा और सेवा के साथ बाड़ी माता गौशाला में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मेवाड़ा द्वारा गौशाला में चारा डालकर की गई। इसके बाद बाड़ी माता जी के पुजारी द्वारा उन्हें साफा व दुपट्टा पहनाकर पारंपरिक स्वागत किया गया। भारत विकास परिषद के सदस्य अजय कुमार पोखरना द्वारा साफा, शॉल व पगड़ी पहनाकर उनका विशेष सम्मान किया गया। साथ ही परिषद की ओर से माला, दुपट्टा, डायरी व पेन भेंट कर जन्मदिन की बधाई दी गई। कार्यक्रम में बाड़ी माता जी के कैलाश व समस्त पुजारी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ धार्मिक स्वागत किया गया, जिससे वातावरण भाव-विभोर हो गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य एवं समाज के वरिष्ठजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें प्रमुख रूप से चंद्रप्रकाश आचार्य (बडली), संजय जोशी (डाबला), कृष्णा बाबू (भीलवाड़ा), मोहित दाधीच (बडली), कुलदीप दाधीच (बरल), महावीर शास्त्री (बिजयनगर), सुशील दादीच (सांगरिया), नितेश दादीच (काशी), हर्ष दादीच (बडली) इन सभी ने मेवाड़ा का माल्यार्पण कर जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित कीं। कार्यक्रम में भारत विकास परिषद के प्रमुख सदस्यों में अजय कुमार पोखरना, डी.सी. जैन, ज्ञानचंद नाहर, विमल भंसाली, सिद्धार्थ बोरडिया, पंकज पीपाड़ा सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य सेवा, श्रद्धा और सामाजिक समर्पण के भाव को प्रकट करना रहा, जिसमें मेवाड़ा की सादगी, नेतृत्व और जनसेवा के प्रति समर्पण की सभी ने सराहना की।

विद्यालय में प्रथम दिवस पौधा भेंट कर किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। राजकीय प्राथमिक विद्यालय नंबर 9 फतेहपुर में नए सत्र के प्रथम दिवस विद्यार्थियों के स्कूल पहुंचने पर पर उनको पौधा भेंट कर स्वागत किया गया।प्रधानाध्यापिका शबनम भारती ने बताया कि आज के विद्यार्थी कल के नागरिक हैं और उन्हीं के कंधों पर आने वाले समाज की और हमारे देश का की जिम्मेदारी है। इस सब को मद्दे नजर रखते हुए एक जुलाई को नए सत्र के प्रथम दिवस विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने व उनको वृक्षों के महत्व के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से विद्यालय पहुंचने पर उनका पौधा भेंट कर स्वागत किया गया। उल्लेखनीय है कि अध्यापिका प्रति वर्ष सैकड़ों पौधों का रोपण और वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का प्रयास करती है इस क्रम में वे अब तक हजारों पौधे वितरित चुकी हैं।

गिव अप अभियान की अवधि बढ़ाई 31 अगस्त 2025 तक

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के मार्गदर्शन में राज्य सरकार निरंतर वंचित वर्गों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री के स्पष्ट निर्देश हैं कि अंतिम पंक्ति्त में खड़े लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़कर लाभान्वित किया जाए ताकि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। राज्य सरकार द्वारा खाद्य सुरक्षा का लाभ स्वेच्छा से छोडने का गिव अपअभियान 01 नवम्बर 2024 से प्रारंभ किया गया था। गिव अपअभियान की अवधि दिनांक 31 अगस्त 2025 तक बढ़ा दी गई है। इस अभियान के तहत आज दिनांक 1 जुलाई तक राजस्थान में 22 लाख 31 हजार 899 व्यक्ति्तयों ने स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा का लाभ छोडा है, जिससे राज्य सरकार पर वार्षिक 409.39 करोड़ की राशि का वित्तीय भार कम होगा। अलवर जिले में 63 हजार 355 व्यक्तियों ने स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा का लाभ छोडा है। गिव अप अभियान के तहत संभावित अपात्र लोगों को नोटिस जारी किए जा रहे हैं। खाद्य विभाग शीघ्र ही परिवहन विभाग से चारपहिया वाहन स्वामी का डाटा संकलित कर खाद्य सुरक्षा में चयनित अपात्र लोगों को जारी करेंगे और उनसे वसूली की कार्यवाही की जावेगी। इस अभियान में खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित ऐसे लाभार्थी जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं जैसे आयकरदाता, 1 लाख से अधिक वार्षिक आय है, चौपहिया वाहन धारक, परिवार, जिसका कोई सदस्य सरकारी / अर्द्धसरकारी / स्वायत्तशासी संस्थाओं में कर्मचारी हो, वो स्वेच्छा से अपने नजदीकी उचित मूल्य दुकानदार / जिला रसद कार्यालय, अलवर में उपलब्ध निर्धारित प्रपत्र भरकर अपना नाम हटवा सकते हैं। प्रपत्र जिले की सभी उचित मूल्य दुकानों पर उपलब्ध है। विभाग द्वारा गिव अप अभियान के तहत नाम हटाने की प्रक्रिया का सरलीकरण कर दिया गया है। अब कोई भी अपात्र व्यक्ति खाद्य विभाग, राजस्थान के पोर्टल https://food.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध लिंक "गिव-अप अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा योजना (NFSA) से स्वतः हटने के लिए आवेदन करें " पर आवेदन कर अपना नाम स्वयं खाद्य सुरक्षा सूची से हटा सकते हैं। गिव अप अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा द्वारा अब तक राज्य में 14 जिलों में दौरा करके समीक्षा बैठक की गई है तथा गिव अप अभियान को और अधिक व्यापक बनाने हेतु समस्त प्रवर्तन स्टॉफ को प्रभावी तरीके से कार्य करने हेतु निर्देशित किया गया है तथा नये लक्ष्य तय किये गये हैं।

शिविर में 106 यूनिट रक्त संग्रहित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। आदर्श विद्या मन्दिर मंडावा व सुरेश चंद्र तेतरवाल वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को दिवंगत शिक्षाविद् सुरेश चंद्र तेतरवाल की पुण्य स्मृति में विशाल रक्तदान शिविर व निशुल्क नेत्र जांच व सर्जरी परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह श्रद्धांजलि सभा के साथ हुई, जिसमें अनेक व्यक्तियों ने तेतरवाल को श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रद्धांजलि सभा में सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर केंद्रीय सहकारी बैंक सीकर ताराचंद भींचर, शिक्षाविद व भामाशाह मक्खन लाल यादव, घमदनसिंह ढाका, विद्यालय समिति के कोषाध्यक्ष हरिशंकर राहड़, शीशराम जाखड़, महेशचंद्र तेतरवाल, आदर्श तेतरवाल, अभिषेक भींचर, मुजिबर रहमान भाटी, अशोक मोगा आदि ने पुष्प अर्पित कर तेतरवाल को नमन करते हुए उनके जीवन चरित्र को रेखाकिंत किया। विद्यालय प्रधानाचार्य मुकेश कुमार स्वामी ने सुरेश चंद्र तेतरवाल का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी ओर से शिक्षा, समाज और मानव सेवा के क्षेत्र में किए गए अतुलनीय योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि तेतरवाल जी एक कर्मठ, दूरदर्शी व सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने मंडावा क्षेत्र को पहली बार सीबीएसई शिक्षा से जोड़ा। प्रधानाचार्य श्रवण कुमार ने बताया कि श्रद्धांजलि सभा के पश्चात प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक रक्तदान व नेत्र चिकित्सा शिविर का संचालन हुआ। शिविर में डॉ. सोनाराम कुमावत (फेको व लेसिक सर्जन, नेत्र रोग विशेषज्ञ) व डॉ. अभिषेक वर्मा (रेटिना कंसल्टेंट) पधारे, जिन्होंने मरीजों की आँखों की जांच की व उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श प्रदान किया। शिविर में निशुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं। नेत्र जाँच शिविर में 135 की संख्या में स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया और लाभ प्राप्त किया। वहीं मानवता की सेवा में युवाओं में रक्तदान को लेकर उत्साह देखने को मिला। 106 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। संस्था निदेशक अभिषेक तेतरवाल ने बताया की यह आयोजन सुरेश चंद्र तेतरवाल के सेवाभावी जीवन को समर्पित रहा, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में मंडावा क्षेत्र को नई दिशा दी। उनकी स्मृति में आयोजित यह शिविर समाज के प्रति उनकी सेवा भावना का प्रतीक बना। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आदर्श विद्या मंदिर मंडावा के समस्त स्टाफ, छात्र-छात्राओं व सुरेश चंद्र तेतरवाल वेलफेयर सोसाइटी का विशेष योगदान रहा।

महिला पॉलिटेक्निक कॉलेजों में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश की अंतिम तिथि 11 जुलाई

राजकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेजों में चल रहे हैं रोजगारपरक कोर्स

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान सरकार के तकनीकी शिक्षा विभाग के अन्तर्गत संचालित राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालयों में दो एवं तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। इच्छुक छात्राएं 11 जुलाई 2025 तक इन पाठ्यक्रमों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं। महाविद्यालयों में टैक्सटाइल डिज़ाइन, इंटीरियर डेकोरेशन, ब्यूटी कल्चर, कॉमर्शियल आर्ट, मॉडर्न ऑफिस मैनेजमेंट एवं कॉस्ट्यूम डिज़ाइन एंड ड्रेस मेकिंग जैसे रोजगारपरक कोर्स उपलब्ध हैं। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता 10वीं उत्तीर्ण होना आवश्यक है। ऑनलाइन आवेदन कौशल दर्पण पोर्टल पर किया जा सकता है। प्रवेश प्रक्रिया की नोडल एजेंसी सेंटर फॉर ई-गवर्नेंस जयपुर है तथा नोडल सेंटर राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, गांधी नगर, जयपुर को बनाया गया है। अधिक जानकारी के लिए 0141-2706688 एवं 8619637821 पर संपर्क किया जा सकता है। प्रवेश से संबंधित यह सूचना जनहित में जारी की गई है।

प्राध्यापक एवं कोच (माध्यमिक शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024,

ड्राइंग तथा होम साइंस विषय की परीक्षा आयोजित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जा रही प्राध्यापक एवं कोच (माध्यमिक शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 के अन्तर्गत मंगलवार को ड्राइंग तथा होम साइंस विषय की परीक्षाओं का आयोजन किया गया। परीक्षा में अभ्यर्थियों का उपस्थिति प्रतिशत क्रमशः 49.96 तथा 36.18 रहा। निर्धारित परीक्षा कार्यक्रमानुसार प्रातः 9 से 12 बजे तक ड्राइंग विषय की परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा के लिए 4 हजार 518 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए थे। इनमें से 2 हजार 257 अभ्यर्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। होम साइंस विषय के अभ्यर्थियों के लिए परीक्षा का आयोजन दोपहर 2.30 से 5.30 बजे तक किया गया। परीक्षा के लिए 2 हजार 623 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए थे। इनमें से 949 अभ्यर्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए।

राज्यपाल ने राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस की सभी को बधाई और शुभकामनाएं दी, राज्यपाल श्री बागडे को "कुछ जिंदगी से कुछ जहान से" पुस्तक भेंट

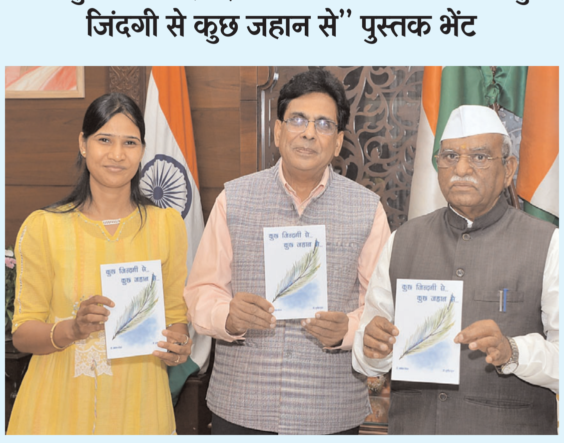

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने 'नेशनल डॉक्टर्स डे' पर देशभर के चिकित्सकों को बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र सेवा का कार्य है। 'डॉक्टर्स डे' पर मंगलवार को राजभवन में उनसे वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. अशोक गोयल एवं डॉ. सुनीता गुप्ता ने मुलाकात की। इस अवसर पर चिकित्सकों के लिए प्रेरणा भाव लिए प्रकाशित पुस्तक "कुछ जिंदगी से कुछ जहान से" की प्रति भेंट की। राज्यपाल श्री बागडे ने इस पुस्तक में संकलित सामग्री की सराहना की। उन्होंने दोनों ही चिकित्सक लेखकों को प्रकाशित पुस्तक के लिए शुभकामनाएं दी और विश्वास जताया कि यह पुस्तक पाठकों को सकारात्मक दृष्टि देने के लिए उपयोगी होगी। लेखक, चिकित्सक डॉ.अशोक गोयल ने बताया कि "कुछ जिंदगी से कुछ जहान से" पुस्तक जीवन से जुड़े अनुभवों, चिकित्सक रहते जो कुछ सीखा-समझा है, उसका अनुभव संसार है। उन्होंने बताया कि अत्यधिक कार्य से आने वाले नकारात्मक विचारों और तनाव से दूर कर इसमें जीवन को सकारात्मक ढंग से जीने के सूत्र एकत्र किए गए हैं। पुस्तक में रोचक उद्धरणों के माध्यम से पाठकों को प्रेरित करने का प्रयास किया गया है।

अति पिछड़ा वर्ग एवं गुर्जर समाज की विभिन्न मांगों पर चर्चा के लिए मंत्रीगण समिति की प्रथम बैठक आयोजित

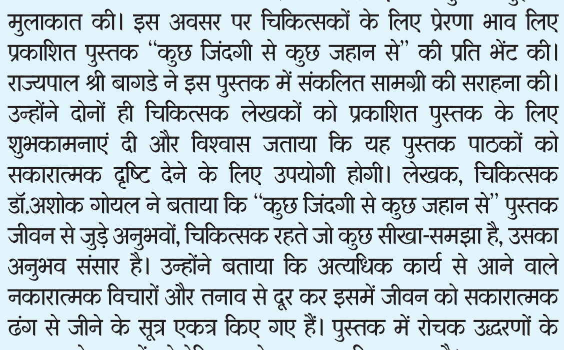

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। अति पिछड़ा वर्ग एवं गुर्जर समाज के प्रतिनिधियों द्वारा उठाई जा रही विभिन्न मांगों पर चर्चा के लिए मंगलवार को शासन सचिवालय में मंत्रीगण समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गयी। बैठक में राज्य सरकार एवं गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के बीच हुए समझौतों पर विस्तृत चर्चा की गयी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों पर बनी समिति की अगुवाई में सम्पन्न हुई इस बैठक में गुर्जर आरक्षण आंदोलन से संबंधित मुकदमों के निस्तारण, रोस्टर एवं विभिन्न भर्तियों में आरक्षण, आन्दोलन प्रभावितों को अनुकम्पा नियुक्ति, देवनारायण योजना की प्रगति, 5 प्रतिशत अति पिछड़ा आरक्षण को नवीं अनुसूची में शामिल कराने सहित समस्त बिन्दुओं पर सकारात्मक चर्चा की गयी। समिति द्वारा सम्बंधित विभागों को इस सम्बन्ध में 15 दिन में तथ्यात्मक रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए गए तथा आंदोलन समिति द्वारा नामित प्रतिनिधियों के साथ चर्चा करने का निर्णय लिया गया। बैठक में संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम, अतिरिक्त मुख्य सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग अपर्णा अरोरा, अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह विभाग भास्कर ए. सावंत सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जन परिवेदनाओं के निस्तारण का अंतिम पड़ाव बने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविर

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को दिये निर्देश

नरसिंहपुर में लिया शिविर का जायजा, आमजन से संवाद कर लिया फीडबैक

कलक्टर सभागार में आयोजित बैठक में की शिविरों में हुए कार्यों की प्रगति की समीक्षा

अधिकारियों को शिविर में अधिक से अधिक लोगों को लाभांवित करने के दिये निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कांस.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की संवेदनशील पहल के तहत राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए जयपुर जिले में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा आयोजित किया जा रहा है। जयपुर जिले में शिविरों के सफल आयोजन के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी स्वयं पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविरों की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। मंगलवार को जिला कलक्टर ने सांगानेर के नरसिंहपुर में आयोजित शिविर में व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिला कलक्टर ने शिविर में उपस्थित आमजन से संवाद किया एवं राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर फीडबैक भी लिया। इस दौरान जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने की सख्त हिदायत दी। वहीं, जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने शिविरों में हुए कार्यों की प्रगति की उपखंडवार एवं विभागवार समीक्षा की साथ ही आगामी शिविरों की कार्ययोजना के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने विभागीय अधिकारियों को पखवाड़े के तहत आयोजित किये जा रहे शिविरों के सफल संचालन करते हुए ज्यादा से ज्यादा आमजन को राहत पहुंचाने के लिए निर्देशित किया। गौरतलब है कि जयपुर जिला प्रशासन द्वारा पखवाड़े के तहत जिले के 16 उपखण्डों की 19 पंचायत समितियों की 461 ग्राम पंचायतों में संचालित किया जा रहा है। प्रतिदिन औसतन लगभग 35 ग्राम पंचायत में प्रातः 9:30 बजे से सायं 05:30 बजे तक आयोजित हो रहे शिविरों में 16 विभागों द्वारा 63 कार्य किए जा रहे हैं। शिविरों का आयोजन दिनांक 07 जुलाई तक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर एवं दिनांक 8 जुलाई एवं 9 जुलाई को फॉलोअप कैम्प तहसील मुख्यालय पर किया जायेगा। जिला कलक्टर के निर्देशों की अनुपालना में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के सफल संचालन हेतु प्रशासनिक नोडल अधिकारी, तकनीकी नोडल अधिकारी और उपखंडवार नोडल प्रभारी अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। जिला प्रशासन द्वारा पीएम सूर्य घर बिजली योजना, श्मशान भूमि आवंटन, जनसुनवाई शिकायतों का निस्तारण भी किया जा रहा है। जिला परिषद द्वारा शिविर में मातृभूमि से कर्म भूमि, हरियालो राजस्थान, वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान, पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रचार-प्रसार, अनुपयोगी भवनों को राजीविका समूहों के लिए कार्यशाला के रूप में उपलब्ध कराना एवं ऑपन जिम की स्वीकृति जारी करना आदि कार्य किए जा रहे है। प्रत्येक शिविर में हेल्प-डेस्क स्थापित की गई है जिस पर ग्राम विकास अधिकारी अथवा ग्राम रोजगार सहायक विजिटर्स बुक संधारित कर शिविर में आने वाले लाभान्वितों एवं आगन्तुकों एवं जनप्रतिनिधियों का ब्यौरा संधारित कर रहे हैं। बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा, अतिरिक्त जिला कलक्टर (द्वितीय) आशीष कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर (तृतीय) कुंतल विश्नोई, अतिरिक्त जिला कलक्टर (चतुर्थ) देवेन्द्र कुमार जैन, अतिरिक्त जिला कलक्टर (उत्तर) मुकेश कुमार मूंड, अतिरिक्त जिला कलक्टर (दूदू) गोपाल सिंह परिहार सहित ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, जल संसाधन विभाग, कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग, पशुपालन विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग, सार्वजनिक निर्माण विभाग, वन विभाग, ऊर्जा विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों ने शिरकत की।

हरमाड़ा में बालाजी धर्म कांटे से मनीष स्कूल तक सड़क बदहाल, हादसों का बना कारण

स्थानीय लोग बोले - रोजाना जान जोखिम में डालकर करनी पड़ती है आवाजाही

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) हरमाड़ा क्षेत्र में बालाजी धर्म कांटे से मनीष स्कूल तक जाने वाली सड़क की हालत अत्यंत जर्जर हो चुकी है। बरसात के चलते इस सड़क की स्थिति और भी खराब हो गई है। कई जगहों पर सड़क पूरी तरह से टूट चुकी है और जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं, जिनमें बरसात का पानी जमा है। इससे दोपहिया वाहनों, स्कूल बसों, कार चालकों तथा पैदल चलने वालों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, यह सड़क क्षेत्र के कई स्कूलों और कॉलोनियों को जोड़ती है, जिससे रोजाना सैकड़ों लोग, विशेष रूप से स्कूली बच्चे और बुजुर्ग, इसी रास्ते से आवाजाही करते हैं। सड़क की खराब हालत के कारण छोटी-मोटी दुर्घटनाएं अब रोजमर्रा की बात हो गई हैं। बरसात के मौसम में गड्ढों में पानी भरने से खतरा और बढ़ गया है, जिससे वाहन फिसलने की संभावना बनी रहती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार प्रशासन को शिकायत दी जा चुकी है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। लोग अब मांग कर रहे हैं कि इस सड़क की जल्द से जल्द मरम्मत की जाए और मजबूत निर्माण सामग्री का उपयोग किया जाए ताकि भविष्य में फिर से सड़क की ऐसी स्थिति न बने। क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो वे आंदोलन का रास्ता अपनाएंगे। प्रशासन से अपील की गई है कि जनहित को देखते हुए प्राथमिकता से इस सड़क की मरम्मत की जाए ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके और दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सके।

बारिश शुरू होते ही मुहाना मंडी गेट नंबर 1 गेट नंबर 2 के पास सड़क धंसी तीन वाहन फंसे

दो फिट गहरे गड्ढे ले रहे है मौत का भयानंक रुप

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) मुहाना मोड़ रोड के पास अंतरराष्ट्रीय मुहाना मंडी गेट नंबर 2 से गुजरने वाले रास्ते के पास हल्की बारिश के कारण सड़क किनारे की जमीन धंस गई,,बारिश शुरू होने के साथ ही सिस्टम की खामियां भी खुलकर सामने आने लगी है। थोड़ी बारिश में ही सड़कों पर पानी भर रहा है। वहीं, सड़कें धंस रही हैं जिससे 200 मीटर से अधिक क्षेत्र में सड़क ध्वस्त हो गई. इस हादसे में कई वाहन भी गड्ढों में समा गए. सड़क की यह स्थिति लोगों के लिए जानलेवा साबित हो सकती है इसके अलावा शहर के अन्य हिस्सों में भी जगह-जगह गहरे गड्ढे बन गए हैं यह रास्ता केसर चौराहा, मानसरोवर, कीरों की ढाणी, पत्रकार कालोनी मानसरोवर, अजमेर रोड 200 फिट बाईपास रोड पर जाकर मिलती है यह गड्ढे पानी भरा होने के कारण दिखाई नहीं दे रहे है इस कारण रोजाना राहगीरों ओर दुकानदारों एंवम स्थानीय लोगों को मुहाना मंडी में काम करने वाले मजदूरों को मौत के कूंए के पास होकर गुजरना पड़ता है रोजाना हजारों की संख्या में इस रास्ते से निकलने वाले लोगों को मौत के रास्ता पार कर काम पर जाना पड़ता है इस अनदेखी के कारण प्रतिदिन राहगीर चोटिल हो रहै है बेरिकेडिंग की जगह लोग खड्डों के पास पत्थर लगा रखे है जिससे राहगीरों को संदेश मिल रहा है खड्डे इतने गहरे होने के कारण मौत का रूप कभी भी ले सकते हैं

7 से 10 जुलाई तक 6 विभिन्न भर्ती परीक्षाओं का आयोजनः आयोग ने जारी किया विस्तृत कार्यक्रम अजमेर जिले में आयोजित होगी परीक्षाएं

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा 7 से 10 जुलाई तक 6 विभिन्न भर्ती परीक्षाओं का आयोजन अजमेर जिले पर किया जाएगा। इन परीक्षाओं के अंतर्गत 9 हजार से अधिक अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए हैं। परीक्षा कार्यक्रम संबंधी विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। 7 जुलाई 2025 को प्रातः 10 से 12.30 बजे तक टेक्निकल असिस्टेंट-जियोफिजिक्स (भू-जल विभाग) परीक्षा, 2024 तथा दोपहर 3 से 5.30 बजे तक बायोकेमिस्ट (चिकित्सा शिक्षा विभाग) परीक्षा, 2024 का आयोजन किया जाएगा। 8 जुलाई 2025 को प्रातः 10 से 12.30 बजे तक जूनियर केमिस्ट (भू-जल विभाग) परीक्षा, 2024 तथा दोपहर 3 से 5.30 बजे तक असिस्टेंट टेस्टिंग ऑफिसर (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) परीक्षा, 2024 आयोजित की जाएगी। 9 जुलाई 2025 को असिस्टेंट डायरेक्टर (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) परीक्षा, 2024 अन्तर्गत प्रातः 10 से 1 बजे तक प्रश्न-पत्र प्रथम तथा दोपहर 3.30 से 5.30 बजे तक प्रश्न-पत्र द्वितीय की परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। 10 जुलाई 2025 को रिसर्च असिस्टेंट (मूल्यांकन विभाग) परीक्षा, 2024 का आयोजन प्रातः 10 से 12.30 बजे तक किया जाएगा। आयोग सचिव ने बताया कि उक्त परीक्षाओं में प्रत्येक प्रश्न पत्र हेतु ओएमआर उत्तर पत्रक के पांचवें विकल्प को भरने के लिए 10 मिनट का अतिरिक्त समय भी दिया जाएगा। परीक्षा के प्रवेश पत्र परीक्षा दिनांक से 3 दिवस पूर्व आयोग की वेबसाइट एवं एसएसओ पोर्टल पर अपलोड किए जाएंगे। अतः अभ्यर्थी समयांतर्गत प्रवेश पत्र डाउनलोड कर लेवें। प्रवेश-पत्र आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध एडमिट कार्ड लिंक के माध्यम से आवेदन-पत्र क्रमांक व जन्म दिनांक प्रविष्ट कर डाउनलोड किए जा सकेंगे। इसके अतिरिक्त एसएसओ पोर्टल पर लॉगिन कर सिटीजन ऐप्स में उपलब्ध रिक्रूटमेंट पोर्टल लिंक से भी प्रवेश-पत्रों को डाउनलोड किया जा सकता है। परीक्षा केन्द्र पर किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा प्रारंभ होने के 60 मिनट पूर्व तक ही प्रवेश दिया जाएगा। इसके पश्चात् किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र पर प्रवेश नहीं दिया जाएगा। अतः अभ्यर्थी परीक्षा के दिन प्रत्येक परीक्षा सत्र में परीक्षा केंद्र पर प्रवेश के लिए नियत समय से पर्याप्त समय पूर्व परीक्षा केंद्रों पर आवश्यक रूप से उपस्थित हो जाएं ताकि सुरक्षा जांच एवं पहचान का कार्य समय पर पूर्ण हो सके। देरी से आने पर तलाशी में समय लगने के कारण परीक्षा में शामिल होने से वंचित हो सकते हैं। अभ्यर्थियों को पहचान हेतु परीक्षा केंद्र पर मूल आधार कार्ड (रंगीन प्रिंट) लेकर उपस्थित होना होगा। यदि मूल आधार कार्ड पर फोटो पुरानी अथवा अस्पष्ट है तो अन्य मूल फोटो युक्त पहचान-पत्र यथा मतदाता पहचान-पत्र, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस जिसमें रंगीन एवं नवीनतम स्पष्ट फोटो हो, लेकर परीक्षा केंद्र पर उपस्थित होवें। इसके साथ ही अभ्यर्थी प्रवेश-पत्र पर भी नवीनतम रंगीन फोटो ही चस्पा करना सुनिश्चित करें। स्पष्ट मूल फोटो युक्त पहचान-पत्र के अभाव में परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

जयपुर एयरपोर्ट से चार शहरों के लिए पांच नई फ्लाइट शुरू, स्पाइसजेट की पुणे फ्लाइट रद्द

नोटम समय में बदलाव, दुबई फ्लाइट भी लेट, यात्रियों को हुई भारी परेशानी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जयपुर एयरपोर्ट से मंगलवार से चार शहरों के लिए पांच नई उड़ानों की शुरुआत हुई है। इससे यात्रियों को बेहतर कनेक्टिविटी मिलने की उम्मीद है। हालांकि, इसी दिन यात्रियों को दो फ्लाइटों के संचालन में दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा। स्पाइसजेट की पुणे जाने वाली फ्लाइट अंतिम समय में रद्द कर दी गई, वहीं दुबई जाने वाली फ्लाइट भी अपने निर्धारित समय पर उड़ान नहीं भर सकी। जयपुर एयरपोर्ट से स्पाइसजेट की फ्लाइट स्त्र-1077 को सुबह 5.05 बजे पुणे के लिए रवाना होना था, लेकिन तकनीकी और संचालन संबंधी कारणों से इसे रद्द कर दिया गया। बड़ी संख्या में यात्री सुबह 4 बजे से ही एयरपोर्ट पहुंच गए थे, लेकिन उन्हें अंतिम समय में फ्लाइट कैंसिल होने की सूचना मिली। यात्रियों को वैकल्पिक इंतजाम या रिफंड की प्रक्रिया के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। इसी तरह, स्पाइसजेट की ही दुबई जाने वाली फ्लाइट स्त्र-57 जो सुबह 9.30 बजे रवाना होनी थी, वह भी निर्धारित समय पर उड़ान नहीं भर पाई। इससे अंतरराष्ट्रीय यात्रियों को भी भारी असुविधा हुई। इधर, एयरपोर्ट पर लागू नोटम के समय में बदलाव किया गया है, जिससे आने-जाने वाली उड़ानों के टाइमिंग पर असर पड़ सकता है। एयरपोर्ट प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे अपनी उड़ानों की जानकारी एयरलाइंस से प्रस्थान से पहले अवश्य प्राप्त करें।

फायरिंग एवं मारपीट के मामले में 20 हजार के ईनामी बदमाश को पुलिस ने किया गिरफ्त

जयपुर टाइम्स

धौलपुर। जिले की कंचनपुर थाना पुलिस ने मारपीट की एक गंभीर मामले बड़ी कार्यवाही को अंजाम दिया है। पुलिस ने बीस हजार रूपये के इनामी को गिरफ्तार किया है। कार्यवाही को लेकर कंचनपुर थानाधिकारी अनूप कुमार ने बताया कि 08 अप्रैल को पीड़ित रामसरन पुत्र गुलबी कुशवाह निवासी गडराई का पुरा, थाना कंचनपुर द्वारा थाना कंचनपुर में रिपोर्ट दी थी। जिसमें बताया था कि उसके खेत में जानवरों द्वारा फसल को नुकसान पहुंचाने के बाद विवाद उत्पन्न हुआ था। इसी दौरान आरोपियों द्वारा संगठित रूप से हथियारों से लैस होकर पीड़ित के घर पर हमला कर दिया गया था। घटना में अवैध कट्टों से फायरिंग, लाठियों से मारपीट, और वाहनों में तोड़फोड़ की गई थी। घटना में पीड़ित समेत अन्य व्यक्तियों को चोटें आई तथा 25,000 तक की संपत्ति का नुकसान हुआ। मौके से एक कट्टा 315 बोर, 5 खाली खोखे, एवं 1 जिन्दा कारतूस को बरामद किया गया था। थानाधिकारी ने बताया कि मामला दर्ज कर जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के निर्देश हेड कांस्टेबल कपिल शर्मा के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने सैंपऊ रोड से आरोपी मौनू पुत्र मान सिंह (23) निवासी अतिराज का पुरा को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि उक्त आरोपी घटना के समय से ही फरार चल रहा था। गठित पुलिस टीम द्वारा सतत प्रयासों एवं तकनीकी / मानव स्त्रोतों के माध्यम से गिरफ्तार किया गया है। आरोपी पर जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के द्वारा 20 हजार रूपये का इनाम घोषित किया गया था।

जयपुर में DNT समाज का महा-बहिष्कार आंदोलन

आरक्षण समेत 10 मांगों को लेकर हज़ारों लोगों ने जताया विरोध

जयपुर टाइम्स

जयपुर। विमुक्त, घुमंतू और अर्धघुमंतू समाज के हजारों लोग मंगलवार को जयपुर के मानसरोवर स्थित वीटी रोड ग्राउंड पर महा-बहिष्कार आंदोलन में शामिल हुए। यह प्रदर्शन राज्यभर से आए समाज के लोगों द्वारा किया गया, जिसमें आरक्षण, राजनीतिक भागीदारी, शिक्षा, रोजगार और रेनके व इदाते आयोग की सिफारिशों को लागू करने जैसी 10 प्रमुख मांगें रखी गईं। आंदोलन का नेतृत्व राष्ट्रीय पशुपालक संघ और DNT संघर्ष समिति के अध्यक्ष लालजी राईका तथा विमुक्त, घुमंतू अर्धघुमंतू जाति परिषद के प्रदेशाध्यक्ष रतन नाथ कालबेलिया ने किया। आंदोलन में लोग पारंपरिक वेशभूषा में और बैलगाड़ियों से शामिल होकर पहुंचे, जिससे उन्होंने अपनी सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक उपेक्षा का प्रतीकात्मक संदेश दिया। डीएनटी समाज की राज्य में आबादी करीब 1.23 करोड़ है, जो कुल जनसंख्या का लगभग 15% है। वर्तमान में केवल 32 समाज डीएनटी सूची में शामिल हैं, जबकि 50 से अधिक समाज इस वर्ग में आते हैं। कई समाजों के नाम या तो सूची में नहीं हैं या नामों की विसंगतियों के चलते प्रमाण पत्र नहीं बन पा रहे हैं। लालजी राईका ने कहा, "आजादी के 77 साल बाद भी हमें समान अधिकार नहीं मिले। अब यह आंदोलन गांव-गांव तक ले जाया जाएगा।" उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार अब भी नहीं सुनती है, तो यह आंदोलन और तेज किया जाएगा।

प्रस्तावना बदलने से हिल गई संविधान की नींव

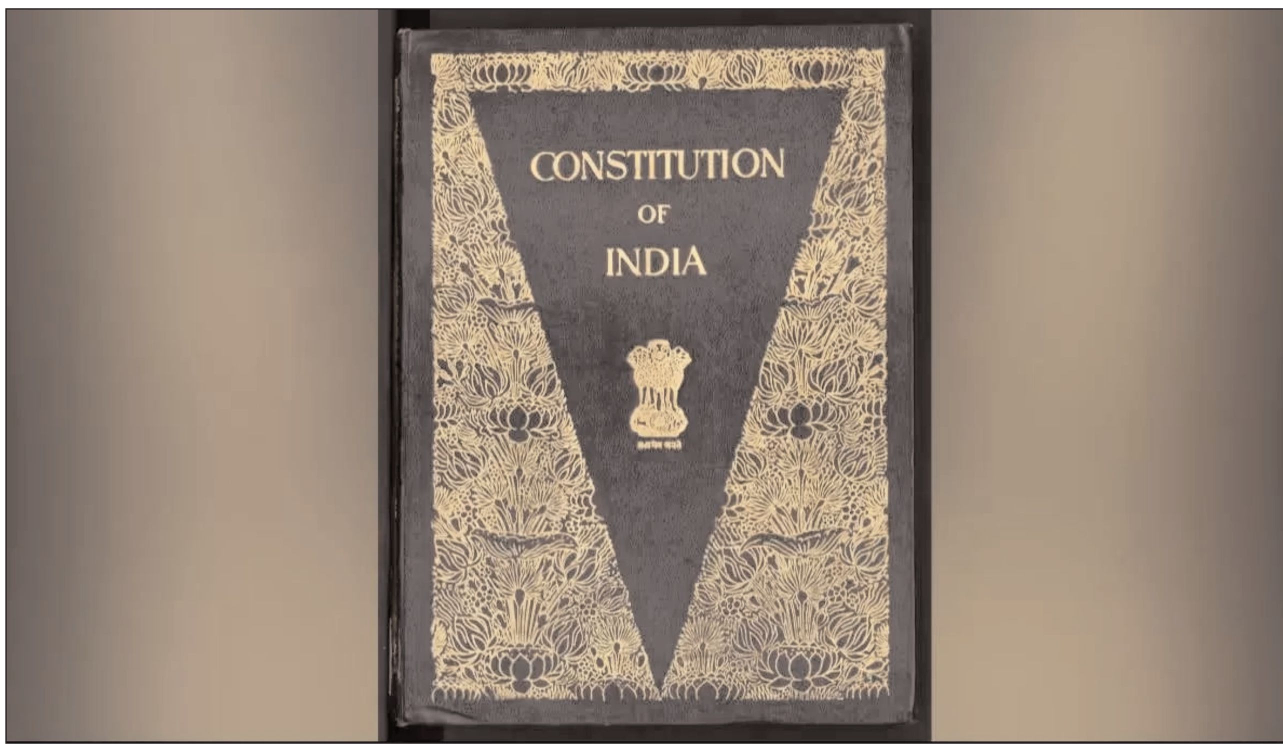

प्रसिद्ध ब्रिटिश राजनीति-शास्त्री सर अर्नेस्ट बार्कर ने अपने ग्रंथ 'प्रिंसिपल्स आफ सोशल एंड पोलिटिकल थ्योरी' में भूमिका के स्थान पर भारतीय संविधान की पूरी प्रस्तावना उद्धृत की थी, यह कहते हुए कि उसमें सब कुछ समाहित है, जो वे अपनी पुस्तक की भूमिका के लिए कह सकते थे। दूसरे, भारत में भी राजनीति शास्त्र और कानून की कक्षाओं में प्रस्तावना को संविधान की 'आत्मा', 'मूलाधार', आदि कहा गया। उसमें छेड़छाड़ करना उसकी नींव में हस्तक्षेप करना ही हुआ। मूलाधार बदलने की वस्तु नहीं होती। तीसरे, 1960 में सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रस्तावना को निर्देशक सूत्र बताया। मूल प्रस्तावना एक मानक स्केल, पैमाना था। स्केल में छेड़छाड़ करना किसने सुना है। चौथे, सुप्रीम कोर्ट ने 1973 में भी केशवानंद भारती मामले में मूल प्रस्तावना को संविधान का 'बुनियादी ढांचा' घोषित किया। उसमें कोई बदलाव करना बुनियाद हिलाना था। साफ है कि प्रस्तावना में परिवर्तन ने संविधान को चौपट किया।,

स्वतंत्र भारत की राजनीति की विडंबना संविधान की प्रस्तावना की हालत से समझी जा सकता है। यह विडंबना है शब्दों, नारों से खेलना। उन शब्दों की गरिमा, भावना और उनसे जुड़े कर्तव्य के प्रति बेपरवाह रहना। लोकतंत्र, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता अथवा सोशलिज्म, सेक्युलरिज्म, सभी शब्दों के साथ भारत में यही होता रहा है। 1950. में बने संविधान की प्रस्तावना ने भारत को 'लोकतांत्रिक गणराज्य' कहा था। उस में 26 वर्ष बाद दो शब्द 'सेक्युलर' और 'सोशलिस्ट' जोड़ दिए गए। अब फिर 50 वर्ष बाद प्रस्तावना को पूर्ववत करने की बात कही जा रही है।

यह भी हमारे नेताओं का एक खेल साबित हो तो आश्चर्य नहीं। मूल 'प्रस्तावना' के संशोधन ने पूरे संविधान को बिगाड़ा। यह परिवर्तन 1975-76 की 'इमरजेंसी' के दौरान किया गया, जब केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय केंद्रीय मंत्रियों को भी रेडियो से मालूम होते थे। जब विपक्षी नेता जेल में थे और प्रेस पर सेंसरशिप थी। वह संशोधन बिना समुचित विचार-विमर्श के हुआ था। दो-चार व्यक्तियों की चतुराई से, जिन्होंने इंदिरा गांधी को इसके लिए कायल किया। यह संविधान की आमूल विकृति थी। इसके लिए चार तथ्यों पर विचार करें। पहला, देश-विदेश के संविधानविदों ने मूल प्रस्तावना को महत्वपूर्ण माना था।

प्रसिद्ध ब्रिटिश राजनीति-शास्त्री सर अर्नेस्ट बार्कर ने अपने ग्रंथ 'प्रिंसिपल्स आफ सोशल एंड पोलिटिकल थ्योरी' में भूमिका के स्थान पर भारतीय संविधान की पूरी प्रस्तावना उद्धृत की थी, यह कहते हुए कि उसमें सब कुछ समाहित है, जो वे अपनी पुस्तक की भूमिका के लिए कह सकते थे। दूसरे, भारत में भी राजनीति शास्त्र और कानून की कक्षाओं में प्रस्तावना को संविधान की 'आत्मा', 'मूलाधार', आदि कहा गया। उसमें छेड़छाड़ करना उसकी नींव में हस्तक्षेप करना ही हुआ।

मूलाधार बदलने की वस्तु नहीं होती। तीसरे, 1960 में सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रस्तावना को निर्देशक सूत्र बताया। मूल प्रस्तावना एक मानक स्केल, पैमाना था। स्केल में छेड़छाड़ करना किसने सुना है। चौथे, सुप्रीम कोर्ट ने 1973 में भी केशवानंद भारती मामले में मूल प्रस्तावना को संविधान का 'बुनियादी ढांचा' घोषित किया। उसमें कोई बदलाव करना बुनियाद हिलाना था। साफ है कि प्रस्तावना में परिवर्तन ने संविधान को चौपट किया। संविधान का 'बुनियादी ढांचा' 1950 वाली प्रस्तावना था। इसलिए 1976 ई. में किया गया बदलाव उस पर चोट थी। इसलिए भी, क्योंकि वह धारणागत सैद्धांतिक संशोधन था।

'सोशलिस्ट' और 'सेक्युलर' ऐसी धारणाएं न थीं, जिनसे संविधान निर्माता अनजान थे। ये दोनों शब्द जोड़ने के मुद्दे पर तो संविधान सभा में चर्चा भी हुई थी, लेकिन उनकी जरूरत नहीं समझी गई थी। तब सोशलिज्म पूरे यूरोप का प्रसिद्ध मतवाद था, जहां से हमारे अनेक संविधान-निर्माता पढ़े थे। उनके द्वारा भारतीय गणराज्य को 'सेक्युलर', 'सोशलिस्ट' नहीं कहना सुवाचारित निर्णय था। आंबेडकर ने संविधान में उक्त दोनों शब्द जोड़ने का प्रस्ताव दो-टूक ठुकराया था। संविधान सभा में 15 नवंबर 1948 को केटी शाह ने संविधान में 'सेक्युलर, फेडेरल, सोशलिस्ट' जोड़ने का प्रस्ताव पेश किया। इसे खारिज करते हुए आंबेडकर ने कहा था, "लोगों को किसी खास तरह की संरचना से बांधना ठीक नहीं।'' संविधान सभा की सर्वसम्मति वही रही, जो आंबेडकर ने कहा था। उन्होंने कहा था कि संविधान की धाराएं और भावना पहले ही सेक्युलर और आम जनहित भावना से ओत-प्रोत है। इस स्पष्ट रिकार्ड के बावजूद 1976 में 42वें संशोधन द्वारा संविधान प्रस्तावना में 'सोशलिस्ट', 'सेक्युलर' जोड़ा गया। इसका कारण कुछ और था। यह दुर्भाग्य की और समझने की बात है कि बाद में आई जनता पार्टी की सरकार, जिसमें लोहियावादी, जनसंघ, स्वतंत्र दल, आदि गैर-कांग्रेसी दल शामिल थे, ने भी प्रस्तावना की विकृति को रहने दिया। उस सरकार ने 42वें? संशोधन की असंख्य बातें 1978 में संविधान में 44वां संशोधन करके हटा दी थीं। इस प्रकार, संविधान की प्रस्तावना की अनदेखी करने में सभी दलों की भूमिका रही। यह ध्यान रखना चाहिए। संविधान की प्रस्तावना में अनावश्यक बदलाव के कारण संविधान का चरित्र बदलने का काम आरंभ हुआ। इसके परिणामस्वरूप भारतीय राजनीति में एक हिंदू विरोधी मानसिकता पनपी, जो धीरे-धीरे संपूर्ण राजनीतिक-शैक्षिक जीवन को बुरी तरह डसती गई। संविधान की प्रस्तावना में 'सेक्युलर' शब्द जोड़ देने के बाद तमाम भारतीय नेताओं ने जाने और अनजाने उसका अर्थ एवं व्यवहार भारत में हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाना कर दिया। उन्होंने 'माइनारिटी' और 'सेक्युलर', इन दोनों ही शब्दों को अपनी वोट राजनीति का औजार बना लिया। इससे संविधान ही नहीं, सहज न्याय और नैतिकता का भी नाश हुआ। यह सब अघोषित रूप से और क्रमशः धीरे-धीरे होने के कारण देश की जनता के साथ दोहरा विश्वासघात हुआ। देश के लगभग सभी दलों ने सेक्युलरिज्म और माइनारिटिज्म की आड़ में केवल गैर-हिंदुओं के लिए तरह-तरह की विशेष सुविधा, विशेष अधिकार आदि देना मौन रूप से तय कर लिया। इसलिए आम लोगों के पास उस में कोई गड़बड़ी देख सकने और उसका प्रतिकार करने का कोई साधन ही न रहा।

सम्पादकीय

रैगिंग की वजह से नए विद्यार्थी तंग आकर दे देते हैं जान

शैक्षणिक संस्थानों में नए सत्र के विद्यार्थियों से पुराने छात्रों के परिचय की परंपरा पुरानी है, पर पिछले कुछ वर्षों से यह प्रताड़ना का पर्याय बनती गई है। इस नई परंपरा को रैगिंग कहा जाता है। कई संस्थानों में तो यह इस हद तक क्रूर देखी-पाई गई है कि कई नए विद्यार्थियों ने तंग आकर जान तक दे दी। इसे रोकने के लिए कड़े नियम-कायदे बनाए गए, इसके दोषी पाए जाने वाले विद्यार्थियों के खिलाफ कठोर कदम उठाए जाते हैं, जेल तक भेजने का प्रावधान है, उन्हें संस्थान से निलंबित कर दिया जाता है। फिर भी हैरानी की बात है कि परिचय की यह भयावह परिपाटी बंद नहीं हुई है। विचित्र बात है कि इसे रोकने में देश के कई बड़े शैक्षणिक संस्थान भी गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानी यूजीसी ने चिह्नित किया है कि कई संस्थान रैगिंगरोधी नियमों का कड़ाई से पालन नहीं करते और न उन्होंने इसके व्यावहारिक उपाय कर रखे हैं। इसे लेकर यूजीसी ने चार आइआइटी, तीन आइआइएम सहित देश भर के नवासी शैक्षणिक संस्थानों को नोटिस जारी किया है। इनमें सत्रह राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान हैं। यूजीसी ने कहा है कि अगर इन संस्थानों ने तीस दिन के भीतर रैगिंगरोधी मानदंडों का अनुपालन नहीं किया तो उनकी वित्तीय सहायता रोक दी जाएगी, उनकी मान्यता रद्द करने पर भी विचार किया जा सकता है। दरअसल, रैगिंग की वजह से विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क को पहुंचने वाले आघात के मद्देनजर यूजीसी विनियमन के तहत नियम बनाया गया कि सभी शैक्षणिक संस्थान दाखिले के समय सभी विद्यार्थियों और उनके माता-पिता से रैगिंग में हिस्सा न लेने का शपथपत्र और हलफनामा जमा कराएंगे। मगर यूजीसी ने जांच में पाया है कि इस नियम को बने करीब पंद्रह वर्ष बीत जाने के बावजूद सभी संस्थान इसका ठीक से अनुपालन नहीं करते। यही नहीं, रैगिंग पर निगरानी रखने और उसे रोकने के लिए उनमें समुचित व्यवस्था भी नहीं की गई है। समझना मुश्किल नहीं है कि संस्थानों के इस ढीले-ढाले रवैए के चलते विद्यार्थियों में रैगिंग करने का साहस बनता है। यों तो हर संस्थान में बड़ी-बड़ी पट्टिकाएं लगा कर घोषित किया जाता है कि उनके परिसर में रैगिंग एक दंडनीय अपराध है, पर हकीकत यह है कि उनमें रैगिंग का सिलसिला खत्म नहीं हुआ है। उन पर ध्यान तब जाता है, जब कोई बड़ी घटना घट जाती है। सवाल है कि किसी संस्थान को रैगिंग जैसी क्रूर परंपरा को बंद कराने में ढिलाई क्यों बरतनी चाहिए। पुराने विद्यार्थियों का नए विद्यार्थियों से परिचय, मेलजोल कोई बुरी बात नहीं है। मगर इसके नाम पर किसी का मजाक उड़ाना, उसे प्रताड़ित करना, इस कदर भयभीत कर देना या उसमें हीन भावना भर देना कि वह मानसिक त्रास से अवसाद में चला जाए या खुदकुशी जैसा कदम उठा ले, तो इसे किसी भी रूप में उचित नहीं कहा जा सकता। पुरानी परिपाटी तो नए विद्यार्थियों के स्वागत समारोह की रही है, उसने रैगिंग का विकृत रूप कैसे ले लिया, कहना मुश्किल है। मगर कोई शैक्षणिक संस्थान खुद इस विकृत रूप को कैसे बने रहने दे सकता है। क्या उन संस्थानों को इस बात की जानकारी नहीं कि रैगिंग के दौरान क्या होता है

देश और सरकार विरोध में भेद करे कांग्रेस

अवधेश कुमार। वर्तमान में कांग्रेस संतुलित एवं सामान्य राजनीतिक गतिविधियों वाली पार्टी नहीं दिख रही। राहुल गांधी और उनके सलाहकार-रणनीतिकार, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे आदि के वक्तव्य-क्रियाकलाप देखकर ऐसा ही लगता है। कई कांग्रेस नेताओं की भी ऐसी ही धारणा है कि उनकी पार्टी की दशा-दिशा और रीति-नीति वह है ही नहीं, जो कांग्रेस की होनी चाहिए। पिछले दिनों मणिशंकर अय्यर ने कहा था कि आज की कांग्रेस न पं. नेहरू की कांग्रेस है, न इंदिरा गांधी की और यह राजीव गांधी की भी कांग्रेस नहीं है। यह सच है कि कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल है। इस कारण सरकार के फैसलों की निर्मम समीक्षा और विभिन्न मुद्दों पर आक्रामक होकर उसे घेरना कांग्रेस का कर्तव्य है, लेकिन जब बात देश हित की आए तो पार्टी से उम्मीद की जाती है कि वह सामान्य परिपक्वता दिखाएगी, परंतु कांग्रेस इसके ठीक उलट विरोध के नाम पर अतिवादी आचरण करती दिख रही है। यह स्वस्थ लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। ऐसा लगता है कि राहुल गांधी देश के अंदर युद्ध लड़ रहे हैं और भारत में राजनीतिक बदलाव के लिए विदेश से समर्थन पाने की कोशिश में लगे हैं। वे विदेश में भारत की ऐसी डरावनी तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जैसे देश में धर्म, अभिव्यक्ति, राजनीतिक गतिविधियों और अन्य वैयक्तिक स्वतंत्रताओं को सत्ता के दुरुपयोग से नष्ट कर दिया गया है। सोनिया गांधी ने हाल में एक अंग्रेजी दैनिक में लिखे आलेख में ईरान-इजरायल युद्ध में सरकार की नीति की आलोचना करते हुए मांग की कि केंद्र सरकार को इस पर मुंह खोलना चाहिए। उनके कहने का आशय था कि भारत को ईरान के साथ खड़ा होना चाहिए। इजरायल-हमास संघर्ष के दौरान भी कांग्रेस फलस्तीन के बहाने हमास और उसकी समर्थक इस्लामिक शक्तियों के साथ खड़ी दिखी, किंतु उसने हमास द्वारा निरपराध इजरायलियों की हत्या पर एक शब्द नहीं बोला। आपरेशन सिंदूर के बाद दुनिया में पाकिस्तान को बेनकाब करने के लिए भारत सरकार ने सात सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल विभिन्न देशों में भेजे। इसमें कांग्रेस के भी सदस्य थे। हैरानी की बात है कि कांग्रेस के रणनीतिकारों ने अपने ही सदस्यों शशि थरूर, सलमान खुर्शीद, मनीष तिवारी के चरित्र हनन का प्रयास किया। अपने ही नेताओं के वक्तव्यों और भूमिका पर लगातार कटाक्ष से बड़ा अतिवाद क्या हो सकता है? थरूर के विरुद्ध तो पार्टी के अंदर ऐसा अभियान चल रहा है जैसे उन्होंने कांग्रेस से गंभीर विश्वासघात कर दिया है। आपरेशन सिंदूर के बाद देश के अंदर भी एक बड़ा दुष्प्रचार अभियान चला, जो आज तक जारी है। राहुल गांधी यहां तक कहने लगे कि ट्रंप ने फोन किया और प्रधानमंत्री ने युद्ध विराम कर दिया। उन्होंने इसकी कोई चिंता नहीं की कि इससे भारत की कमजोर देश की छवि बनती है, जो अमेरिका के दबाव में पाकिस्तान जैसे आतंकवाद को प्रायोजित करने वाले देशों के विरुद्ध भी कार्रवाई से पीछे हट सकता है। राहुल गांधी चुनाव आयोग जैसी संस्था को भी भाजपा का आदेशपालक साबित करने के लिए हर सीमा लांघ चुके हैं। महाराष्ट्र चुनाव परिणाम के किसी तथ्यात्मक आंकड़े और उत्तर से उनका लेना-देना नहीं है। ईवीएम के विरुद्ध दुनिया भर में अभियान और भारत की चुनाव प्रणाली को बदनाम करना इन दिनों कांग्रेस के एजेंडे में सबसे ऊपर दिख रहा है। जबकि सुप्रीम कोर्ट भी इस पर सुनवाई कर चुका है। बावजूद इसके कांग्रेस के रवैये में बदलाव नहीं आ रहा है। क्या कांग्रेस यह सब अनजाने में कर रही है या इसके पीछे उसकी कोई सोची-समझी दूरगामी नीति और योजना है? मुस्लिम वोट पाने और उसे बनाए रखने की उसकी रणनीति तो साफ है, पर लगता है यह यहीं तक सीमित नहीं है। एक समय दुनिया भर में हिंसक क्रांति से सत्ता परिवर्तन करने या सत्ता पर कब्जा करने की राजनीति करने वाली वामपंथी पार्टियां इसी तरह दुष्प्रचार से छवि बनाती थीं कि संपूर्ण सत्ता कुछ लोगों, पूंजीपतियों की गिरफ्त में है। न्यायपालिका, कार्यपालिका सब एक होकर उसका साथ दे रही हैं। आमजन शोषण-दमन के शिकार हो रहे हैं, उनके अधिकार कुचले जा रहे हैं। संविधान और कानून के कोई मायने नहीं रह गए हैं। लोगों में असंतोष पैदा कर विद्रोह के लिए उकसाना और फिर खूनी क्रांति एवं सरकारों को सत्ता से बेदखल करने तक अभियान चलता रहता था। ऐसा प्रतीत होता है कि जाति जनगणना, संपत्ति सर्वे, समान बंटवारा की बात कर राहुल गांधी इसी तरह लोगों में असंतोष पैदा करना चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया भर में नए प्रकार का लेफ्टिज्म उभरा है। पूर्व कम्युनिस्टों से विपरीत इसमें विश्व भर के बड़े-बड़े पूंजीपति, वैश्विक संस्थाएं, थिंक टैंक, देशों की सत्तारूढ़ या विपक्ष की पार्टियां हैं। एक बड़ी इस्लामी लाबी भी इसमें है। इसकी धार्मिक, अभिव्यक्ति, वैयक्तिक स्वतंत्रता से लेकर शासन, समाज, पर्यावरण, सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, उपभोग आदि को लेकर अपनी योजनाएं हैं। देशों में और वैश्विक स्तर पर भी ये वर्तमान सत्ता की जगह अपने मनमाफिक व्यवस्था कायम करना चाहते हैं। लगता है कि राहुल गांधी को किसी ने यह समझा दिया है

अंधेरी राहें

उसमें छिपा हुआ अनूठा अनुभव समाप्त हो रहा है। नानी के यहां जाने पर न तो बड़ के पत्ते पर मटके में कुल्फी बेचने वाला आता है, न दोपहर में चुस्की और फालसे बेचने वाला। सब जगह वही आइसक्रीम और बेकरी की दुकानें। ग्रीष्मावकाश में कुछ स्कूल और स्वयंसेवी संस्थाएं बच्चों और किशोरों के लिए 'हॉबी क्लासेज' यानी पसंद की कक्षाएं भी लगाती हैं। हालांकि इनका उद्देश्य अपनी संस्था का प्रचार-प्रसार करना अधिक और बच्चों में कलात्मक या खेलकूद संबंधी अभिरुचियों का विकास करना कम होता है।

गरमी की छुट्टियां होते ही बच्चे शिकायत करने लगते हैं कि कहीं बाहर घूमने चलें। यह दर्द मित्रों और परिजनों के सोशल मीडिया पर निरंतर आती सूचनाओं, मनोहारी चित्रों और वर्णनों को देख कर और बढ़ जाता है। ऐसे में अगर आपके मोहल्ले और पड़ोस का कोई परिवार पहाड़ों पर जा रहा हो तो इस दुख के सागर की कल्पना ही की जा सकती है। दरअसल, पहले गरमी की छुट्टियां होते ही नानी के घर जाने का रिवाज-सा था। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बदली हैं। अव्वल तो नानी के घर देश या परदेश में रहने के कारण इतने दूर हो गए हैं कि वहां जाना इतना आसान नहीं है। दूसरे, नानी के घरों में अब वे बातें और रोमांच नहीं रहा, जैसा पहले था। खगोलीकरण ने सब घरों को लगभग एक जैसा बना दिया है। न नानी के घर में वैसे आम के बाग हैं, जहां अलसुबह उठ कर बच्चों के झुंड के साथ निकल जाया जाए और दिन भर आम तोड़ा जाए। वहां के कुएं पर नहाएं और फिर दोपहर चढ़ते तक लौटें। न वहां पर घर के बरामदे या आंगन में पड़े हुए झूले हैं और न छतों पर पानी छिड़क कर बिछावन पर रात में सोने का सुख। सच कहें तो आज की नानी खुद एक हद तक टीवी धारावाहिक और सोशल मीडिया के मोहपाश में जकड़ी हैं। उनके पास अपने बच्चों को सुनाने के लिए अनुभव और परियों की कहानियां भी नहीं हैं। ज्यादा शिकायत करने पर बच्चों को मोबाइल, कंप्यूटर और टीवी के आगे कार्टून चैनल लगा कर बैठा दिया जाता है। लेकिन ऐसी सुविधाएं उनके अपने घर में भी मौजूद हैं। लिहाजा नानी के घर जाने का आकर्षण क्षीण हो रहा है। उसमें छिपा हुआ अनूठा अनुभव समाप्त हो रहा है। नानी के यहां जाने पर न तो बड़ के पत्ते पर मटके में कुल्फी बेचने वाला आता है, न दोपहर में चुस्की और फालसे बेचने वाला। सब जगह वही आइसक्रीम और बेकरी की दुकानें। ग्रीष्मावकाश में कुछ स्कूल और स्वयंसेवी संस्थाएं बच्चों और किशोरों के लिए 'हॉबी क्लासेज' यानी पसंद की कक्षाएं भी लगाती हैं। हालांकि इनका उद्देश्य अपनी संस्था का प्रचार-प्रसार करना अधिक और बच्चों में कलात्मक या खेलकूद संबंधी अभिरुचियों का विकास करना कम होता है। आमतौर पर एक सप्ताह से दस दिन की इन कक्षाओं में न तो इतने उच्च स्तरीय प्रशिक्षक बुलाए जाते हैं और न ही विधा के बारे में व्यापक और गंभीर जानकारी दी जाती है। घूम-फिर कर बच्चों के सामने समस्या मुंह बाए खड़ी रहती है कि कहां जाएं और क्या करें! कुछ स्कूल इतने सख्त होते हैं और परस्पर प्रतिस्पर्धा के चलते वे छुट्टियों के दिन के लिए भी इतना होमवर्क बच्चों को सौंप देते हैं कि अभिभावकों तक के माथे पर पसीना आ जाता है। इस चिंता और भाग-दौड़ में छुट्टियां कहां व्यतीत हो जाती हैं, पता भी नहीं चलता। जितना बड़ा शैक्षणिक संस्थान, उतना ज्यादा बच्चों पर काम का बोझ। असल में बच्चे हमारी प्राथमिकता सूची में कभी आए ही नहीं हैं, न आज कोई राजनेता नेहरूजी की तरह बच्चों से अनुराग रखने वाला बचा है। बच्चों के व्यक्तित्व के ठोस विकास के लिए न कभी महिला एवं बाल विकास विभाग ने पुख्ता योजनाएं बनाईं, न उन्हें इतनी फुर्सत है। बच्चों के मनोविज्ञान को समझने और उनकी अभिरुचियों को तराशने के लिए हमारे स्कूलों और स्वयंसेवी संस्थाओं के पास कोई स्पष्ट दृष्टि नहीं है। वे आज के सामाजिक, व्यावसायिक और राजनीतिक ढांचे के वैचारिक प्रदूषण को ग्रहण करते हुए बड़े हो रहे हैं। पढ़ने की आदत तो अब बड़ों में भी नहीं बची है तो बच्चों से अपेक्षा करना व्यर्थ है। मुझे याद है, पहले शहरों में बाल पुस्तकालय होते थे। गरमी के मौसम में बाल पत्रिकाओं 'पराग', 'नंदन' और 'लोटपोट' आदि के विशेषांकों की भारी मांग बच्चों के बीच रहती थी। पढ़ने से एक संस्कार और संवेदनाओं का विस्तार होता था। आज सब कुछ 'गूगल बाबा' के हवाले है। इस आपाधापी में हम अपने अंतर्मन को खोजना शायद भूल गए हैं। हम भूल गए हैं कि हर बच्चे के अंदर भविष्य का एक कलाकार, लेखक या खिलाड़ी छिपा है, लेकिन हम उसकी अभिरुचियों को न तो पहचान रहे हैं और न विकास के लिए कोई मंच तैयार कर रहे हैं। वे ऊंचे नंबर तो ला रहे हैं, मगर एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक या बेटा या बेटी नहीं बन पा रहे। नानी और नाना के जरिए आती हुई अनौपचारिक शिक्षा का सूत्र भी अब बिखरा-बिखरा-सा लगता है।

सन ऑफ सरदार 2 का हिस्सा न होने पर सोनाक्षी सिन्हा ने दी प्रतिक्रिया

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने 2012 की सुपरहिट फिल्म सन ऑफ सरदार में अजय देवगन के साथ मुख्य भूमिका निभाई थी। उन्होंने बात करते हुए सन ऑफ सरदार 2 में अपनी गैरमौजूदगी को लेकर प्रतिक्रिया दी। सोनाक्षी सिन्हा ने बताया कि फिल्म में कास्टिंग से जुड़े ऐसे फैसले इंडस्ट्री में आम बात हैं और इन पर ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं होती। सन ऑफ सरदार 2 में शामिल न होने पर उन्होंने कहा कि शायद फिल्म की कहानी अब किसी और दिशा में जा रही है और उसमें नए किरदार होंगे। उन्होंने कहा, मैं इस बदलाव को पूरी तरह समझती हूं और इसका सम्मान करती हूं। सोनाक्षी सिन्हा ने आगे कहा, मैं अब प्रोफेशनल तरीके से सोचती हूं। हम इतने सालों से इस इंडस्ट्री में काम कर रहे हैं, तो इन बातों को समझना आ गया है। यह बहुत छोटी सी बात है, कोई बड़ी बात नहीं है। इसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता। साल 2012 में रिलीज हुई सन ऑफ सरदार में सोनाक्षी सिन्हा लीड रोल में थीं। इसमें अजय देवगन ने जस्सी और संजय दत्त ने बिल्लू का किरदार निभाया था। इसमें एक्ट्रेस जूही चावला भी अहम किरदार में नजर आई थीं। यह रोमांटिक कॉमेडी फिल्म साल 2010 की तेलुगु फिल्म मर्यादा रमन्ना की रीमेक थी।

सन ऑफ सरदार 2 में अजय देवगन और मृणाल ठाकुर की जोड़ी नजर आएगी। हाल ही में अजय देवगन ने सोशल मीडिया पर सन ऑफ सरदार 2 की रिलीज डेट का ऐलान किया था। अजय देवगन ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म का नया पोस्टर शेयर किया, जिसमें वह पगड़ी पहने नजर आए और लिखा, द रिटर्न ऑफ द सरदार अब 25 जुलाई को नजदीकी सिनेमाघरों में। सन ऑफ सरदार 2 की टक्कर बॉक्स ऑफिस पर सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर की फिल्म परम सुंदरी से होगी। मैडॉक फिल्म्स की परम सुंदरी 25 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। यह फिल्म एक ऐसे कपल की कहानी है, जो उत्तर और दक्षिण भारत से है। फिल्म का निर्देशन तुषार जलोटा ने किया है और इसे दिनेश विजान ने प्रोड्यूस किया है।

राणा नायडू सीजन 2 में बोल्ड और इंटिमेट सीन कहानी के लिए जरूरी

एक्ट्रेस अदिति शेट्टी ने राणा नायडू सीजन 2 में अपने बोल्ड और इंटिमेट सीन के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि ये सीन कहानी और उनके किरदार को बेहतर तरीके से समझाने के लिए जरूरी थे। अदिति शेट्टी ने कहा कि नए सीजन में बहुत कम बोल्ड सीन हैं और जो भी सीन हैं, उन्हें बहुत सोच-समझकर फिल्माया गया है। ये सीन कहानी के लिए जरूरी थे और उनके किरदार को बेहतर तरीके से समझने में मदद करते हैं। अदिति ने कहा, सीजन 2 में वास्तव में बहुत कम बोल्ड सीन हैं और वे भी सावधानी से शूट किए गए हैं। ये सीन कहानी के लिए जरूरी थे और मेरे किरदार के सफर के लिए यह मायने रखते हैं। कुछ भी बेकार नहीं था, हमने जो भी किया, उसका उद्देश्य और गहराई थी। अदिति शेट्टी ने बताया कि उन्होंने राणा नायडू सीजन 2 में काम करने के लिए हां क्यों कहा। उन्होंने कहा, इसके कई कारण थे। मैंने पहले भी मिर्जापुर में निर्देशकों के साथ काम किया था, और मैं पहले से ही राणा नायडू सीजन 1 की बड़ी फैन थी। जब मुझे इस किरदार के बारे में पता चला, तो मैं काफी उत्साहित हुई। मेरा किरदार बहुत दिलचस्प है और कहानी के लिए अहम है। मैं अपने किरदार से काफी प्रभावित हुई। साथ ही, सीन भी जबरदस्त थे। खासकर राणा सर के साथ मेरा फेस-ऑफ सीन शानदार था। इन कुछ चीजों के चलते मैंने हां की। अदिति ने बताया कि राणा नायडू सीजन 2 में उनका किरदार तसनीम उनकी असल जिंदगी से काफी अलग है।

उन्होंने कहा, तसनीम मेरी असली जिंदगी से बहुत अलग है। मैं मस्ती करने वाली और भावनाओं को खुलकर दिखाने वाली लड़की हूं, लेकिन तसनीम ज्यादा शांत और गंभीर है। एक बात सामान्य है कि हम दोनों में फिटनेस का शौक एक जैसा है। राणा नायडू सीजन 2 में वेंकटेश दग्गुबाती, राणा दग्गुबाती, अर्जुन रामपाल और कृति खरबंदा लीड रोल में हैं। यह शो नेटफ्लिक्स पर 13 जून को रिलीज हुआ था।

रश्मिका मंदाना बनीं मैसा, फिल्म के पोस्टर में दिखा गुस्से से दहलता विकराल रूप

पैन इंडिया की सबसे बड़ी हीरोइन रश्मिका मंदाना देशभर में जबरदस्त फैनबेस एन्जॉय करती हैं और फैंस बेसब्री से इंतजार करते हैं कि वो आगे क्या करने वाली हैं। गुरुवार रिलीज हुए दिलचस्प पोस्टर के बाद, रश्मिका मंदाना की अगली फिल्म मैसा से उनका लुक लॉन्च हुआ, जहां इंडस्ट्री के कई सितारों ने इस शुक्रवार सुबह उनका पोस्टर रिलीज किया। पुष्पा 2 द रूल के बाद रश्मिका एक और पैन इंडिया फिल्म मैसा के साथ तैयार हैं। अनफॉर्मूला फिल्म्स के बैनर तले बनी मैसा एक ऐसी कहानी लग रही है जिसमें एक महिला योद्धा की हिम्मत और जज्बे को दिखाया गया है। फिल्म का पोस्टर वाकई अब तक कभी न देखा गया लुक देता है, जिसमें रश्मिका मंदाना के चेहरे का तेज और जज्बा साफ नजर आता है।

मैसा पर बोलीं रश्मिका

रश्मिका मंदाना इस प्रोजेक्ट को लेकर खुद भी काफी उत्साहित नजर आ रही हैं। उन्होंने फिल्म का टाइटल और लुक अपने सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए एक खास कैप्शन लिखा, मैं हमेशा आपको कुछ नया... कुछ अलग... कुछ रोमांचक देने की कोशिश करती हूं..और ये... ये वैसा ही एक प्रोजेक्ट है। एक ऐसा किरदार जो मैंने पहले कभी नहीं निभाया... एक ऐसी दुनिया जहां मैं पहले कभी नहीं गई...और मेरा ऐसा रूप जिसे मैंने खुद भी अब तक नहीं देखा था...ये गुस्से से भरा है... बहुत दमदार है... और बिलकुल असली है। मैं थोड़ी घबराई हुई हूं लेकिन बहुत खुश भी हूं। मैं सच में इंतज़ार नहीं कर सकती कि आप सब देखें हम क्या बना रहे हैं...और ये तो बस शुरुआत है।

कैसी है फिल्म मैसा

ये फिल्म एक जबरदस्त इमोशनल एक्शन कहानी है, जो हमें गोंड जनजाति की दिलचस्प और अनदेखी दुनिया में लेकर जाती है। मैसा को लेकर बात करते हुए डायरेक्टर रविंद्र पुल्ले ने कहा, मैसा दो साल की मेहनत का नतीजा है। हम चाहते थे कि इस फिल्म की दुनिया, उसका लुक, किरदार और कहानी, हर एक चीज बिलकुल सही हो। और अब हम तैयार हैं ये कहानी दुनिया को सुनाने के लिए।

रश्मिका मंदाना की अगली फिल्में

इसके अलावा, रश्मिका मंदाना के पास आने वाले समय में कई जबरदस्त प्रोजेक्ट्स की लाइनअप है। वह जल्द ही आयुष्मान खुराना के साथ मैडॉक फिल्म्स की हॉरर-कॉमेडी थामा में नजर आएंगी। पुष्पा 3 में भी वह अपने आइकॉनिक किरदार श्रीवल्ली के रूप में लौटेंगी। इसके साथ ही द गर्लफ्रेंड और रेनबो जैसी फिल्मों में वह इमोशन से भरे और अलग-अलग तरह के किरदार निभा रही हैं।

द फैमिली मैन 3 में जयदीप अहलावत की एंट्री

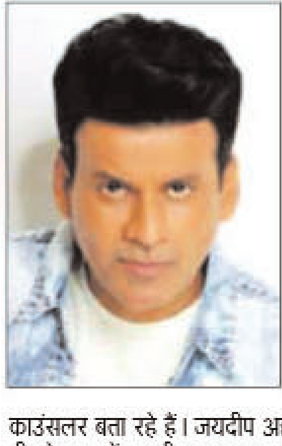

प्राइम वीडियो की सीरीज द फैमिली मैन अपने तीसरे सीजन के साथ वापसी कर रही है। बीते दिनों इसका फर्स्ट लुक सामने आया था। वहीं, 27 जून को द फैमिली मैन 3 का एनाउंसमेंट वीडियो जारी किया गया है। मनोज बाजपेयी की सीरीज में इस बार जयदीप अहलावत की भी एंट्री हुई है। वे विलेन की भूमिका में हैं। प्राइम वीडियो के यूट्यूब चैनल से टीजर वीडियो शेयर किया गया है। इसमें मनोज बाजपेयी खुद को लाइफ और रिलेशनशिप काउंसलर बता रहे हैं। जयदीप अहलावत की झलक है। सीरीज के तीसरे भाग में जयदीप अहलावत की एंट्री से नेटिजन्स खुश हैं। मनोज और जयदीप, दोनों सितारों को एक साथ देख दर्शकों की दिलचस्पी सीरीज के प्रति और बढ़ गई है। नेटिजन्स कमेंट कर रहे हैं कि सरदार खान और शाहिद खान आमने-सामने होंगे। बता दें कि जयदीप और मनोज गैंग्स ऑफ वासेपुर में काम कर चुके हैं। हालांकि, इसमें दोनों का साथ में कोई सीन नहीं था। गैंग्स ऑफ वासेपुर में मनोज बाजपेयी को सरदार खान के रूप में देखा गया। वहीं, शाहिद खान के रूप में जयदीप अहलावत नजर आए।

आमने-सामने होंगे ओटीटी के सुपरस्टार

मनोज बाजपेयी और जयदीप अहलावत दोनों ही ओटीटी के धुरंधर हैं। सीरीज से लेकर ओटीटी फिल्मों तक, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दोनों की लोकप्रियता है। ऐसे में इस सीरीज में अब इन्हें एक फ्रेम में देखना दर्शकों के लिए किसी ट्रीट से कम नहीं है। यह सीरीज इसी साल यानी 2025 में आएगी। हालांकि, अभी रिलीज डेट का एलान नहीं हुआ है। सीरीज का पहला सीजन 2019 में आया था। फिर दूसरा सीजन साल 2021 में आया। पिछले दोनों सीजन दर्शकों के बीच खूब लोकप्रिय रहे। इस बार कास्ट में जयदीप अहलावत के अलावा निमरत कौर की एंट्री भी हुई है। वे भी विलेन के रोल में हैं। यानी मनोज बाजपेयी का सामना दो दुश्मनो से होगा।

शानमुखा गौतम की फिल्म में लीड रोल निभाएंगे अभिषेक

अभिनेता अभिषेक बच्चन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म हाउसफुल 5 को लेकर चर्चा में हैं। फिल्म में उनके अभिनय को सराहा जा रहा है और यह बॉक्स ऑफिस पर भी ठीक ठाक प्रदर्शन कर रही है। अब अभिषेक के फैंस के लिए एक और बड़ी खबर सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक... अभिषेक ने संदीप रेड्डी वांगा के सहायक निर्देशक शानमुखा गौतम की अगली फिल्म साइन कर ली है। वे एक एक्शन थ्रिलर फिल्म से बतौर निर्देशक डेब्यू करने जा रहे हैं। इस फिल्म में अभिषेक एक कसाई की भूमिका निभाएंगे जो उनके करियर का एक नया और दमदार रूप हो सकता है। फिलहाल फिल्म की कास्टिंग पर काम चल रहा है। इसका निर्माण पीपल्स मीडिया फैक्ट्री कर रही है।

एक्टिंग करियर के सबसे सुनहरे दौर से गुजर रहीं नीना गुप्ता, टर्निंग पॉइंट साबित हुई बधाई हो

बॉलिवुड की दिग्गज अभिनेत्री नीना गुप्ता अपने करियर के उस दौर में है, जहां उनकी लोकप्रियता दिन दुनी और रात चौगुनी तरक्की पर है। एक्टिंग करियर के सबसे सुनहरे दौर से गुजर रहीं नीना गुप्ता के लिए बधाई हो टर्निंग पॉइंट साबित हुई। सिनेमा में बोल्ड रहीं नीना अब बिंदास हैं। उनके किरदारों के साथ-साथ फैशन सेन्स की भी खूब तारीफ होती है। इन दिनों वे चर्चा में हैं अपनी नई सीरीज पंचायत 4 से, जिसने उनकी लोकप्रियता में इजाफा किया है।

फिल्में हों या वेब सीरीज आपने मजबूत महिलाओं वाली भूमिकाएं की हैं, मगर असल जिंदगी में अपने खुद को सबसे ज्यादा एम्पावर कब फील किया?

सच कहूं, तो मेरे पास जब भी अच्छे पैसे होते हैं, मैं खुद को एम्पावर फील करती हूं, क्योंकि पैसों की बहुत जरूरत होती है और जब भी वो नहीं होते, तो बहुत तकलीफ होती है। सालों-साल मेरी जिंदगी में ऐसा दौर रहा जब मेरे पास पैसे नहीं थे। हमारी फील्ड ही ऐसी है कि कई बार आपके पास दो साल तक लगातार काम होता है और फिर आपके पास काम नहीं होता। मेरे साथ तो ऐसा हुआ कि पांच साल तक मेरे पास काम नहीं था और फिर जब मेरे टैक्स रिटर्न भरने आए, तो वो लोग हैरान रह गए, क्योंकि मेरे पास तो कोई कमाई थी ही नहीं। उनको लगा कि मैं झूठ बोल यही हूं। उनको ये समझ में नहीं आता कि हमारा काम कैसा है? हमारी फील्ड ही ऐसी है कि आज यहां, तो कल वहां। बहुत ही ब्रूटल फील्ड है। मैं तो इतने टॉप पर नहीं पहुंची हूं, मगर जब टॉप वालों के पास नहीं होता न, वो तो समझो बहुत कष्टकारी होता है, क्योंकि आपको एक खास तरह की जीवन शैली की आदत पड़ जाती है और पैसे न हों, तो गुजारा नहीं हो पाता।

आप 66 साल की उम्र में भी तरह-तरह के फैशनेबल कपड़े पहनकर फैशन के गोल सेट करती हैं, चर्चा में रहती हैं।

देखिए, कई बार लोग स्क्रीन प्रेजेंस और असल जिंदगी की ड्रेसिंग को मिक्स कर देते हैं। अब जैसे पंचायत में मैं गांव की महिलाओं की तरह साड़ी पहनती हूं, मगर वो मेरा किरदार है। जो मैं बाहर पहनती हूं, वो नीना गुप्ता है। मुझे फैशन का बहुत ज़बरदस्त शौक है। मेरे पास पैसे नहीं होते थे, मैं फैशन और कपड़ों के मामले में तब भी जुगाड़ और तोड़-जोड़ में लगी रहती थी। अब पैसे हैं, तो एक्सपेरिमेंट करती हूं, अच्छे कपड़े खरीद लेती हूं। मसाबा (उनकी बेटी) से भी मदद ले लेती हूं फैशन के मामले में। वैसे ये भी कहना चाहूंगी कि मैं अगर फैशनेबल कपड़े पहनती हूं, तो संस्कृत में एमफिल भी हूं, तो आप किसी के कपड़ों से उसे जज नहीं कर सकते।

आज इंटरनेट के जमाने में सोशल मीडिया पर आपको काफी कम ट्रोलिंग का सामना करना पड़ता है, तो वो टिप्स आपको कौन देता है?

टिप्स कौन देगा मुझे? मैं तो सोशल मीडिया पर सच ही लिखती हूं या जो मैं नीना गुप्ता हूं, वही दिखती हूं, तो मुझे कोई क्या ही ट्रोल कर लेगा? यही ट्रोल करेंगे कि सेक्सी कपड़े पहने हैं। पर वो तो बहुत अच्छी बात है न, हां, जब कभी -कभार मैं सोशल मीडिया पर कुछ गलत टैग कर दूं या फिर मीडिया पर कुछ गलत लिख दूं अथवा गलत समय पर कुछ पोस्ट कर दूं, तो मेरी बेटी मसाबा का फोन आता है कि आप ऐसा कैसे पोस्ट कर सकती हैं? मैं उसकी बात पर तवज्जो देती हूं, क्योंकि मैं मानती हूं कि उसे सोशल मीडिया के बारे में मुझसे ज्यादा जानकारी है।

आपकी सीरीज गांव-खेड़ों की राजनीति पर आधारित है, आप कभी पॉलिटिक्स में जाना चाहेंगी?

नहीं मैं पॉलिटिक्स में जाने का बिल्कुल नहीं सोचती, क्योंकि मैं बहुत मुंहफट हूं और मुंहफट होना पॉलिटिक्स में नहीं चलता। वहां पर मैनिपुलेशन वाली चीजें चलती हैं, जो मुझे नहीं आतीं। वो बहुत गंदा गेम है। फिर मैं ऐसे क्षेत्र में क्यों जाऊं, जिसके बारे में मुझे कोई जानकारी ही न हो।

पंचायत में सीजन दर सीजन आपका किरदार महिला के रूप में मजबूत होता गया?

पंचायत सीजन 1 से लेकर सीजन 4 तक मेरा किरदार काफी इवॉल्व हुआ है। जैसे असल जीवन में धीरे-धीरे होता है। मेरा ही चरित्र क्यों अन्य महिला किरदार भी काफी मजबूत हुए हैं। खुशबू, क्रांति और रिंकी के रोल भी काफी स्ट्रॉन्ग हुए हैं और ये सब बहुत ही ऑर्गेनिक तरीके से किया गया है। ये नहीं कि किसी एक दिन सुबह उठकर मेरे किरदार को अचानक से बदल दिया गया। इसके लेखक चंदन कुमार काफी सुलझे हुए राइटर हैं। उन्होंने किरदारों को बहुत ही संतुलित ढंग से लिखा है। मुझे पंचायत की जो सबसे कमाल की बात लगती है कि मैं किसी छोटे कस्बे में चली जाऊं या किसी बड़ी पार्टी में, मेरे मंजू देवी के किरदार को सभी पहचानते हैं और मुझे ये पहचान अच्छी लगती है। मैं अपने करियर में कई बुरे वक्तों से गुजरी हूं, मगर बधाई हो मेरे करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ और उसके बाद मैं लगातार तरह-तरह की भूमिकाएं करती जा रही हूं।

चिकित्सा सेवा को समर्पित सफेद कोटधारी फरिश्तों का हुआ सम्मान

जयपुर टाइम्स

फुलेरा कस्बे के उप चिकित्सालय परिसर पर मंगलवार को एक भावुक और गर्व से भरा दृश्य बना, जब डॉक्टर डे के अवसर पर उन चिकित्सकों का सम्मान किया गया, जो निस्वार्थ भाव से दिन-रात मरीजों की सेवा में जुटे रहते हैं। जीवन के हर संघर्ष में जब उम्मीद की किरण कमज़ोर पड़ने लगती है, तब यही डॉक्टर अपनी विद्या और सेवा से लोगों के चेहरों पर मुस्कान लौटाते हैं। शिक्षक शक्ति सिंह और भूतपूर्व सैनिक समिति के अध्यक्ष मनोज कुल्हरी की उपस्थिति में स्थानीय लोगों ने डॉ. धर्मेंद्र भामू, डॉ. राहुल मित्तल, डॉ. महेश कड़ेल, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. रामबाबू, डॉ. मनोज बियानी, डॉ. पीयूष तिवारी व डॉ. सरोज बासनीवाल का माल्यार्पण कर और मिठाई खिलाकर आभार प्रकट किया। इस मौके पर सबसे भावुक क्षण तब आया, जब उप चिकित्सालय में वर्षों से समर्पित सेवा दे रहे डॉ. महेश कड़ेल को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। डॉ. विधान चंद्र का छायाचित्र भेंट कर जब उन्हें साफा पहनाया गया, तो उपस्थित जनसमूह की आंखें नम हो उठीं। यह सम्मान न केवल एक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता थी, बल्कि उस समर्पण भावना का प्रतीक था, जो हर डॉक्टर को समाज का सच्चा सेवक बनाती है। इस मौके पर कई गणमान्य लोग मौजूद थे ।

भाजपा मंडल अध्यक्ष अग्रवाल का कार्यकारी सदस्यों ने किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

फुलेरा भाजपा मंडल प्रणव अग्रवाल की ओर से सभी जातियों का समावेश करते हुए कार्यकारिणी का गठन करने पर कार्यकारिणी सदस्यों ने मंडल अध्यक्ष अग्रवाल का माला व साफा पहना कर स्वागत किया । इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष प्रणव अग्रवाल ने नवनियुक्त कार्यकारिणी पदाधिकारी, सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने एवं राज्य व केंद्र की योजनाओं को जन-जन पहुंचने का आह्वान किया । इस मौके पर भाजपा मंडल फुलेरा के अध्यक्ष प्रणव अग्रवाल, महामंत्री संजय वार्ष्णेय, उपाध्यक्ष गोविन्द सिह बड?गुर्जर,हर गोपाल साहू, मनीष गगरानी,विनोद अरोडा,राजेन्द्र वर्मा कोषाध्यक्ष कमला सैनी,मंत्री तारा-चन्द आमरीया शेष नारायण सैनी, श्याम सैनी, संजू प्रजापत तारा सोनी, मुकेश कुमावत, नेमी चन्द गुर्जर कमल शर्मा,संजीव गुप्ता, राजकुमार वर्मा, ओम प्रकाश कुमावत,एस. के. नरूका सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

ब्रह्माकुमारी आश्रम वियतनाम से आए प्रतिनिधि मंडल की संगोष्ठी

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम में वियतनाम से आए 15 सदस्य प्रतिनिधिमंडल और ग्राम वासियों के बीच एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विधायक गोपाल खंडेलवाल ने भी शिरकत की। ब्रह्माकुमारी आश्रम की प्रभारी रचना दीदी ने संस्थान के सारी गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उन्होंने कहा कि आज विदेश के लोग भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं और हमारे देश के लोग पश्चिमी सभ्यता के पीछे भाग रहे हैं। इस पर गंभीरता से ध्यान देना होगा तभी हमारा देश आगे बढ़ेगा। गोपाल खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है और हमें भी आध्यात्मिक क्षेत्र में हमेशा आगे आना चाहिए और मेडिटेशन को जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।विधायक ने वियतनाम से प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया और ब्रह्माकुमारी की ओर से विधायक को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

चारागाह विकास से जुड़े कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर जलग्रहण विभाग द्वारा ग्राम कतरियासर में करवाए जा रहे चारागाह विकास कार्यों की समीक्षा के लिए जिला परिषद सभागार में मंगलवार को बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में काजरी प्रभारी नवरतन पंवार, केन्द्रीय शुष्क वानिकी सस्थान के प्रमुख वैज्ञानिक जगन सिंह गोरा, लाल चन्द गोदारा, वैज्ञानिक एवं नर्सरी प्रभारी सीआईएएच चन्द्र भान सिंह, डीसीएफ वन्य जीव ए.एस गोदारा, एसोसिएट प्रोफेसर कृषि अनुसंधान केन्द्र एसकेआरयू बीकानेर, मुकेश गहलोत, सहायक निदेशक बागवानी, लक्ष्मण सिंह सहायक कृषि अधिकारी बागवानी, रमेश अरोड़ा बागवानी कन्सलटेन्ट, तुलसीराम चैधरी, सेवानिवृत उपनिदेशक (आयुर्वेद), निर्मल बरड़िया, प्रभारी नव वैदिक ग्राम आदि ने भाग लिया एवं अनुशंषा की। विभाग की ओर से अति.मुख्य अभियन्ता भूपसिंह, अधिशाषी अभियन्ता महेश कुमार अजाड़ीवाल, दिनेश चन्द्र पाण्डेय एवं गोपाल मोहता एवं अन्य स्टाफ उपस्थित रहे। वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञों ने इस क्षेत्र में विकसित होने वाले मेडिसिनल, बागवानी एवं छायादार पौधों की जानकारी दी। साथ ही चारागाह के लिए उपयुक्त बीज, सिंचाई के साधनों एवं क्षेत्रों को एक शैक्षणिक एवं ग्रामीण जीवकोपार्जन का स्वरूप देने हेतु विभिन्न विधियों पर विचार विमर्श किया। अधिशाषी अभियंता महेश कुमार अजाडीवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा

घर बैठे हो रहा ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान, सोमवार तक आयोजित हुए 153 शिविर

जयपुर टाइम्स

बीकानेर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत प्रदेश भर की ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। शिविरों के माध्यम से रास्ता खोलने, सीमाज्ञान और पेंशन सत्यापन, झूलते विद्युत तारों को दुरुस्त करने, पशु टीकाकरण, खाद्य सुरक्षा, खाता विभाजन सहित अनेक लंबित प्रकरणों का निस्तारण किया जा रहा है। इसी क्रम में बीकानेर जिले में अब तक आयोजित शिविरों के जरिए ग्रामीणों की कई वर्षों पुरानी समस्याओं का समाधान मौके पर किया जा रहा है। साथ ही कैंपों के जरिए ग्रामीणों को राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। इस पखवाड़े के दौरान राजस्व संबंधी प्रकरणों का समयबद्ध निष्पादन किया जा रहा है। शिविर में पिछले 7 दिनों में अब तक सीमाज्ञान के 1 हजार 92, स्वतः नामांतकरण के 790, राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 135 (2) के 56, नामांतरकरण के 1 हजार 73, आपसी सहमति से बंटवारे के 445 तथा रास्तों से संबंधित 323 प्रकरणों का निस्तारण करते हुए ग्रामीणों को राहत प्रदान की गई। इसी प्रकार ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा 541 चयनित बीपीएल परिवारों के बैंक खातों का सत्यापन किया गया। 173 महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया। अब तक आयोजित शिविर में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजनान्तर्गत शौचालय बनाने के 416, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण हेतु पक्के आवास बनाने के 823, सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 315 व आवासीय भूमि पट्टे के लिए 137 आवेदन प्राप्त हुए । इसी श्रृंखला में मिशन हरियालो राजस्थान अभियान के तहत 45 हजार 921 पौधों को लगाए गए हैं। पखवाड़े अवधि में स्वामित्व कार्ड/ पट्टा 286 तैयार व 165 वितरित किए गए। पंचायती राज विभाग द्वारा मनरेगा के 760, 15वां वित्त आयोग (एफएफसी) के 362 तथा स्टेट फाइनेंस कमिशन (एसएफसी) के 367 कार्यों को पूर्ण करवाया गया। इसी श्रृंखला में ऊर्जा विभाग द्वारा बिजली के झूलते तारों के 224, विद्युत पोल के दुरुस्तीकरण के 155 एवं तारों के संपर्क में आने वाली झाड़ियों की छंटाई के 320 प्रकरणों का निस्तारण किया गया। इसके अलावा टीकाकरण कार्यक्रम के तहत पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचने के लिए पशुपालन विभाग राज्य द्वारा 24 हजार 500 पशुओं को टीका लगाया गया।

महावीर टायर्स की दुकान का ताला तोड़कर चोरी

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे में सबसे व्यस्त बहने वाले नीमकाथाना सड़क मार्ग पर स्थित रोडवेज बस स्टैंड के सामने 30 जून की रात अज्ञात चोरों ने महावीर टायर्स की दुकान का लोहे की राड से कुंडी व ताला तोड़कर हजारों की लागत के दुपहिया वाहनों के नए टायर चुरा ले गए, सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआवना कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार कस्बे के नीम काथाना सड़क मार्ग पर रोडवेज बस स्टैंड के सामने महावीर टायर्स की दुकान के मालिक के महावीर सैनी ने बताया कि 30 जून की रात अपनी दुकान बंद कर अपनी ढाणी में चला गया था, उसके बाद 1 जुलाई की सुबह 5 बजे सूचना मिली कि मेरी दुकान खुली पड़ी हुई है जिस कारण तुरंत दुकान पर आया तो दुकान की कुंडी व ताला टूटा पड़ा हुआ था और पास में ही एक लोहे की राड पड़ी हुई थी जब मेने दुकान का सामान संभाल तो दुकान में से 15 नए दो दुपहिया वाहनों के टायर गए गायब मिले जिस कारण अज्ञात चोरों ने मेरी दुकान से 15 नए दोपहिया वाहनों के टायर चुरा कर ले गए जिनकी कीमत करीब?50000 है जिस कारण इसकी सूचना तुरंत अजीतगढ़ पुलिस को दी तो थाने के हेड कांस्टेबल श्रीकिशन तुरंत अजीतगढ़ बस स्टैंड पर पहुंचकर चोरी स्थल पर पहुंचे एवं मौका मुआवना किया। दुकान सबसे व्यस्त बहाने वाले नीमकाथाना सड़क मार्ग पर रोडवेज बस स्टैंड के सामने सीसीटीवी कैमरा की नजर में थी। जानकारी के अनुसार महावीर टायर्स की दुकान नीमकाथाना सड़क मार्ग पर रोडवेज स्टैंड के सामने नगर पालिका द्वारा लगाए गए सीसीटीवी कैमरा की नजर में थी उसके बाद भी चोरों ने इस दुकान का ताला तोड़ हजारों के नए टायर चुरा ले गए। थाने के हेड कांस्टेबल श्रीकिशन ने बताया कि पुलिस ने दुकान के पास बिजली पोलो पर लगे सीसीटीवी कैमरो व गढटकनेत के त्रिलोकपुरा मोड पर लगे टोल टैक्स के सीसीटीवी कैमरा को चेक किया तो एक बाइक पर 20 से 25 साल के तीन युवक अपने हाथों में चुराए गए पाइप टायर लटका रखे थे और चोरी करने के बाद बाइक से गढटकनेत की तरफ चले गए जिस कारण पुलिस इन चोरों का सुराग लगने में जुट गई है संभावना है कि चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद होने के कारण जल्दी ही पुलिस की गिरफ्त में होंगे।

परम्पराओं से ही सनातन धर्म व संस्कृति का संरक्षण सम्भव- पटेल

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली प्रतिवर्ष की भांति पवित्र श्रावण मास में उत्तराखण्ड के गौमुख (गंगोत्री) से गंगा जल की कांवड़ लाने के लिये 101 कांवड़ियों का जत्था छीतरमल कसाना व रामरतन पहलवान के नेतृत्व में सोमवार देर शाम राजमार्ग की सर्विस लेन स्थित पटेल हीरा मोती सिनेमा से भगवान शंकर के जयकारों के साथ अपार जोष एवं उत्साह के साथ रवाना हुआ। जत्थे को युवा गुर्जर महासभा के तहसील अध्यक्ष व समाजसेवी शिवकुमार पटेल ने केसरिया (भगवा) ध्वज दिखाकर रवाना किया। उक्त 101 सदस्यों के दल में ग्राम सुन्दरपुरा सहित ग्राम बुटेरी (बानसूर), पहाड़ी (बहरोड़), पांचनौता व नांगल दर्गु (नांगल चौधरी, हरियाणा) के श्रद्धालू शामिल है। जो कि पवित्र गंगा नदी के उद्गम स्थल भागीरथी गौमुख से कांवड़ में पवित्र जल भरकर कई दिनों का सफर तय कर पैदल वापस आयेगें। उक्त जल से आगामी श्रावण मास में बालेष्वर स्थित तीर्थ स्थल पर भगवान शंकर का अभिषेक करेगें। कांवड़ियों को रवाना करते वक्त पटेल ने कहा कि हमारी परम्पराओं से ही सनातन धर्म व हमारी संस्कृति का संरक्षण सम्भव है। युवा पीढ़ी को भी इससे जुड़ना चाहिये। कांवड़ियों के जत्थे का नेतृत्व कर रहे ग्राम सुन्दरपुरा निवासी श्रद्धालू छीतरमल कसाना विगत 50 वर्षो से निरन्तर गौमुख से कांवड़ लेकर आ रहे हैं। इस बार वे 51 वीं बार गंगोत्री के लिये रवाना हुये है।

शिविर आयोजन से होता है व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समायोजन में मिलती है सहायता

आकेड़ा डूंगर में चल रहे ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का समापन, युविका शर्मा रही ऑल ओवर परफॉर्मेंस में अव्वल

जयपुर टाइम्स

जयपुर शिविर आयोजन के माध्यम से विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है। वह अंतर्मुखी व्यक्तित्व से निकाल कर बहुमुखी व्यक्तित्व की ओर अग्रसर होता है। साथ ही समाज सामाजिक समायोजन करने की क्षमता भी विकसित होती है। शिविर के माध्यम से नेतृत्व क्षमता सहित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के गुण निखार कर सामने आते हैं। यह बात आकेड़ा डूंगर के बचपन किड्स स्कूल में शिक्षा विभाग व हिंदुस्तान स्काउट गाइड मुख्यालय जयपुर की ओर से चल रहे ग्रीष्मकालीन उद्यमिता एवं कौशल विकास शिविर के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि विक्रम सिंह शेखावत ने कहे। शिविर संचालक नानूराम नायक ने बताया कि शिविर आयोजन में विभिन्न गतिविधियों में अव्वल रहे प्रतिभागियों का इस दौरान सम्मान किया गया। कंप्यूटर में युवराज सिंह प्रथम, राजा महतो द्वितीय, इंग्लिश स्पोकन में मोहित प्रजापत प्रथम तथा मोहित मीणा दूसरे स्थान पर रहा। वहीं मेहंदी प्रतियोगिता में दिया सिंह पहले व अनन्या दूसरे स्थान पर रही। सिलाई प्रतियोगिता में नीतू नायक प्रथम व माया जांगिड़ द्वितीय स्थान पर, योग में अंश मीना पहले जबकि प्रियंका मीणा दूसरे नंबर पर रही। इसी प्रकार डांस में वर्षा रायका प्रथम व युविका शर्मा द्वितीय स्थान पर, ड्राइंग में अभिषेक बुनकर प्रथम तथा मेहुल शर्मा द्वितीय व अनुशासन में देव सिंह प्रथम तथा रौनक गुप्ता दूसरे स्थान पर रहे। बालक वर्ग में डांस प्रतियोगिता में मेहुल शर्मा प्रथम जबकि भाविक शर्मा द्वितीय स्थान पर रहा। ऑल ओवर शिविर की परफॉर्मेंस में युविका शर्मा को बेस्ट कैंडिडेट का अवार्ड दिया गया। इस दौरान हिंदुस्तान स्काउट गाइड की आमेर प्रभारी महिमा सैनी, अनुदेशक मंगल चंद गुर्जर, कृष्णा कुमारी चौधरी, किरण गुप्ता आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

महेश यादव ने प्राचार्य पद पर कार्यग्रहण किया

कोटपूतली प्रदेश की महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में शिक्षा विभाग की पदस्थापन प्रक्रिया अंतर्गत महेश चन्द यादव ने महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतेहपुरा कलां में प्राचार्य पद पर कार्यग्रहण किया। विद्यालय परिवार द्वारा माल्यार्पण व राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया गया। प्रदेश की महात्मा गांधी राजकीय स्कूलों में पदस्थापन हेतु गत वर्ष 25 अगस्त को एक परीक्षा आयोजित की गई थी। जिसमें प्राचार्य महेश चन्द यादव ने जिले में प्रथम रैंक हासिल की थी। गौरतलब है कि पवाना अहीर निवासी प्राचार्य महेश चन्द यादव अपने ही गांव की सेठ मूलचंद प्रभुदयाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पवाना अहीर के विकास व प्रगति में समर्पित भाव से दी गई अपनी बेहतरीन सेवाओं की बदौलत गत वर्ष राज्य स्तरीय व लगातार इस वर्ष जिला स्तरीय भामाशाह प्रेरक सम्मान प्राप्त किया है। विद्यालय प्राचार्य महावीर प्रसाद यादव सहित समस्त विद्यालय परिवार व ग्रामवासियों ने स्वागत अभिनंदन कर विद्यालय विकास में सकारात्मक सहयोग प्रदान करने की बात कही।

गिव-अप अभियान की वैधता अवधि अब 31 अगस्त तक

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के मार्गदर्शन में राज्य सरकार निरन्तर वंचित वर्गों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिये हैं कि अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़कर लाभान्वित किया जायें, ताकि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। जिला रसद अधिकारी शशि शेखर शर्मा ने बताया की खाद्य मंत्री सुमित गोदारा के निर्देशानुसार गिव अप अभियान जिसकी वैधता अवधि में 31 अगस्त 2025 तक की वृद्धि की गई है। उन्होंने बताया कि खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के संबंध में निर्धारित मापदण्ड राजस्थान खाद्य सुरक्षा नियम, 2023 अनुसूची-1 में परिवार जिसमें कोई आयकर दाता हो, परिवार जिसका कोई सदस्य सरकारी/अर्द्धसरकारी/स्वायत्तशासी संस्थाओं में कर्मचारी हो, एक लाख से अधिक वार्षिक पारिवारिक आय हो एवं परिवार में किसी सदस्य के पास चार पहिया वाहन हो (ट्रैक्टर आदि जीविकोपार्जन में प्रयुक्त वाहन को छोड़कर) निष्कासन सूची में शामिल है। उन्होंने बताया कि 01 नवम्बर 2024 से प्रारम्भ गिव अप अभियान में आज तक राजस्थान में 22 लाख 31 हजार 899 व्यक्तियों ने स्वैच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ छोड़ा है। जिससे राज्य सरकार पर वार्षिक 409.39 करोड़ की राशि का वित्तीय भार कम होगा। इसी प्रकार कोटपूतली-बहरोड़ जिले में अब तक 50 हजार 984 व्यक्तियों ने गिव अप किया। अभियान में अब तक जिले में 405 अपात्र लोगों को नोटिस जारी किये गये, जिनसे वसूली की कार्यवाही की जायेगी। गिव अप अभियान में अब प्रत्येक उचित मूल्य दुकान पर खाद्य विभाग के जिला रसद अधिकारी, प्रवर्तन अधिकारी एवं प्रवर्तन निरीक्षक द्वारा निरीक्षण करने के साथ ही खाद्य सुरक्षा में चयनित अपात्र लोगों को नोटिस भी जारी किया जा रहा है।

शहर में शांति बनाए रखने एवं मोहर्रम को लेकर सीएलजी की बैठक हुई

विभिन्न व्यवस्थाओं पर हुई चर्चा, पालिका प्रशासन एवं जोधपुर डिस्कॉम को पत्र लिखने का लिया निर्णय

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर,शिवगंज। मातमी पर्व मोहर्रम को लेकर पुलिस थाना शिवगंज परिसर में थानाधिकारी बाबूलाल राणा की अध्यक्षता में सीएलजी सदस्यों की बैठक आयोजित हुई। जिसमें मुस्लिम समाज के साथ सीएलजी सदस्यों ने बैठक में भाग लिया। बैठक में मोहर्रम पर्व पर निकाले जाने वाले ताजियों के रूट को लेकर चर्चा की गई। मोहर्रम के दौरान ताजिया मार्ग पर सफाई,बिजली के तार ठीक करवाने एवं पेडों की छंगाई करवाने पर विशेष रूप से चर्चा की गई। सीएलजी बैठक में थानाधिकारी राणा ने कहा कि शहर हमेशा से साम्प्रदायिक सौहार्द की मिशाल रहा है,इसी भावनाओं से ध्यान में रखते हुए भाईचारा बनाए रखने की अपील की। मोहर्रम पर सभी ने एक राय में त्यौहार की तरह इस पर्व को भी आपसी भाईचारे के साथ मनाने पर सहमति जताई । बैठक के दौरान थानाधिकारी ने लाईसेंसी साजिद भाई छीपा एवं सलीम भाई ताजिया चौक छावणी ने रूट के संबंध में चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में मुस्लिम समाज के लोगों ने शिकायत करते हुए बताया कि हर वर्ष ताजिए के मौके पर पालिका प्रशासन की ओर से सफाई सहित पेडों की छंगाई आदि की व्यवस्था की जाती है। वही इस वर्ष भी समाज ने आग्रह किया है,लेकिन पालिका प्रशासन इस दिशा में किसी भी प्रकार की रूचि नहीं दिखा रहा है। जिस पर थानाधिकारी ने भरोसा दिलाया कि इस संबंध में पालिका प्रशासन को लिखित रूप से इसके लिए आग्रह किया जाएगा। बैठक में ताजिया मार्ग पर बिजली के तारों को सही करवाने पर भी चर्चा की जाकर इस संबंध में जोधपुर डिस्कॉम को आवश्यक तैयारी के लिए पत्र लिखने का निर्णय लिया गया। बैठक में पूर्व पालिकाध्यक्ष हिम्मत कुमावत,कपडा व्यापार संघ अध्यक्ष अमरसिंह चूली, करणसिंह राव, महेन्द्र दवे,मोहम्मद आरिफ,पूर्व लाईसेंसी उमर भाई,महादेव महिला मंडल अध्यक्ष उषा सोनी, ओमबाला, गुड्डु भाई, स्वर्ण व्यापार संघ से इंदरमल बागरेचा, गोशाला अध्यक्ष बाबूलाल परिहार, हेमंत अग्रवाल, महेन्द्र माली,पूर्व पार्षद जैसाराम माली,ओमप्रकाश परिहार सहित कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस समारोह

कोटपूतली राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर मंगलवार को राजस्थान प्रदेष कांग्रेस कमेटी चिकित्सा प्रकोष्ठ द्वारा राजधानी जयपुर में डॉक्टर्स डे समारोह का आयोजन चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रदेषाध्यक्ष डॉ. विकास महला के नेतृत्व में किया गया। इस मौके पर चिकित्सा प्रकोष्ठ की नवनियुक्त कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित हुआ। राजधानी जयपुर के नारायण सिंह सर्किल स्थित तोतुका भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में कोटपूतली से बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं चिकित्सा प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों ने प्रदेष महासचिव डॉ. अभिलाष मीणा के नेतृत्व में भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पीसीसी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने की। वहीं मुख्य अतिथि के रूप में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोषी, अस्थमा भवन के निदेषक डॉ. विरेन्द्र सिंह, चौमू विधायक डॉ. षिखा मील बरारा ने षिरकत की।

श्री कृष्ण छात्रावास सहयोगार्थ भामाशाहों ने 01 लाख 23 हजार रूपये किये भेंट

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली कस्बा स्थित श्री कृष्ण छात्रावास में सहयोग प्रदान करने का सिलसिला जारी है। भामाशाहों द्वारा अपनी सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में यादव समाज को 01 लाख 23 हजार रूपये भेंट किये गये। प्रवक्ता रामकरण यादव ने बताया कि गोरधनपुरा निवासी सरदार सिंह यादव पुत्र भूराराम यादव पशुधन प्रसार अधिकारी, जगदीश प्रसाद यादव पुत्र जम्मनराम यादव ढ़ाणी जोशीवाली अध्यापक पद से सेवानिवृत्त होने पर दोनों ने क्रमशः 51-51 हजार रूपये तथा नरेंद्र कुमार पुत्र सुल्तान सिंह यादव आयुष वरिष्ठ कम्पाउन्डर पद से सेवानिवृत्त होने पर 21 हजार रूपये कुल 01 लाख 23 हजार रूपये का सहयोग प्रदान किया गया। पूर्व समाज अध्यक्ष गिरधारी लाल यादव गुरूजी के नेतृत्व में समाज के प्रबुद्धजनों द्वारा भामाशाहों का माल्यार्पण व राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित राव साहब घीसाराम यादव, सरपंच प्रतिनिधि रघुवीर यादव, अरविन्द यादव, एड. मुकेश यादव, प्रकाश यादव झाड़ावाली, कैलाश यादव गुरूजी, भूपसिंह थानेदार, रमेश हवलदार, रामजीलाल यादव, विरेन्द्र यादव, महेश यादव, बिल्लू यादव, शिम्भू पीटीआई, रोहिताश यादव, कैलाश कम्पाउन्डर, अर्जुन यादव, धूणाराम हवलदार आदि ने युवा पीढ़ी को बेहतर शिक्षा प्राप्ति में मदद करने वाले सभी भामाशाहों का आभार प्रकट करते हुये शुभकामनायें दी।

एनएफएसए में अपात्र व्यक्ति 31 अगस्त तक हटवा सकेगें नाम, नही तो होगी कानूनी कार्यवाही

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। खाद्य सुरक्षा योजना से जुडे सक्षम व्यक्तियों को चिन्हित कर राषन में उठाए गए गेहूं की पाई-पाई की वसूली की जावेगी। यह वसूली 27 रूपये प्रति किलो के हिसाब से की जावेगी। 31 अगस्त तक स्वेच्छा से अपना नाम खाद्य सुरक्षा योजना से हटवाने वाले व्यक्तियों को राहत दी जावेगी। रसद विभाग 31 अगस्त के बाद गिव-अप अभियान में गेंहूँ की वसूली शुरू करेगा। जिला रसद अधिकारी कल्याण सहाय करोल ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित सक्षम व्यक्ति को स्वेच्छा से योजना से नाम हटवाने के लिए गिव-अप अभियान चलाया जा रहा है, अभियान 31 अगस्त तक चलेगा। अभियान के दौरान यदि सक्षम व्यक्ति अपना नाम योजना से नहीं हटवाते है तो कानूनी कार्यवाही की जाकर उठाए गए गेहूं की 27 रुपये प्रति किलो के हिसाब से वसूली की जावेगी। उन्होंने बताया कि जिले में अब तक कुल 1559 परिवारों के 6392 व्यक्तियों ने गिव-अप योजना में आवेदन कर अपने नाम राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना से पृथक करा लिये हैं।

एक दिवसीय रोजगार सहायता शिविर का आयोजन 3 जुलाई

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिला रोजगार कार्यालय द्वारा एक दिवसीय रोजगार सहायता शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी विजय कुमार ने बताया कि जिला रोजगार कार्यालय धूलकोट रोड़ धौलपुर में 3 जुलाई गुरूवार को प्रातः 9 बजे से शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शिविर में बीएसएनएल धौलपुर, एसबीआई लाइफ इन्सयोरेंस धौलपुर, यशस्वी ग्रुप जयपुर, एलआईसी धौलपुर, इन्नोव सोर्स प्राईवेट लिमिटेड जयपुर, एसएसआइसी सिक्योरिटी सर्विसेज, हाईटेक केयर प्रा. लि., वी5 ग्लोबल सर्विसेज प्रा. लि., पुखराज हेल्थकेयर प्रा. लि. जयपुर आदि कम्पनियों के अलावा कई एनजीओ एवं राजकीय आईटीआई, पीएनबी-आरसेटी, आरएसएलडीसी द्वारा संचालित विभागीय कोर्सेज की जानकारी देने के लिए उपस्थित रहेगें। शिविर में मशीन ऑपरेटर, एसेबंली ऑपरेटर, ऑफिस एण्ड सेल्स एक्सीक्यूटिव, सिक्योरिटी गार्ड, फिल्ड ऑफिसर, फाईनेंस एक्सीक्यूटिव, असिसटेंट मैनेजर, एजेंट, तकनीकी वर्कर, एसोशिएट ट्रेनी, डिप्लोमा होल्डर, पॉलिटेक्निक, बीटेक, आईटीआई होल्डर आदि रिक्तिया निकाली गई है। उन्होंने बताया कि 18 से 35 वर्ष आयु के 10वीं, 12वीं, स्नातक, स्नातकोत्तर, आईटीआई, बीटेक उत्तीर्ण आशार्थी अपने साथ शैक्षणिक योग्यता के मूल सर्टिफिकेट्स की फोटोप्रति का एक सेट, 2 फोटो एवं आईडी प्रूफ की फोटोप्रति साथ लेकर शिविर में उपस्थित हो। शिविर में आने-जाने का कोई भत्ता देय नहीं होगा।

जिला कलक्टर ने किया छीतरिया ताल और शहर के जल क्षेत्रों का निरीक्षण

हुंडावाल रोड, कचहरी, मचकुंड रोड़ पर किया जल निकासी व्यवस्था का मुआयना

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जारी मानसून सीजन को देखते हुए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने शहर में जल निकासी व्यवस्था एवं शहर जल भराव क्षेत्रों का निरीक्षण किया। जिला कलक्टर ने जल भराव क्षेत्र छीतरिया ताल का मौका मुआयना करने पर भराव स्थिति को देखते हुए जल निकासी के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कच्चे नाले के अवरुद्ध मुक्त बनाए रख नियमित जल निकासी कराए जाने हेतु निर्देशित किया। जिला कलक्टर ने नगर परिषद के अधिशाषी अभियन्ता गुमान सिंह को नियमित निगरानी बनाए रखने हेतु निर्देश दिए। इसके अलावा जिला कलेक्टर ने मचकुंड रोड से लेकर पुराने कोर्ट परिसर तथा हुंडावाल रोड तक निरीक्षण करते हुए प्रमुख नालों की जेसीबी से सफाई और अवरुद्ध स्थानों को तत्काल दुरुस्त कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जलभराव की स्थिति से आमजन को परेशानी न हो, इसके लिए समन्वय बनाकर कार्य करें और आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के लिए पूरी तैयारी रखें। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा, तहसीलदार अल्का सक्सेना उपस्थित रहे।

अंत्योदय शिविर गन्हैदी में वर्षों पुराने भूमि विवाद का शिविर में समाधान

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निस्.)। ग्राम पंचायत गन्हैदी में आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर में एक लंबे समय से चले आ रहे भूमि विवाद का समाधान निकला। ग्राम गन्हैदी निवासी मुन्नालाल पुत्र रामसिंह और रमादेवी पत्नी सुरेश वर्षों से अपनी खातेदारी भूमि के आपसी बंटवारे को लेकर परेशान थे। करीब वर्षों से लंबित इस मामले में कई बार

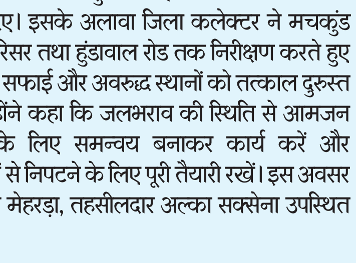

प्रयास होने के बावजूद समाधान नहीं निकल सका था। अंत्योदय संबल शिविर में दोनों काश्तकारों ने अपनी समस्या शिविर प्रभारी उपखंड अधिकारी वर्षा मीना के समक्ष रखी। उन्होंने तत्परता दिखाते हुए तहसीलदार दीप्ति देव को इस आपसी सहमति के विभाजन की कार्रवाई तुरंत पूरी करने के निर्देश दिए। तहसीलदार दीप्ति देव ने मौके पर ही भू-अभिलेख निरीक्षक रामगोपाल और हल्का पटवारी संजय कुमार की मदद से सहमति के आधार पर विभाजन तैयार करवाया। इसके बाद स्वीकृत विभाजन को तुरंत ऑनलाइन दर्ज कर दोनों खातेदारों को मौके पर ही उसकी प्रति उपलब्ध कराई गई। वर्षों से लंबित विवाद के एक ही दिन में निस्तारण से दोनों खातेदारों में खुशी की लहर दौड़ गई। उन्होंने कहा कि अब उन्हें भूमि से जुड़ी योजनाओं और कागजी कार्यों में किसी तरह की परेशानी नहीं होगी।दोनों लाभार्थियों ने मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा और जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जो काम सालों में नहीं हुआ, वो आज एक ही दिन में पूरा हो गया।

मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु स्वास्थ्य विभाग ने जारी की एडवाइजरी

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। बरसात के मौसम में डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया जैसी मच्छर जनित बीमारियों के फैलने की आशंका के चलते मौसमी बीमारियों से आमजन के बचाव के लिए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशानुसार एडवाइजरी जारी की है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा ने बताया कि वर्षाकाल में मुख्यतः दूषित पेयजल एवं भोजन से उल्टी दस्त एवं मच्छरों की संख्या में वृद्धि होने से मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मच्छर जनित बीमारियां होती हैं। उल्टी दस्त मुख्य रूप से दूषित हाथों, दूषित भोजन, दूषित पेय ग्रहण करने से होती है। इनसे बचाव करने हेतु खाने एवं पीने के लिये स्वच्छ अथवा उबला हुआ पानी का उपयोग करें, भोजन को अच्छी तरह से पकायें, भोजन पकाने, खाने व परोसने से पूर्व हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोंये। ताजा बना हुआ भोजन व खाद्य वस्तु का सेवन करें, ज्यादा देर का बना भोजन व बासी भोजन का सेवन न करें सदैव पानी, भोजन एवं अन्य खाद्य सामग्रियों को उचित ढक्कन से ढक कर रखें। सडे कटे एवं गले फलों को न खरीदें एवं बाजार में खुले हुए खाद्य पदार्थों का सेवन न करें, उल्टी दस्त होने पर चिकित्सीय सलाह लेवें। मलेरिया, डेंगू से बचने आवश्यक उपाय अपनाएं उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. चेतराम मीणा ने बताया कि बारिश के दिनों में मच्छरों के काटने से मलेरिया, डेंगू चिकनगुनिया, मच्छर जनित बीमारियां होती हैं, इन रोगों से बचाव के लिए मच्छरों से बचाव आवश्यक है। मच्छर पैदा न हो इसके लिये घर के आसपास पानी जमा न होने दे यदि पानी जमा है तो उसकी निकासी करें, निकासी संभव न हो तो रूके हुये पानी पर जले आयल या मिट्टी के तेल का छिड़काव करें, प्रति सप्ताह कूलर, टंकी, टायर, गमलों में जमा पानी खाली करें, पानी के बर्तनों को ढककर रखें, मच्छरों से बचाव के लिये खिड़की एवं दरवाजों पर मच्छर रोधी जाली लगाएं, पूरी बांह के कपड़े पहने, सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें, मच्छरों को भगाने वाली क्वाईल, क्रीम या लिक्विड का इस्तेमाल करें, नीम की पत्तियों का धुआं करें, मच्छरों को मारने के लिए इलेक्ट्रिक रैकेट का इस्तेमाल करें, बाहर जाए तो पूरे कपड़े पहन कर जायें। स्वास्थ्य विभाग भी है अलर्ट मोड पर डॉ. ने बताया कि मौसमी बीमारियों लेकर सभी बीसीएमओ को निर्देश दिए गए है। इसमें एन्टोमोलोजिकल सर्विलेंस के आधार पर एंटीलार्वल, एंटीएडल्ट सोर्स रिडक्शन की गतिविधियां की जाएगी। एंटीलार्वल, एंटीएडल्ट, सोर्स रिडक्शन के काम आने वाले स्प्रे पम्प, फोगिंग मशीन आदि उपकरणों की स्थिति और आवश्यक इन्सेक्टीसाइड की उपलब्धता, लॉजिस्टिक के लिए भी निर्देश दिए गए हैं। सरकारी चिकित्सा संस्थानों में डेंगू, चिकनगुनिया की निःशुल्क जांच, एलाइजा आधारित एनएस वन, आईजीएम किट, आईजीजी किट की उपलब्धता के साथ-साथ प्रत्येक संस्थान द्वारा मलेरिया, डेंगू, चिकगुनिया की समय पर रिपोर्टिंग के निर्देश दिए गए है। वहीं आपात स्थिति से निपटने के लिए आकस्मिक योजना के तहत डेंगू वार्ड की पहचान की जाए इसके साथ ही केस प्रबंधन के लिए आवश्यक दवाइयां उपलब्ध रहे इसके लिए चिकित्सा अधिकारी पूरी तरह से ध्यान रखे। एडवाइजरी के अनुसार मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए प्रभावित क्षेत्रों में समय पर तैनाती की जाए तो वहीं बीमारियों की रोकथाम व बचाव के लिए की जाने वाली गतिविधियों की मॉनिटरिंग व सुपरविजन भी किया जाए। उन्होंने बताया कि इस दौरान नगर निकायों द्वारा नालियों व गन्दे पानी के स्त्रोतों एमएलओ डालना, घर के बाहर पानी की नालियों व अन्य पानी की साफ-सफाई करवाना, नालियों की सफाई,फोगिंग कार्य करवाए जाएंगे साथ ही शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों को प्रार्थना सत्र के दौरान मौसमी बीमारियों के बचाव के उपाय बताए जाएंगे।

बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण शुरू, राजस्थान सहित अन्य राज्यों में भी जल्द होगा आगाज

भारत निर्वाचन आयोग ने निष्क्रिय राजनीतिक दलों की डीलिस्टिंग की प्रक्रिया भी शुरू की

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। भारत निर्वाचन आयोग ने बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया सफलतापूर्वक प्रारंभ कर दी है, जिसके तहत मतदाता सूची को अद्यतन किया जा रहा है। आयोग ने स्पष्ट किया है कि संविधान के अनुच्छेद 326 के तहत केवल वही नागरिक मतदाता बनने के पात्र हैं जो भारतीय नागरिक हों, 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के हों और उस क्षेत्र के सामान्य निवासी हों। बिहार के सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों में 7.89 करोड़ पंजीकृत मतदाताओं के लिए नए एन्यूमरेशन फॉर्म का वितरण प्रारंभ हो चुका है, जिसे ऑनलाइन भी भरा जा सकता है। इसमें 4.96 करोड़ ऐसे मतदाता हैं जिनका नाम पहले से सूची में है, जिन्हें केवल सत्यापन कर फॉर्म भरना होगा। बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) और एक लाख से अधिक वालंटियर्स वृद्ध, दिव्यांग और अन्य कमजोर वर्गों के मतदाताओं की सहायता कर रहे हैं। देशभर में लगभग 77,895 बीएलओ पहले से कार्यरत हैं और 20,603 नए बीएलओ की नियुक्ति की जा रही है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दलों ने अब तक 1.54 लाख से अधिक बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) नियुक्त किए हैं। सभी संभागीय आयुक्त और जिलाधिकारी इस पुनरीक्षण अभियान में सक्रिय रूप से शामिल हैं और बिहार में 5.74 करोड़ मोबाइल नंबरों पर मतदाता जागरूकता संबंधी संदेश भेजे जा चुके हैं। इसी के साथ आयोग ने निष्क्रिय राजनीतिक दलों को हटाने की दिशा में भी बड़ा कदम उठाया है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की अध्यक्षता में 345 पंजीकृत लेकिन अमान्यताप्राप्त राजनीतिक दलों को डीलिस्ट करने की प्रक्रिया शुरू की गई है। ये वे दल हैं जो वर्ष 2019 से किसी भी चुनाव में हिस्सा नहीं ले पाए और जिनके कार्यालयों का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है। राजस्थान से प्रारंभिक रूप से 9 ऐसे दलों को डीलिस्ट करने हेतु चिह्नित किया गया है, जिनमें राजस्थान जनता पार्टी, भारत वाहिनी पार्टी, खुशहाल किसान पार्टी, भारतीय जनहितकारी पार्टी और अन्य शामिल हैं। सभी संबंधित दलों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है और उन्हें व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर भी मिलेगा। अंतिम निर्णय निर्वाचन आयोग द्वारा ही लिया जाएगा। यह प्रक्रिया चुनाव प्रणाली को पारदर्शी और स्वच्छ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

अतिवृष्टि और बाढ़ के दौरान पशुधन की सुरक्षा पर पशुपालन विभाग ने दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले में मानसून की सक्रियता और संभावित बाढ़ के हालात को देखते हुए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशानुसार पशुपालन विभाग सतर्क हो गया है। संयुक्त निदेशक डॉ. संत सिंह ने बताया कि यहां की नदियों में जलस्तर तेजी से बढ़ता है, जिससे बाढ़ जैसी स्थिति बन जाती है। ऐसी आपदा की घड़ी में पशुपालकों को अपने पशुधन की सुरक्षा के लिए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए निम्न उपाय अत्यंत जरूरी हैं -

उन्होंने बताया कि पशुबाड़े का स्थान ऊँचाई पर रखें-जलभराव से बचाव के लिए बाड़े को ऊँचे स्थान पर बनाया जाए। कीचड़ व गंदगी से बचाव के लिए नियमित सफाई की जाए। भीगने से बचाव-भैंसों को बारिश से अधिक असर नहीं होता, लेकिन गाय, बकरी और भेड़ बारिश में जल्दी बीमार हो जाती हैं, इसलिए बाड़े को तिरपाल से ढकना जरूरी है। बिजली से सावधानी-पशुबाड़ों को बिजली के खंभों या डीपी से दूर रखें। पशुओं को निचले स्थानों, तालाबों, एनिकटों आदि पर चरने न भेजें। आपात स्थिति में बांध कर न रखें-बाढ़ की स्थिति में पशुओं को खूंटियों से बांधकर न रखें, ताकि वे स्वयं तैरकर सुरक्षित निकल सकें। चारा व्यवस्था-पूर्व में ही सूखा चारा जमा कर लें और पशुओं को सूखा और हरा चारा मिलाकर खिलाएं ताकि आफरा से बचा जा सके। प्रकाश व्यवस्था-टॉर्च, लालटेन व चिमनी जैसी वैकल्पिक रोशनी की व्यवस्था रखें। रस्सी सावधानी-पशुओं को मजबूत रस्सी से बांधने से बचें ताकि तेज बहाव में उलझने की स्थिति में उनकी जान बचाई जा सके। बाड़े की मरम्मत-दीवारों की दरारें चूना या सीमेंट से भरें ताकि उनमें कीड़े-मकोड़े और सांप न आएं। खुरों की देखभाल-ज्यादा देर पानी में रहने से खुरों में बीमारी हो सकती है। लाल दवा से खुरों की सफाई करें। भेड़-बकरी की विशेष देखभाल-इन्हें निमोनिया से बचाने के लिए बारिश से बचाएं और ऊँचे, पथरीले स्थान पर रखें। टीकाकरण-गलघोटू, लंगड़ा बुखार जैसी बीमारियों से बचाव के लिए पशुओं का टीकाकरण कराएं। कृमिनाशक दवा-हर तीन माह में पेट के कीड़ों की दवा जरूर पिलाएं। संक्रमित पशु अलग रखें-बीमार पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें ताकि संक्रमण न फेले। गर्भवती पशुओं की देखभाल-ब्याने के निकट पशु को नदी या तालाब में न जाने दें, इससे नवजात की जान को खतरा हो सकता है। बीमारी की सूचना दें-यदि पशुओं में किसी प्रकार की बीमारी दिखे तो नजदीकी पशु चिकित्सालय को तुरंत सूचित करें।

संयुक्त निदेशक डॉ. संत सिंह ने बताया कि इन सावधानियों का पालन कर पशुपालक अपने पशुधन की रक्षा कर सकते हैं और आपदा के समय नुकसान से बच सकते हैं।

अंत्योदय शिविर ने लौटाई तीस साल से खोई पहचान, बागथर के बुजुर्ग किसान का भू अभिलेख में नाम सुधार

धौलपुर(निसं.)। बागथर गांव निवासी बुजुर्ग किसान चरता के लिए आखिरकार 30 वर्षों से चली आ रही पहचान की समस्या का समाधान हो गया। भूमि अभिलेखों में उनका नाम चरता के स्थान पर गलती से चरना दर्ज हो गया था, जिसके कारण उन्हें जमीन के किसी भी दस्तावेजी कार्य में बार-बार परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। बुजुर्ग चरता और उनके परिजन कई सालों से इस गलती को दुरुस्त कराने के प्रयास करते रहे, लेकिन प्रक्रिया की जटिलताओं के चलते समाधान नहीं हो सका। इसी बीच पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के तहत ग्राम बागथर में आयोजित कैंप में बुजुर्ग चरता ने अपनी समस्या सामने रखी। शिविर में मौजूद नोडल अधिकारी उनकी बात गंभीरता से सुनी और तहसील स्तर के अधिकारियों से तुरंत समन्वय स्थापित किया। तहसीलदार बृजेश सिंह ने भी मामले को प्राथमिकता देते हुए उपखंडाधिकारी सुधा रानी मीणा को जानकारी दी। प्रशासन की तत्परता और आपसी तालमेल का नतीजा यह रहा कि मौके पर ही रिकॉर्ड में नाम सुधार की कार्रवाई पूरी कर दी गई और चरता जी का असली नाम अभिलेखों में दर्ज कर दिया गया। इस प्रक्रिया में गांव के अन्य बुजुर्गों और दस्तावेजों की मदद से प्रशासन ने जो संवेदनशीलता और सजगता दिखाई, उसने सिर्फ बुजुर्ग की व्यक्तिगत समस्या का हल नहीं किया, बल्कि ग्रामीण समाज में सरकार और प्रशासन के प्रति विश्वास को भी मजबूत किया है। बुजुर्ग चरता ने अपनी समस्या का हल हो जाने पर मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा और जिला प्रशासन को आभार व्यक्त किया।

गाड़ी के शीशे तोड़ पौने 2 लाख चोरी

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय कोतवाली पुलिस थाने में लिछमण दास पुत्र खुमदास स्वामी, निवासी ग्राम कल्याणसर ने रिपोर्ट देकर बताया है कि मैं 30 जून को दोपहर में करीब ढ़ाई बजे अपनी सफेद स्कोर्पियो गाड़ी रेलवे फाटक संख्या 5 के अन्दर पार्क करके एक दुकान में गया था। मोटरसाईकिल बिना नम्बर पलेट की गाडी को लेकर तीन व्यक्ति आए और पिछे से मेरी गाडी में रखी एक ब्लेक कलर की बैग को गाडी के डाईवर साईड के सिसे को तोड कर ले गए, जिसमें जरूरी कागजात व 1 लाख 75 हजार रूपये रखे हुए थे। सीसीटीवी देखने पर पता चला कि तीनों फिर अपनी बाईक लेकर भाग गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत बिहार

पं.स. पाटन (सीकर)

क्रमांक- 49 दिनांक- 27.6.2025

ई-निविदा / खुली बोली सूचना /03/2024-25

ग्राम पंचायत के अधीनस्थ ग्रामों में वित्तिय वर्ष 2025-26 में घर-घर कचरा एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानो से कचरा संग्रहण एवं प्रथक्करण, गांवो की सडक एवं नाली सफाई कार्य की सेवाओं हेतु राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग (अनुभाग - 5) की गाईडलाईन अनुसार इच्छुक बोलीदाता / संवेदक / फर्म जो कि वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हो, से दिनांक 04.07.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक खुली बोली / ई निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत सूचनाएं एवं शर्ते वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in & https:// sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
UBN No. PKP2526WSRC00099

प्रशासक
ग्राम पंचायत बिहार
पं. स. पाटन (सीकर)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बिहार
पं. स. पाटन (सीकर)

कार्यालय नगर परिषद सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/विकास शाखा/2025/2667 दिनांक :– 25.06.2025

–: ई–निविदा सूचना–2025–26 :–

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मों से निविदा दिनांक 14.07.2025 तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड कि जा सकता है एवं निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक DLB2526WSOB09189 है। कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

राज.संवाद/सी/25/5297

सार्वजनिक सुचना

सर्वसाधारण को सुचित किया जाता है नगरपालिका सरदारशहर द्वारा विजयलक्ष्मी पत्नी मारुति कुमार के नाम से पट्टा सं. 2445 दिनांक 3/10/23 को जारी शुदा है। जिसका उप पंजीयन कार्यालय में पंजीयन 29/1/25 को हो चुका है। पट्टा धारक विजयलक्ष्मी बैंक आफ बड़ौदा सरदारशहर से ऋण लेना चाहते हैं। उक्त पट्टा बैंक में बंधक हेतु पेश किया है। किसी व्यक्ति को उपरोक्त पट्टा भूमि से कोई आपत्ति हो तो 5 दिवस में मुझे या बैंक के समक्ष अपनी आपत्ति दर्ज करें। अन्यथा उपरोक्त बैंक द्वारा ऋण स्वीकृत किया जायेगा।

भवदीय
पवन सोनी एड्वोकेट सरदारशहर

नाम परिवर्तन

मे राजबाला पत्नी मुकेश कुमार बड़सरा, जाति- जाट, निवासी- गांव पचलंगी, तहसील- उदयपुरवाटी, जिला- झुंझुनू (राजस्थान) सर्वसाधारण को सूचित करती हूं कि मेरे पति मुकेश कुमार बड़सरा वर्तमान में सैन्य संख्या 15485458Y रैंक दफेदार भारतीय सेवा में 39 आर्म्ड ब्रिगेड (हिसार) हरियाणा में कार्यरत हैं मेरे पति के सर्विस रिकॉर्ड में मेरा नाम गलती से राजबाला देवी दर्ज हो गया है जो कि गलत है मेरा नाम मेरे आधार कार्ड व अन्य दस्तावेजों में राजबाला है जो सही है अतः भविष्य में मेरे पति के सर्विस रिकॉर्ड में मेरा नाम राजबाला देवी के स्थान पर राजबाला की पढ़ा एवं समझा जाए

नाम परिवर्तन

मैं मुकेश कुमार बड़सरा पुत्र फूलचंद जाट, जाति- जाट, निवासी गांव -पचलंगी, तहसील -उदयपुरवाटी, जिला- झुंझुनू (राजस्थान)सर्वसाधारण को सूचित करता हूं कि मैं वर्तमान में सैन्य संख्या 15485458Y रैंक दफेदार नाम मुकेश कुमार बड़सरा भारतीय सेवा में 39 आर्म्ड ब्रिगेड हिसार हरियाणा में कार्यरत हूं मेरे सर्विस रिकॉर्ड में मेरी पुत्री का नाम गलती से भाग्य श्री (BHAGE SHREE) दर्ज हो गया जो पूर्णतया गलत है मेरी पुत्री के जन्म प्रमाण पत्र वह अन्य दस्तावेजों में उसका नाम भाग्यश्री (BHAGESHREE) है जो सही है अतः भविष्य में मेरी पुत्री का नाम भाग्यश्री (BHAGESHREE) ही लिखा जाए एवं पढ़ा जाए

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड चूरू

क्रमांक- 1252-1268 दिनांक- 24-06-2025

निविदा सूचना संख्या- 12 / 2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से तहसील व जिला चूरु में निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में टेन्डरिंग प्रक्रिया द्वारा निविदायें आमंत्रित की जाती है ।
NIB No. - PWD2526A1586

S.No.	UBN NO.	S.No.	UBN NO.
1.	PWD2526WSOB05536	2.	PWD2526WSOB055367

DIPR/C/8928/2025

अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड चूरू

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जिला वृत, जयपुर

कमांक- 1711-1720 दिनांक- 20.06.2025

निविदा सूचना संख्या 06-07 /2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत संवेदकों से ई-प्रोक्यूमेन्ट के माध्यम से निविदायें आमंत्रित की जाती है।
उक्त सभी निविदाओं से संबंधित विस्तृत विवरण वैबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.dipr.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। उपरोक्त निविदाओं का sppp.rajasthan.gov.in निम्नानुसार कर दिया गया है-

क्र.सं.	निविदा संख्या	आई.डी. नम्बर	अपलोड की दिनांक
01	06/2024-25	PHE 2526WSRC03906	20.06.2025
02	07/2024-25	PHE 2526WSRC03908	20.06.2025

DIPR/C/8642/2025

(अजय कुमार)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग जिला वृत, जयपुर

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सा0नि0वि0 वृत चूरू

क्रमाक - 566 दिनांक- 13.06.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 05/2025-26

इच्छुक निविदादाताओं से जिला चूरू में मिसिंग लिंक / नॉन पेचेबल सडक निर्माण कार्यो (मय पाँच वर्ष के दोष निवारण व सुधार अवधि) कार्य हेतु अनुमानित लागत राशि रू0 3886.40 लाख की ई-निविदा आमन्त्रित की जाती है। कार्य के निविदा प्रपत्र दिनांक 15.07.2025सांय 6.00 बजे तक ऑनलाईन अपलोड करना आवश्यक होगा। उक्त निविदा से सम्बन्धित विवरण राज्य सरकार के प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in, http:// eproc. rajasthan.gov.in व विभागीय वेबसाईट http://pwd.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है ।
NIB No-PWD2526A1365
UBN No-
1- PWD2526WLOB04780 2- PWD2526WLOB04781
3- PWD2526WLOB04782 4- PWD2526WLOB04783
5- PWD2526WSOB04784 6- PWD2526WSOB04785
7- PWD2526WSOB04786 8- PWD2526WSOB04787
9- PWD2526WSOB04789

DIPR/C/8314/2025

अधीक्षण अभियन्ता
सा.नि.वि वृतचूरू

डॉक्टर डेः उप जिला अस्पताल के चिकित्सकों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे के बाबा नारायण दास राजकीय सामान्य चिकित्सालय के चिकित्सकों का डॉक्टर डे पर 1 जुलाई को भाजपा कार्यकर्ताओं व चिकित्सा कर्मियों ने अलग-अलग स्वागत किया। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने अजीतगढ़ दिवराला भाजपा मंडल उपाध्यक्ष जितेंद्र जांगिड़ व अजीतगढ़ नगर पालिका के उपाध्यक्ष मनोज खंडेलवाल व अजीतगढ़ दिवराला भाजपा मंडल अध्यक्ष रामगोपाल मंगावा के नेतृत्व में सम्मान किया। वही अजीतगढ़ के नर्सिग अधिकारियों व चिकित्सा कर्मियों ने एक समारोह का आयोजन कर सभी चिकित्सकों का सम्मान किया। 108 एंबुलेंस कर्मियों ने भी चिकित्सकों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अस्पताल के पीएमओ डॉक्टर अशोक कुमावत, वरिष्ठ चिकित्सा के डॉक्टर एमपी सैनी, डॉक्टर महेंद्र स्वामी, डॉ नितिन अग्रवाल, डॉ विजय सैनी, डॉक्टर मनीष जांगिड़, डॉ राजेश बाजिया, डॉक्टर सुनीता जाखड़, डॉ अनीता अटल, डॉक्टर विजय चौधरी, डॉक्टर सीता गठाला, डॉक्टर ताहिर हसन ने संबोधन किया। समारोह का मंच संचालन नर्सिंग अधिकारी हरिओम शर्मा ने किया। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ता रामगोपाल मंगावा जितेंद्र जांगिड़, मनोज खंडेलवाल, कमलेश कुमावत, गोपाल मीणा, जीएल टेलर, जेपी जाट समेत कई भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नेशनल डॉक्टर्स डे पर चिकित्सकों का सम्मान

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 पर होटल रघु पैलेस के पास स्थित बीटीएस हॉस्पिटल में डॉक्टर्स डे मनाया गया, जिसमें प्रतीक चिन्ह देकर चिकित्सकों का सम्मानित किया गया। अस्पताल में भर्ती मरीजों ने भी चिकित्सको के साथ अपने विचार साझा किए। समारोह के दौरान डॉ जयदीप भट्ट, डॉ राकेश नासना, डॉ अदिति शर्मा, डॉ भंवर सिंह ताखर, डॉ अजय सक्सेना आदि का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह में झाबर मल बिजारणियां, रोहिताश बिजारणियां, सरदारसिंह मान, ताराचंद सहित स्टाफ मौजूद रहा।

रायपुर जागीर व करडका ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित

उपखंड अधिकारी ने किया शिविर का औचक निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। पंचायत समिति क्षेत्र के ग्राम रायपुर जागीर व करडका में मंगलवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय पखवाडे के तहत अलग-अलग शिविरो का आयोजन किया गया। इनका उपखंड अधिकारी अनिल कुमार व अजीतगढ़ पंचायत समिति के प्रधान शंकर लाल यादव ने अचानक निरीक्षण किया।। रायपुर जागीर में 13 सीमा ज्ञान प्रकरणों का निराकरण करवा पत्थर गट्ठी करवाई गई। साथ ही 16 रास्तों के प्रकरणों का भी निराकरण करवाया गया। इसके अलावा अन्य विभागों के भी कई कार्य हुए। इस अवसर पर हरियालो राजस्थान अभियान के तहत 50 पेड़ पौधे लगाकर पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर शिविर प्रभारी सांवरमल सैनी, ग्राम पंचायत की प्रशासक उगन्ता देवी प्रजापत, ग्राम विकास अधिकारी सुरेंद्र कुमार वर्मा समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीवरेज में सरकारी धन के दुरूपयोग का आरोप

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ(नि.सं.)। बीकानेर संभागीय आयुक्त रवि कुमार सुरपुरा को नगरपरिषद की नेता प्रतिपक्ष जयश्री दाधीच ने मिलकर ज्ञापन सौंपा है और सीवरेज प्रथम व द्वितीय फेज के तहत सुजानगढ़ में की गई अनियमितताओं की जांच करवाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया है कि सिवरेज प्रथम फेज के तहत बने चैम्बर्स काफी जगहों पर लीक हो रहे हैं। इसी प्रकार सीवरेज की दूसरे फेज में भी सरकारी धन का दुरूपयोग किया जा रहा है। इसके तहत बनाई गई सड़कों की जांच करवाये जाने की मांग संभागीय आयुक्त से की गई है।

पलसाना में सफाई व्यवस्था ठप, लोगों के काम अटके

जयपुर टाइम्स

पलसाना(निस)। नगरपालिका बनने के बाद सफाई व्यवस्था ठप हो गई है और लोगों के जरूरत के काम अटक गए हैं। सफाई का ठेका नहीं होने से घर-घर कचरा संग्रहण भी बंद है। इस कारण पूरे कस्बे में गंदगी पसरी हुई है। रामलीला मैदान, अस्पताल व सहकारी भवन के आसपास कचरे के ढेर लगे हैं, जिससे वातावरण दूषित हो रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि पहले पंचायत कार्य कर रही थी, लेकिन नगरपालिका का नोटिफिकेशन आते ही उसने हाथ खींच लिए। वर्तमान में खंडेला के ईओ को ही पलसाना का अतिरिक्त चार्ज दिया गया है, लेकिन उनके पास स्टाफ नहीं होने से सारे कार्य ठप हैं। राशन कार्ड, पेंशन, मूल निवास, जाति प्रमाण पत्र, विवाह पंजीकरण जैसी सुविधाएं भी प्रभावित हैं। स्कूलों में दाखिले के लिए जरूरी दस्तावेज नहीं बन पा रहे, जिससे बच्चों व अभिभावकों को रोज चक्कर काटने पड़ रहे हैं। ग्रामीणों ने सरकार पर आरोप लगाया कि सिर्फ घोषणा कर देने से काम नहीं चलता, शुरुआत के साथ ही आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिए थी। जानकारी देते हुए वार्ड पंच इब्राहिम खान ने बताया कि कस्बे का रामलीला मैदान मुख्य चौराहा है जहां पर दिन भर लोगों का आवागमन बना रहता हैं। यहां पर पिछले कई दिनों से कचरा पड़ा जिससे भयानक बदबू आती दुकानदार और आने जाने वाले राहगीर सांस तक नहीं ले पाते हैं। बीमारी और मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। वहीं नगरपालिका की कचरा उठाने वाली गाड़ी नगरपालिका परिसर में खड़ी है।

चरागाह की जगह अब मिली धराः आभावास के महात्मा गांधी स्कूल को भूमि आवंटन

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। उपखंड क्षेत्र के गांव आभावास की महात्मा गांधी गवर्मेंट स्कूल के लिए शैक्षणिक सत्र 2025-26 का पहला दिन खुशियों की सौगात लेकर आया। 30 वर्ष की लंबी अवधि के बाद विद्यालय के नाम भूमि आवंटन हुआ। मंगलवार को विद्यालय खुलते ही रींगस उपखंड अधिकारी बृजेश कुमार और तहसीलदार विवेक कटारिया विद्यालय पहुंचे और प्रधानाचार्या झाबर मल वर्मा को आवंटन आदेश सौंपा। उपखंड अधिकारी बृजेश कुमार ने बताया कि आभावास में 30 वर्ष पहले चारागाह भूमि में राजकीय प्राथमिक विद्यालय खोला गया था जो बाद में क्रमोन्नत होते हुए क्रमशः राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय और वर्तमान में महात्मा गांधी स्कूल में क्रमोन्नत हो गया। विद्यालय के नाम भूमि नहीं होने से सरकार की योजनाओं सहित कक्षा कक्षों के निर्माण के लिए भी राशि स्वीकृत नहीं हो रही थी। विद्यालय की इस परेशानी के बारे में प्रधानाचार्य झाबर मल वर्मा की ओर से अवगत करवाया गया तो तहसीलदार विवेक कटारिया की ओर से भूमि आवंटन का प्रस्ताव तैयार कर जिला कलेक्टर को भेजा गया। सीकर जिला कलेक्टर की ओर से नौनिहालों के भविष्य को देखते हुए तुरंत भूमि आवंटन के आदेश जारी किए। शैक्षणिक सत्र के पहले दिन ही सरकार की ओर से मिला उपहार पाकर स्टाफ सदस्यों सहित विद्यार्थियों ने जिला कलेक्टर, उपखंड अधिकारी, तहसीलदार का आभार प्रकट किया।

एसडीएम के निर्देशों का असरः उप जिला अस्पताल में ड्यूटी में कोताही तो होगी सख्त कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। नीमकाथाना के अतिरिक्त जिला कलेक्टर भागीरथ साख के 28 जून को अजीतगढ़ के उप जिला अस्पताल का अचानक निरीक्षण करने के बाद पीएमओ को दिए गये निर्देश निर्देश के बाद अस्पताल प्रशासन कठोर रुख अपनाना शुरू कर दिया है। अस्पताल के पीएमओ डॉक्टर अशोक कुमावत ने अस्पताल के सभी चिकित्सकों व चिकित्सा कर्मियों को लिखित में निर्देशित किया है कि सभी कर्मचारी अपनी ड्यूटी पर समय पर आए और ड्यूटी बाद समय पर जाए। अगर किसी कर्मचारी ने ड्यूटी के दौरान कौताही बरती तो कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने निर्देशित किया कि अस्पताल के चिकित्सकों व चिकित्सा कर्मियों का उपस्थिति रजिस्टर उनके पास रहेगा और जो कर्मचारी समय पर आएगा उसकी हाजिरी होगी जो कर्मचारी समय पर नहीं आएगा उसको अनुपस्थित माना जाएगा। उन्होंने निर्देशित किया कि चिकित्सा कर्मी व चिकित्सक पूरी ड्यूटी देकर ही अस्पताल से जाए। वह समय-समय पर अचानक के अस्पताल का निरीक्षण भी करेंगे। उन्होंने कहा कि अस्पताल की किसी भी प्रकार की व्यवस्था बिगड़ता नहीं देंगे।

रोटरी जोन के सह प्रांतपाल बने डॉ ताखर

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। ताखर हॉस्पिटल के निदेशक व रोटरी क्लब रींगस के पूर्व अध्यक्ष डॉ भंवर सिंह ताखर को रोटरी जोन 14 का सह प्रांतपाल नियुक्त किया गया है। रविवार को कोटा में आयोजित डीजी इंस्टॉलेशन सेरेमनी में रोटरी प्रांतपाल प्रज्ञा मेहता, महारानी कल्पना देवी और कोटा पुलिस अधीक्षक डॉ अमृता दोहन ने डॉ ताखर को सह प्रांतपाल की शपथ दिलाई। डॉ ताखर की इस नियुक्ति पर कस्बेवासियों सहित अस्पताल स्टाफ ने बधाई दी।

नेशनल डॉक्टर्स डेः उप जिला अस्पताल में लगवाया वाटर कूलर

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष पर मंगलवार को कस्बे के राजकीय उप जिला अस्पताल में नगर पालिका के पूर्व पार्षद हीरालाल धाबाई की पुण्य स्मृति में परिजनों की ओर से वाटर कूलर लगवाया गया। कांग्रेस ब्लॉक उपाध्यक्ष सुरज्ञान धाबाई के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में उप जिला अस्पताल के सभी चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। पूर्व पार्षद खेमराज धाबाई ने बताया कि पिता हीरालाल धाबाई की याद में उप जिला अस्पताल में 65 हजार की लागत से वाटर कूलर लगवाया गया, जिसकी कूलिंग क्षमता 60 लीटर व स्टोरेज 120 लीटर है वाटर कूलर की सुरक्षा के लिए लोहे का ढांचा और उसके ऊपर 5 सौ लीटर की टंकी भी रखवाई गई। भामाशाह को इस पुनीत कार्य के लिए राजकीय उप जिला अस्पताल के वरिष्ठ सर्जन डॉ जितेन्द्र यादव ने प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान उप जिला अस्पताल के पीएमओ डॉ रामवतार दायमा ने फीता काट कर वाटर कूलर का लोकार्पण किया। रामेश्वर लाल गुर्जर ने बताया कि उप जिला अस्पताल परिसर में बने ट्रोमा भवन के प्रवेश द्वार पर वाटर कूलर लगवाया गया जिससे अस्पताल आने वाले मरीजों सहित आमजन को भी शीतल पेयजल मिलेगा। इस दौरान डॉ जितेन्द्र सिंह यादव, डॉ सुखदेव सिंह महला, डॉ रमेश यादव, डॉ स्वाति नयन, डॉ सुनील गढ़वाल, डॉ इंद्रसिंह रणवां, डॉ विकास अग्रवाल, पार्षद सुवा देवी धाबाई, श्यामलाल धाबाई, मदन लाल धाबाई, कैलाश बाजिया, जोरावर सिंह पावंडा, मोहनलाल हरितवाल आदि मौजूद रहे।

महेन्द्र सिंह शेखावत अध्यक्ष व हेमाराम महासचिव निर्वाचित

प्रस्ताव पारित, 9 जुलाई को करेंगें हड़ताल

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन धोद तहसील कमेटी का दुसरा सम्मेलन मंगलवार को हरलाल सिंह पालथाना व हेमाराम किरडोली की अध्यक्ष में शूरू हुआ। सम्मेलन के शुरू में 2 मिनट का मौन रखकर शहीदो को श्रद्धांजलि दी गई। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राज्य अध्यक्ष राम रतन बगड़िया ने कहा कि सरकार कि किसान विरोधी नीतियों के कारण गांव में मजदूरी पैसा लोगों की तादाद बढ़ रही है। गांवों में भूमिहीन लोगों को आवासीय पट्टे देने में प्रशासनिक अधिकारी आना-कानी करते हैं। मनरेगा को सरकार की नीतियों ने ठप कर दिया है। ऐसे में गांव के गरीब को संगठित करना ही हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। सम्मेलन में जिला अध्यक्ष पूरन सिंह शेखावत ने 13 सदस्य नई कार्यकारिणी का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पास किया। जिसमें अध्यक्ष महेंद्र सिंह शेखावत सचिव हेमाराम किरडोली, जगदीश पूर्व सरपंच मैलासी व मनफूल सिंह को उपाध्यक्ष, प्रमोद शर्मा व धर्मपाल रणवां को सहसचिव, मुगल सिंह, हरलाल सिंह, ओम प्रकाश, मोहित कुमार, रामचंद्र सिंह, मनोज जांगिड़ अशोक गढ़वाल, गिरधारी लाल व गोपाल कुमावत को कार्यकारिणी सदस्य चुना गया। सम्मेलन में मनरेगा में की जा रही कटौती को बंद करने, श्रम विरोधी कानून के खिलाफ 9 जुलाई की हड़ताल को सफल बनाने, स्मार्ट इलेक्ट्रॉनिक मीटर लगाना बंद करने सहित अनेक प्रस्ताव पारित किए गए। सम्मेलन का समापन पूर्व ब्लाक विकास अधिकारी नानग राम सेवदा ने किया।

वर्मा जिलाध्यक्ष, लूणा बने महासचिव

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। डॉ अंबेडकर अनु जाति अधिकारी कर्मचारी एसोसिएशन सीकर(अजाक) संगठन के पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ राजकुमार नहरिया ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम चोरड़िया के निर्देशानुसार प्रदेश अध्यक्ष वेदप्रकाश वर्मा व चुनाव पर्यवेक्षक डॉ निरंजन चिराणीया की देखरेख में श्रीकृष्णा छात्रावास में चुनाव संपन्न हुए।जिसमें जिलाध्यक्ष सुरेश कुमार वर्मा व जिला महासचिव हंसराज लूणा सर्व सहमति से चुने गए। प्रदेश अध्यक्ष की ओर से अजाक के संविधान की रीति नीति के बारे में बताया गया।चुनाव प्रक्रिया के दौरान प्रो भगीरथ मल चिरानियाँ, सीबीईओ सीताराम खरिया, डॉ वीरेंद्र वर्मा, रामप्रताप सर्वा, हरिराम बुनकर, सुरेश दानोदिया, बद्रीप्रसाद, भागीरथ मल सिंहासन, विजय लूणा, वीरेंद्र वर्मा,लल्लूराम खर्रा, रामनिवास राजोरिया, गणेशराम, बंशीधर वर्मा, भरत तानान, अशोक बरवड़ आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन डॉ मक्खन लाल वर्मा ने किया।

77वें चार्टर्ड अकाउंटेंट दिवस पर किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले में सी.ए. इंस्टीट्यूट का 77वां चार्टर्ड अकाउंटेंट दिवस मंगलवार को समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में चूरू के प्रैक्टिसिंग सी.ए. सदस्यों की ओर से इनकम टैक्स विभाग व जीएसटी विभाग में पौधरोपण किया गया। वरिष्ठ लेखाकार विनोद अग्रवाल, आयकर अधिकारी नेमीचंद, शीशराम, सुमन, हजारीलाल गुर्जर व मुकेश बड़सरा मौजूद रहे। जीएसटी विभाग के वाणिज्यिक कर अधिकारी रामकुमार व अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे। इस दौरान लेखाकार व विभागीय अधिकारियों की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सी.ए. इंस्टीट्यूट की ओर से चूरू में शाखा भी खोली जा रही है, जिसका अनुमोदन प्रधान कार्यालय सी ए इंस्टिट्यूट दिल्ली की ओर से किया गया। चूरू में सीए इंस्टिट्यूट शाखा से आने वाले समय में सीए महत्वाकांक्षी बच्चों और सी.ए. प्रैक्टिशनर्स को भी इसका लाभ मिलेगा।,

सैनी समाज की प्रतिभाओं का घर-घर जाकर सम्मान

जयपुर टाइम्स

थोई(निस)। सैनी समाज की प्रतिभाओं का घर-घर जाकर सम्मान किया। स्थानीय थोई सैनी समाज ने राजस्थान मा. शिक्षा बोर्ड में दसवीं व बारहवीं क्लास में 80% व उससे अधिक अंक लाने वाले सैनी समाज के 15 छात्र-छात्राओं व उनके परिजनों का घर जाकर सम्मान योजना के तहत प्रतिभाओं को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर मोक्ष धाम बड़ी ढाणी 101 पौधे लगाए गए, शिव मंदिर परिसर भरण की ढाणी में 51 पौधे लगाए गए और उनकी देखरेख करने की कार्यकारिणी के सदस्यों व पदाधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई। कार्यक्रम का आयोजन आल इंडिया सैनी सेवा सम्मान श्रीमाधोपुर व सैनी समाज विकास सेवा समिति थोई के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम में आल इंडिया सैनी सेवा समाज के दिनेश सैनी, सीताराम सैनी, ओमप्रकाश, ललित सैनी, सागर मल सैनी, राजू नागवान व स्थानीय सैनी विकास समिति थोई के अध्यक्ष डॉ. ग्यारसी लाल सैनी, सरपंच रामप्रकाश सैनी, मुरलीधर अध्यापक, बालू राम सैनी, फुलचंद सैनी, मोहन लाल, राजेश व प्रकाश सैनी सहित कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे।

कांवट में अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर आज

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। ग्राम पंचायत कांवट के भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्र कांवट पर बुधवार को पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर आयोजित होगा। ग्राम पंचायत प्रशासक मीना सैनी ने बताया कि शिविर में समस्त विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित होकर आम जन की समस्याएं सुनकर तत्काल हल करेंगे।

एसबीआई बैंक के नवसत्र पर पौधे लगाए, छात्रों को बैग वितरित

जयपुर टाइम्स

पलसाना(निस)। एसबीआई बैंक पलसाना की ओर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांकरिया जोहड़ा मंढा में नव नामांकित छात्र छात्राओं को स्कूल बैग, टॉफी वितरित किए गए। साथ ही पर्यावरण सुरक्षा के लिए 10 छायादार पेड़ पौधे लगाए। इस अवसर पर एसबीआई पलसाना प्रबंधक प्रेमचंद गोठवाल, सह प्रबंधक अशोक कुमार जांगिड़, प्रधानाध्यापक गोपाल सिंह शेखावत, अध्यापिका बिमला देवी, कार्यकर्ता संतोष देवी, मुकेश देवी, जितेश सैनी, कमलेश सैनी, महेश यादव, पवन शर्मा, पप्पू सोनी, दिनेश सैनी व अनेक नागरिक मौजूद रहे। आगन्तुको का प्रधानाध्यापक गोपाल सिंह ने धन्यवाद ओर आभार प्रकट किया और विद्यालय में अधिक से अधिक नामांकन करवाने का आग्रह किया।

मण्डावा में गायत्री महायज्ञ का आयोजन

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। कस्बे के वार्ड चार स्थित श्री गणेश मन्दिर के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिससे यज्ञ स्थल पर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ। कार्यक्रम में शांति कुंज हरिद्वार के प्रतिनिधि भोलासिंह यदूवंशी ने गायत्री मंत्र की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह मंत्र मानव मन में शक्ति और चेतना का संचार करता है। उन्होंने कहा कि भगवान को पुकारने के लिए शब्दों की नहीं, भावों की आवश्यकता होती है। भोलासिंह ने कहा कि यह स्थान आचार्य श्रीराम शर्मा के नेतृत्व में अंचल के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ताने-बाने को संजोने का केंद्र है। गायत्री महायज्ञ में मुख्य यजमान धर्मानुरागी पिंकी - शीवरतन झुंझुनूंवाला रहे। उक्त धार्मिक कार्यक्रम में पूर्व पार्षद कैलाश पीपलवा, संजय जोशी, नंदकिशोर शर्मा, सीताराम सैनी, सीताराम तिवाडे़, राजकुमार पारासर, सुखदेव पारासर, मनोज कुमार, पार्षद संदीप परिहार, संजय मील सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद रहे।

चेक बाउंस मामले में 9 साल से फरार स्थाई वारंटी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। भानीपुरा तहसील के गांव राजासर चोडिया निवासी 47 वर्षीय राजाराम पुत्र पनाराम पिछले 9 सालों से चेक बाउंस मामले में फरार चल रहा था और कोर्ट ने स्थाई वारंटी के रूप में घोषित कर रखा था। चूरू स्पेशल पुलिस के हेड कांस्टेबल संजय कुमार बसेरा ने खिराजा राम को राजासर चोडिया गांव से गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया है। हेड कांस्टेबल संजय कुमार बसेरा ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि चुरु पुलिस अधीक्षक जय यादव के निर्देशन पर लंबे समय से फरार चल रहे आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम का गठन किया गया हैं। जो भी आरोपी लंबे समय से फरार चल रहा है उनको गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया जा रहा है। इसी कड़ी में राजासर चोडिया निवासी खिराजाराम पिछले 9 सालों से चेक बाउंस मामले में फरार चल रहा था और कोर्ट द्वारा खिराजाराम को स्थाई वारंटी के रूप में घोषित किया हुआ था। जिसे गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। उन्होंने कहा कि स्पेशल पुलिस का यह विशेष अभियान लगातार जारी है। जो भी आरोपी पिछले लंबे समय से फरार चल रहे हैं या तो वह खुद ही कोर्ट में सरेंडर कर दे अन्यथा स्पेशल टीम उन्हें जल्द गिरफ्तार करेगी।

पूर्व केंद्रीय मंत्री दौलतराम सारण की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आज

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। पूर्व केंद्रीय मंत्री व किसान नेता धार के गांधी दौलतराम सारण की पुण्यतिथि के अवसर पर बुधवार को प्रातः 10 बजे केंद्रीय कृषि मंत्री भागीरथ चौधरी समाधि स्थल पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। कार्यक्रम कन्या छात्रावास स्थित समाधि स्थल पर आयोजित होगा। इसके पश्चात श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भाजपा नेत्री सुशीला सारण, भाजपा नेता मधुसूदन राजपुरोहित, जिला परिषद सदस्य श्योकरण पोटलिया, जिला परिषद सदस्य गिरधारी लाल पारीक, रेंवतराम बेनीवाल सहित कई जनप्रतिनिधियों ने बैठक कर संपूर्ण तैयारियों को अंतिम रूप दिया।

'हरियालो राजस्थान अभियान' के अन्तर्गत पुलिस थाने में पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। हरियालो राजस्थान अभियान' के अन्तर्गत तारानगर के पुलिस थाने में मंगलवार को पौधारोपण किया गया। पौधारोपण के दौरान उप पुलिस अधीक्षक रोहित सांखला ने कहा कि पेड़ -पौधे प्रकृति का हम सबको प्रदत अनुपम उपहार है और धरा का श्रृंगार है। राजस्थान सरकार की ओर से चलाए जा रहे 'हरियालो राजस्थान अभियान' के अन्तर्गत अधिक से अधिक पौधरोपण कर राजस्थान की इस धरा को हरा भरा बनाकर हम इस धरती के प्रति सच्ची श्रद्धा व्यक्त कर सकते है। पौधरोपण से ही हम हमारी आने वाली पीढियों को आसन्न जलवायु परिवर्तन के खतरो से बचा सकते है। इस मौके पर थाने के सहायक उप निरीक्षक सुमेर सिह मीणा, विजयसिह, हैड काँस्टेबल सुभाष चंद्र शर्मा, हरिदान चारण, काँस्टेबल ओमप्रकाश, राजू नायक, जमरदीन तेली, हरी इंदौरिया, मानसिंह सैनी, वीर बहादुर सिह राठौड़, बुँदे खाँ लुहार, किशन सिह राठौड़, शिव कुमार शर्मा सहित पुलिस स्टाफ व शान्ति समिति के सदस्य मौजूद रहे।

चिकित्सकों का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। डॉक्टर्स व चार्टर्ड अकाउंटेंट्स दिवस पर मारवाड़ी युवा मंच के सुरेश अरोड़ा, महेश शर्मा, नवीन सोनी, सुभाष बरमेचा व मारवाड़ी युवा मंच गणगौर शाखा की पूजा शर्मा, खुशबू सोनी, प्रमिला प्रजापत, सरस्वती भोजक, नेहा प्रजापत ने राजकीय बगड़िया अस्पताल के पीएमओ डॉ. पुरूषोतम करवा, डॉ रविकांत सोनी, डॉ अनुराग गोयल, डॉ महेश महला, डॉ सुनिल मीणा, डॉ विवेक सोनी, डॉ दिलीप सोनी, डॉ रघुवीर तुनवाल, डॉ रामरतन बिस्सु, डॉ योगिता सक्सेना व सीए नितिन राठी, हिमांशु तोदी, हिमांशु प्रजापत का सम्मान किया।

विकास अधिकारी को ज्ञापन, मेगा हाईवे जाम की दी चेतावनी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के एक झंडा एक डंडा संगठन की ओर से पंचायती राज मंत्री के नाम विकास अधिकारी को ज्ञापन दिया गया। संगठन के संयोजक रुपचन्द सहारण ने बताया कि ग्राम पंचायत में विभिन्न कार्य योजनाओं के दस्तावेज सत्यापन आदि के नाम पर ग्राम विकास अधिकारियों की ओर से अतिरिक्त सेवा शुल्क लिया जा रहा है जो आम आदमी के साथ कुठाराघात है। जिनमें ग्राम पंचायत में विवाह प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, जन्म प्रमाण पत्र, जॉब कार्ड आदि के भौतिक सत्यापन को लेकर शुल्क लिया जा रहा है। ग्राम विकास अधिकारी की ओर से मनमर्जी से रुपए लेकर दस्तावेजों पर भौतिक सत्यापन किया जाता है। पूछने पर बताया जाता है कि राज्य सरकार की ओर से तय नियम अनुसार शुल्क देना होगा और ना ही कोई रसीद दी जाती है। ग्रामीणों के हित के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं में प्रधानमंत्री सेल्फ सर्वे जिओ ट्रैकिंग, टीन सेड, पानी का कुंड, बकाया भुगतान के लिए भी ग्राम विकास अधिकारियों की ओर से सेवा शुल्क वसूल किया जा रहा हैं। मनरेगा योजना के तहत मेट हुए अन्य विभिन्न लोगों की राशि काफी लंबे समय से उनके खातों में अदा नहीं की गई है। जिनको राशि अदा करनी है, उनके नाम पर भी सेवा शुल्क लिया जा रहा है और नियम अनुसार ग्राम पंचायत मुख्यालय व पंचायत समिति मुख्यालय पर उक्त शुल्क की दरें नोटिस बोर्ड पर चश्मा करवाई जाए। ताकि आवेदक शुल्क अदाकर अपना कार्य वक्त पर पूरा करवा सके। दस्तावेज सत्यापन के नाम पर ग्राम विकास अधिकारियों की मनमर्जी से शुल्क लेने के कारण जन सामान्य के कार्यों में अनावश्यक विलंब व विवाद की स्थिति पैदा हो रही है। विभिन्न मांगों को लेकर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से 1 महीने पहले विकास अधिकारी को अवगत करवाया गया। लेकिन आज तक धरातल पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सभी मांगे वक्त रहते पर नहीं मानने पर पंचायत समिति के आगे धरना दिया जाएगा और मेगा हाईवे रोड जाम लगाया जाएगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी। ज्ञापन देने वालों में रुपचन्द सहारण, धीरेंद्र सैनी, आशीष कुड़ी, जगदीश सारण राजास, प्रमोद नाई आदि उपस्थित रहे।

डॉक्टर्स दिवस: बच्चों ने किया धन्यवाद

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के शाकम्भरी विद्यापीठ के अंग्रेजी माध्यम विद्यालय एसवीपी इंग्लिश एकेडमी के विद्यार्थियों ने राजकीय उप जिला अस्पताल में जाकर सभी चिकित्सकों को शुभकामना पत्र देकर उनको बधाई देते हुए समाज की निस्वार्थ सेवा करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। विद्यालय के अध्यापक प्रेम प्रकाश नाई व अर्चना चौधरी के नेतृत्व में नन्हे मुन्ने बच्चों ने सभी डॉक्टर्स को उनके कक्ष में जाकर उनकी ओर से की जा रही सेवा के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि आप हम सबके जीवन की रक्षा के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। हम सब बच्चे आपकी इस सेवा के लिए आपका धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। बच्चों के इस प्रेम भरे शुभकामना संदेश को पाकर सभी चिकित्सक बहुत प्रसन्न हुए और बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया। प्रधानाचार्य भरत गौड़ ने बताया कि उप जिला अस्पताल के सभी चिकित्सक उपलब्ध संसाधनों के साथ दिन-रात क्षेत्र की जनता की स्वास्थ्य सेवाओं की देखभाल के लिए बेहतरीन प्रयास कर रहे हैं। ऐसे में समाज का भी दायित्व बनता है कि हम उनका धन्यवाद करें और उनकी ओर से किए जा रहे प्रयासों व सेवाओं के लिए उनकी प्रशंसा करें। डॉक्टर्स हमारे समाज के स्वास्थ्य के प्रहरी हैं। उनका सहयोग हमारा कर्तव्य है। चिकित्सालय प्रभारी डॉ चंद्रभान जांगिड़ ने इस कार्यक्रम के लिए विद्यालय परिवार का धन्यवाद करते हुए कहा कि जब समाज हमारी सेवाओं के लिए सराहना करता है और धन्यवाद देता है तो हमारे कार्य करने की ऊर्जा दुगनी हो जाती है।

आंगनबाड़ी केंद्रो पर नई शिक्षा नीति का शुभारंभ, बच्चों का स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। बाल विकास परियोजना अधिकारी सुजानगढ़ के निर्देशानुसार गोपालपुरा सेक्टर में महिला पर्यवेक्षक सरिता बेरवाल के सानिध्य में सेक्टर की कार्यकर्ताओं की ओर से नई शिक्षा नीति 2020 के तहत नवीन ईसीसीई आधारित सत्र का शुभारंभ किया गया। जिसके तहत नवीन साप्ताहिक गतिविधियों पर आधारित कलेंडर के अनुसार शिक्षण सत्र का आयोजन किया जाना है। महिला पर्यवेक्षक की ओर से कार्यक्रम में नए बच्चों और अभिभावकों का स्वागत करते हुए सभी को ईसीसीई आधारित गतिविधियों की जानकारी दी। साथ ही समस्त कार्यकर्ताओं को समस्त गतिविधियों को अपने केंद्रों पर पालन के लिए निर्देशित किया गया। कार्यक्रम में संस्था प्रधान केशर सिंह के साथ अध्यापक सत्यनारायण, कमलेश, कोमल, सरोज ओर कार्यकर्ता सुवा कंवर, प्रीति, ममता, टिंकू, रामेश्वरी और संतोष उपस्थित रहे। इसी प्रकार शहर में आंगनबाड़ी संख्या 32 की पाठशाला प्रभारी सुशीला पुरोहित ने उपस्थित बच्चों व अभिभावकों को कैलेंडर आधारित गतिविधियों में किलकारी, उमंग तरंग व इंद्रधनुष 2.0 संदर्भ पुस्तकों की शिक्षा सामग्री की जानकारी दी। नव प्रवेशित बालिका पूर्वी पारीक व बालक जय प्रजापत, लक्की रैगर सहित उपस्थित अभिभावक माताओं का तिलक लगाकर स्वागत किया। साथ ही पूर्व प्रवेशित बालक बालिकाओं को शिक्षण सामग्री दी गई। इस अवसर पर अभिभावक सरोज पारीक, कुन्ती प्रजापत, राधा रैगर, नब्बु प्रजापत, सुमन पारीक, किरण रैगर, मनसुखी प्रजापत सहित आंगन बाड़ी पाठशाला के बालक, बालिका उपस्थित रहे।

मारू बने जिलाध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे के एडवोकेट रोहित मारू को जननायक कर्पूरी ठाकुर ओबीसी संगठन का चूरू जिला अध्यक्ष नियुक्त किया। यह नियुक्ति राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष भुपेश मारू व प्रधान महासचिव डॉ राजकुमार चांगल ने दी। मारू की नियुक्ति के बाद अनेकों समाजिक संगठनों से बधाई मिल रही है। मारू ने बताया कि समिती के आशानुरूप खरा उतरने का प्रयास करूंगा। शीघ्र कार्यकारिणी की घोषणा की जाएगी।

उधारी के रूपए मांगे, नहीं दिया तो कर दिया सरिए से वार

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। राजलदेसर पुलिस थाने में मारपीट का दर्ज हुआ है । जानकारी के अनुसार इमरान बेहलीम ने बताया है कि 27 जून रात लगभग 8 बजे, उनके पड़ोसी ईरफान जीन्द्राण (उम्र 45 वर्ष) ने उनके पिता मोहम्मद सत्तार पुत्र यूसुफ खां कसाई, निवासी राजलदेसर को घर के बाहर पैसे के लेन-देन का हिसाब करने के लिए बुलाया। इमरान के अनुसार, ईरफान ने बेवजह झगड़ा करना शुरू कर दिया। शिकायत में कहा गया कि जब मोहम्मद सत्तार अकेले थे तो रात के अंधेरे का फायदा उठाते हुए, ईरफान जीन्द्राण पुत्र इस्माइल जीन्द्राण, उसके भाई आरिफ जीन्द्राण, उनके दो भतीजे, ईरफान की पत्नी फरजाना जीन्द्राण और आरिफ की पत्नी रुकसाना जीन्द्राण - जो कि पहले से सोची-समझी साजिश के तहत छिपे हुए थे। अचानक मोहम्मद सत्तार के पीछे से आए और लोहे के सरिये से उन पर हमला कर दिया। मोहम्मद सत्तार के चिल्लाने पर पास के लोग जैसे सिकंदर पुत्र आमीन, इमरान पुत्र याकूब, मोसीन नागोरी पुत्र यूसुफ नागोरी, सोयल खत्री पुत्र आयूब खत्री और मोहल्ले के अन्य लोग इकट्ठा हो गए। इन लोगों ने मोहम्मद सत्तार की जान बचाई। हमले के कारण मोहम्मद सत्तार बेहोश हो गए थे। हमलावर यह कहते हुए मौके से भाग गए कि "मैंने तो मार दिया, आज मेरी मागत चुकता कर दी है, अब कोई भी मुझ में पैसा नहीं मांग रहा है, एक तो मैंने मार दिया है, आप उसे ले जाओ। शिकायतकर्ता का आरोप है कि हमलावरों ने उनके पिता को जान से मारने की कोशिश की है। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर भारतीय न्याय संहिता 2023 की धाराओं 189(2), 115(2), 126(2), और 110 बीएनएस 2023 के तहत मामला दर्ज कर लिया है। जांच सुरेश कुमार, सहायक उप-निरीक्षक को सौंपी गई।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद सरकारी और निजी स्कूलों में बजी घंटी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील में सरकारी और निजी स्कूलों का ग्रीष्मकालीन अवकाश खत्म होने के बाद मंगलवार को सभी स्कूल फिर से खुल गए हैं। लंबी छुट्टियों के बाद जैसे ही स्कूलों की घंटियां बजी वैसे ही उत्साह के साथ विद्यार्थियों ने स्कूल में प्रवेश किया। शहर की झालरिया कुआं स्थित महात्मा गांधी गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल में घंटी बजते ही बच्चों ने उत्साह के साथ प्रवेश किया और स्कूल में आकर सभी बच्चे खुश नजर आए। महात्मा गांधी गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल की छात्रा भावना सोनी ने बताया कि हमें बहुत अच्छा लग रहा है कि डेढ़ महीने बाद हमारे स्कूल खुली है। आज हमें टीचर्स और क्लासमेट से मिलकर बहुत अच्छा लगा है। हमने नए सत्र की तैयारी घर पर ही शुरू कर दी थी और अब स्कूलों में नियमित रूप से पढ़ाई शुरू हो रही है। पहले में 11वीं कक्षा में थी और 11वीं कक्षा में मेरे 86% अंक बने और इस बार मैंने 12 वीं कक्षा में प्रवेश लिया है। स्कूलों में मंगलवार से अब शैक्षणिक सत्र 2025-26 की नियमित कक्षाएं दोबारा से शुरू होंगी। स्कूल प्रधानाचार्यों के मुताबिक सोमवार को स्कूल में कर्मचारियों को बुलाकर साफ-सफाई, पेयजल व्यवस्था और कक्षा कक्षों की तैयारी कराई गई है। मंगलवार को बच्चों का स्कूलों में छुट्टियों के बाद का पहले दिन स्वागत उत्सव के रूप में मनाया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं का रोली चंदन से तिलक कर स्वागत किया गया। कुछ स्कूलों में छोटे बच्चों की कक्षाओं को फूल, रंगोली और गुब्बारों से सजाया गया।

उत्कृष्ट कार्य करने वाले डॉक्टर्स को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन चूरू की ओर से मंगलवार को डीबी अस्पताल स्थित वाचनालय में स्वतंत्रता सेनानी व पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहे डॉ. बिधान चन्द्र राय को श्रद्धा-सुमन अर्पित कर डॉक्टर-डे मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. महेश मोहन पुकार ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अस्पताल अधीक्षक डॉ. दीपक चौधरी, डॉ.प्रमोद अग्रवाल व डॉ. रेणु अग्रवाल रहे। डॉ. पुकार ने चिकित्सकों को ए-बी-सी का मूल मंत्र दिया। अवेलेबिलिटी-समय पर मरीजों के लिए उपलब्ध होना, बिहेवियर-आपका मरीजों व उनके परिजनों के प्रति विनम्र व्यवहार, कंपीटेंसी-आपकी विषय पर गहन पकड़, वर्तमान में अस्पताल के सभी चिकित्सक सर्वश्रेष्ठ सेवाएं मरीजों को दे रहे हैं। जिससे रेफरल केस में काफी कमी आई है। इस दौरान वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. इकराम, डॉ.विकास देवड़ा, डॉ. संदीप कुल्हरी, डॉ. जितेन्द्र, डॉ. आलोक गहलोत, डॉ. विष्वजीत, डॉ. गोपाल ढ़ाका, डॉ. आशीष कुल्हरि, प्राइवेट डॉक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. संदीप अग्रवाल, डॉ. अभिषेक आर्य सहित अनेक डॉक्टर्स मौजूद रहे। इस दौरान जिले में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चिकित्सकों को सम्मानित भी किया गया। इसके अंतर्गत नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. शशिधर, वरिष्ठ एनेस्थेटिस्ट डॉ. आकांक्षा कस्वां, को भरतीया अस्पताल में पैन-क्लीनिक की शुरुआत करने पर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में डॉ. पुकार को जिले में रेफरल केसों को रोकने के लिए किए गए सुधारों के लिए सम्मानित किया गया। प्राचार्य डॉ. पुकार ने बताया कि इस समय भरतिया अस्पताल के हड्डी रोग वार्ड में सोमवार व गुरुवार को पैन क्लीनिक में लम्बे समय तेज दर्द के रोगियों का इलाज, अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे मशीन की मदद से इंजेक्शन लगाकर सुबह 8 से 2 बजे तक किया जा रहा है। जिले के वरिष्ठ एनेस्थेटिस्ट डॉ. प्रमोद अग्रवाल को भी सम्मानित किया गया। आईएमए चूरू अध्यक्ष डॉ. राहुल कस्वां, कोषाध्यक्ष डॉ. साजिद चौहान ने डॉ. बिधान चंद्र राय की जीवनी पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन आईएमए चूरू के सचिव डॉ. अरुण वर्मा ने किया।

राजस्थान में आगामी बीएलओ प्रशिक्षण की तैयारी शुरू

जयपुर टाइम्स

जयपुर(निस)। निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी व मास्टर ट्रेनर्स के वीसी के माध्यम से प्रशिक्षण की अध्यक्षता करते हुए संयुक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. रौनक बैरागी ने मतदाता सूचियों के आगामी विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के संबंध में जानकारी दी। प्रशिक्षण में 3-17 जुलाई को आयोज्य बीएलओ प्रशिक्षण के लिए ट्रेनिंग स्ट्रक्चर, जिला निर्वाचन अधिकारी, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के उत्तरदायित्व और मॉनिटरिंग व रिपोर्टिंग पर प्रस्तुतिकरण विशेषाधिकारी ट्रेनिंग डॉ. रेणु पूनिया ने दिया। राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर मनीष कुमार ने बीएलओ के कार्य व उतरदायित्व पर प्रकाश डाला।संभागियों की शंकाओं का समाधान वीसी में किया गया। प्रशिक्षण में उप जिला निर्वाचन अधिकारी, 200 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी व लगभग 800 मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित रहे ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर बना प्रेमाराम के बुढ़ापे का सहारा, शिविर में ही मिला पेंशन स्वीकृति आदेश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अंतर्गत आयोजित हो रहे शिविर आमजन के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। मंगलवार को चूरू जिले के बीदासर उपखंड क्षेत्र की ज्याक ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर ज्याक के 58 वर्षीय प्रेमाराम के बुढ़ापे का सहारा बनकर आया। प्रेमाराम ने शिविर में उपस्थित होकर अवगत करवाया कि उनकी ओर से 29 मई को वृद्धावस्था पेंशन के लिए आवेदन किया गया था। इस पर शिविर में उपस्थित सुजानगढ़ एडीएम मंगलाराम पूनिया ने विकास अधिकारी को पीपीओ जारी करने के लिए निर्देशित किया। विकास अधिकारी ने त्वरित कार्यवाही करते हुए प्रेमाराम को पेंशन स्वीकृति आदेश जारी किया। प्रेमाराम ने पेंशन स्वीकृति आदेश प्राप्त कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार की ओर से चलाए जा रहे यह शिविर उनके बुढ़ापे का सहारा बनकर आएं हैं। इन शिविरों में लोक कल्याणकारी कार्य कर आमजन को लाभान्वित किया जा रहा है।

लायंस क्लब चूरू समर्पण ने किया चिकित्सकों का अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। विश्व डॉक्टर्स दिवस पर मानव सेवा के लिए सन्नद्ध लायंस क्लब चूरू समर्पण ने मंगलवार को उत्कृष्ट कार्य करने वाले चिकित्सकों का अभिनंदन किया गया। वरिष्ठ हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. नितिन बैरवा, वरिष्ठ फीजियोथेरेपिस्ट डॉ. सुमित शर्मा, दंत चिकित्सक डॉ. अक्षय शर्मा व डॉ. कमल वशिष्ठ का मार्ल्यापण कर, शॉल ओढ़ाकर व प्रतिक चिन्ह् प्रदान कर अभिनंदन किया गया। क्लब अध्यक्ष ओपी बैरवा ने कहा कि आमजन की सेवा में चिकित्सक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सेवाभावी चिकित्सकों का सम्मान समाज का महत्ती उत्तरदायित्व है। प्रांतीय सचिव लीडरशिप डॉ. कमल वशिष्ठ ने कहा कि लायंस क्लब विश्व भर में सेवा का पर्याय है। लायंस क्लब प्रवक्ता राजेन्द्र मुसाफिर ने बताया कि लायन्स क्लब इंटरनेशनल की ओर से पूरे विश्व में एक जुलाई को डॉक्टर्स व सीए दिवस मनाया जाता है। लायंस क्लब के सचिव पुनीत क्याल ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर लायन मंगतूराम सैनी, गणेश शर्मा, सुनील शर्मा, राजकुमार, वैभव शर्मा, पीयूष शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सीयाराम बाबा बगीची में श्रीरामकथा शुरू

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय रेल्वे स्टेशन के सामने स्थित सियाराम बाबा की बगीची में मंगलवार को श्रीरामकथा के आयोजन को लेकर प्रगति नगर के श्रीराम मंदिर से कलश यात्रा निकाली गई। मुख्य मार्गों से होती हुई कलश यात्रा में सैंकड़ों की संख्या में महिलाओं ने मंगल कलश धारण कर भाग लिया। रास्ते में जगह जगह व्यापारियों ने पुष्प वर्षा कर कलश यात्रा का स्वागत किया। सियाराम बाबा बगीची के संत गोवर्धन खालसा के श्रीमहंत श्यामसुंदर दास महाराज ने कहा कि गुरु पूर्णिमा महोत्सव व ब्रह्मलीन संतों की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में नौ दिवसीय श्रीराम कथा का वाचन केशवरायपाटन बूंदी के कथावाचक घनश्यामदास महाराज करेंगे। वहीं 10 जुलाई को को गुरु पूर्णिमा पर गुरु दीक्षा और इसी दिन हवन, पूर्णाहुति के बाद भंडारे का आयोजन होगा। कथा के पहले दिन मुख्य यजमान जयपाल सिंह, विनोद कंवर, सुदर्शन महाराज व प्रेमदास महाराज ने कथावाचक का स्वागत किया। कलश यात्रा की व्यवस्थाएं नरेंद्र भाटी, दामोदर शर्मा, मनीष स्वामी, महेंद्र टाक, गोलू स्वामी, शांति देवी, दिनेश स्वामी, शंकरलाल नाई, बाबूलाल जांगिड़, प्रेम माली ने संभाली।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारी प्राथमिकताः सुराणा

जिला कलक्टर ने किया उपखंड अधिकारी व तहसील कार्यालय का निरीक्षण

"राजस्व वाटिका" का किया उदघाटन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को चूरू उपखंड अधिकारी व तहसील कार्यालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखीं तथा कार्यालय परिसर के पास 'राजस्व वाटिका' का उद्घाटन किया और पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। हम सभी पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों को समझें तथा उनका समुचित निर्वहन करें। प्रत्येक व्यक्ति संकल्पित होकर पौधरोपण करे तथा परिवेश को हरा–भरा रखे। उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग की ओर से शुरू की गई यह 'राजस्व वाटिका' न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विभागीय प्रेरणा का भी स्रोत बनेगी। उपखंड अधिकारी व तहसील कार्यालय का निरीक्षण कर उन्होंने कहा कि कार्यालय व्यवस्थाओं का समुचित संचालन करें। कार्यालय में आने वाले फरियादियों को धैर्यपूर्वक सुनें तथा संवेदनशीलता से उनकी समस्याओं का निस्तारण करते हुए संतुष्ट करें। कार्यालय में राजस्व से जुड़े परिवादों का समयबद्ध निस्तारण करें तथा ई– फाइल मॉड्यूल में फाइलें मूव करें। उन्होंने कार्यालय में रिकॉर्ड रूम, कोर्ट परिसर, स्टाफ बैठक व्यवस्था, राजस्व परिवादों की स्थिति व निस्तारण, कार्यालय में सफाई व पौधरोपण सहित व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिला कलक्टर ने राजस्व वाटिका में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। एसडीएम बिजेन्द्र सिंह ने कार्यालय में व्यस्थाओं व पौधरोपण गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'राजस्व वाटिका' में 60 पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी सभी राजस्व कार्मिकों की है। सभी कार्मिक समुचित ढंग से पौधों की देखरेख करते हुए सर्वाइवल के लिए प्रयास करेंगे। इसी प्रकार गत वर्ष भी कार्यालय परिसर में 100 पौधे लगाए गए थे, जो शत प्रतिशत सर्वाइव कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि राजस्व वाटिका में विभिन्न प्रकार के फलदार, छायादार व औषधीय पौधे लगाए गए हैं, जिनकी देखरेख की जिम्मेदारी कार्यालय स्टाफ को सौंपी गई है। पौधों की सिंचाई के लिए ड्रिप इरिगेशन पद्धति की योजना बनाई गई है। तहसीलदार अशोक गोरा ने तहसील कार्यालय की व्यवस्थाओं की जानकारी दी। इस दौरान अतिरि?क्त प्रशासनिक अधिकारी प्रवीण कुल्हरी, कानूनगो देवकीनंदन, निजी सहायक सुरेश कुमार, विजेन्द्र सिंह, संदीप कुमार, सुनिल, उपेन्द्र, ऋतुराज, अशोक, महेन्द्र, प्रविन्द्र, नेहा, पूनम सहित राजस्व कार्मिक मौजूद रहे।

मोहर्रम के दौरान करें माकूल व्यवस्थाएं, सामाजिक सोहार्द की मिसाल रहे कायमः अभिषेक सुराणा

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में मोहर्रम व्यवस्थाओं की बैठक

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को जिला परिषद सभागार में जिला मुख्यालय पर 6 जुलाई को मोहर्रम के त्यौहार पर ताजिये निकाले जाने के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं को लेकर आयोजित बैठक में समुचित निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि मोहर्रम के दौरान माकूल व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं और जिले में सामाजिक सोहार्द की मिसाल कायम रहे। चूरू का आपसी भाईचारा और सांप्रदायिक सौहार्द्र हमेशा से एक मिसाल रहा है। हमारी यह कोशिश रहनी चाहिए कि चूरू की यही पहचान कायम रहे और हम लोग परस्पर मेल-मिलाप और सांप्रदायिक सौहार्द के साथ सभी धर्मों के त्योहार मनाते रहें। उन्होंने कहा कि शहर में निकलने वाले ताजिये के लिए सभी व्यवस्थाएं चाक -चौबंद हों और सभी के सहयोग से आयोजन को सफल बनाएं। मोहर्रम के दौरान किसी भी प्रकार की कोई परेशानी न रहे। उन्होंने अधिकारियों को सड़क, बिजली, जल सहित अन्य आवश्यक सेवाओं की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए। मोहर्रम कमेटी के सदस्यों की ओर से अवगत करवाई गई समस्याओं पर संज्ञान लेते हुए जिला कलक्टर ने शहर में बरसाती पानी भराव, सड़क पर साफ-सफाई, बिजली के खंभे, ट्रांसफार्मर, केबल नेटवर्क व बिजली के ढीले तारों, बैरिकेडिंग सहित अन्य व्यवस्थाएं दुरूस्त करने के निर्देश दिए। इस दौरान मौजूद मोहर्रम कमेटी के अध्यक्ष मोहम्मद अली खान ने मोहर्रम निकाले जाने के निर्धारित समय, रूट व आयोजन की जानकारी दी। सभी समिति सदस्यों ने आश्वस्त किया कि मोहर्रम के सफल आयोजन के साथ चूरू का आपसी भाईचारा और सौहार्द एक मिसाल के रूप में कायम रहेगा। इस दौरान एडीएम अर्पिता सोनी, एएसपी लोकेन्द्र दादरवाल, तहसीलदार अशोक गोरा, डिस्कॉम एसई आरपी वर्मा, जाकिर हुसैन, अलीशेर, अजीज, जावेद अली सहित अन्य मौजूद रहे।

जिला कलक्टर ने सहकारी बैंकों की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को डीओआईटी वीसी सभागार में सहकारी बैंकों की समीक्षा बैठक में अधिकारियों से विभागीय गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा कर समुचित निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला कलक्टर ने कहा कि बैंक अधिकारी बैंक की साख व व्यवसाय के लिए प्रभावी कार्ययोजना के साथ प्रयास करें। उन्होंने बैंक अधिकारियों से कहा कि अमानत राशि में वृद्धि, बकाया ऋण वसूली और ऋण वितरण के लक्ष्यों की पूर्ति समय पर सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सहकारी बैंक किसानों की आर्थिक रीढ़ हैं। इसलिए बैंकों सेवाओं की गुणवत्ता व पहुंच पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कुछ शाखा प्रभारियों की प्रगति पर असंतोष जाहिर करते हुए नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि अपने कार्यों के प्रति लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर पैनल्टी लगाई जाए। इसी के साथ गतिविधियों का नियमित एनालिसिस करते हुए प्रोग्रेस लाएं। बैंकों के प्रति अपनी जवाबदेहिता सुनिश्चित करें और डिपोजिट, वसूली आदि बढ़ाते हुए देखें कि बैंक नुकसान में न रहें। जिला कलक्टर ने डिपोजिट बढ़ाने, ब्रांचवार ऋण वितरण, पीएलडीबी, गोपाल क्रेडिट कार्ड, कृषि ?ऋण रिकवरी, अ?कृषि ऋण रिकवरी, एनपीए रिकवरी, मुख्यमंत्री एकमुश्त समझौता योजना, केन्द्र पोषित योजनाओं, केवाईसी, पेंडिंग रिपोर्ट सहित विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा कर समुचित निदेश दिए। सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक मदन लाल शर्मा ने बताया कि बैंक की ओर से ऋण वितरण प्रणाली को अधिक सुलभ और पारदर्शी बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और क्षेत्रीय शाखाओं को लक्ष्य पूर्ति के लिए अभियान चलाने के लिए निर्देशित किया गया है। उन्होंने बैठक की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए समुचित जानकारी दी। इस दौरान सहकारी बैंक अधिकारी मौजूद रहे।

मनीराम मेघवाल को शिविर में मिला घर का पट्टा तो जताया मुख्यमंत्री भजनलाल का आभार

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की संवेदनशील सोच के साथ पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अंतर्गत सम्पूर्ण प्रदेश में चल रहे शिविर आमजन के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। मंगलवार को चूरू के ढाढ़र में आयोजित शिविर गांव के ही मनीराम पुत्र लेखराम मेघवाल को जब उनकी आवासीय भूमि का पट्टा मिला तो अपनी खुशी जताते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त किया। मनीराम बताते हैं कि करीब 45 वर्षों से उनका परिवार गांव में निवास कर रहा हैं, लेकिन उनके परिवार को आबादी क्षेत्र में होने के बावजूद भी पट्टा नहीं मिला। वह बताते हैं कि सरकार की स्वामित्व योजना अन्तर्गत उन्हें उनके पुश्तैनी घर का मालिकाना हक मिला है। वह बताते हैं कि सम्पति कार्ड मिलने से पहले उनके पास उनकी जमीन के कोई अधिकारिक दस्तावेज नहीं थे, जिससे इनको बैंक से ऋण आदि सहित विभिन्न योजनाओं का लाभ भी नहीं मिल पा रहा था। अब उन्हें पट्टा मिलने से वह विभिन्न योजनाओं में भी लाभ ले सकेंगे। मनीराम ने कहा कि राजस्थान सरकार द्वारा चलाए जा रहे इन शिविरों से आमजन को काफी लाभ मिल रहा है।

हाईटेंशन लाइन टूटने से गांव के घरों में दौड़ा करंट, उपकरण जले, ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड क्षेत्र के गांव मेहरासर चाचेरा में मंगलवार को अचानक 11 हजार केवी की हाईटेंशन बिजली लाइन का तार टूटकर घरेलू एलटी लाइन पर गिर गया। इसके चलते गांव के घरों में अचानक हाई वोल्टेज करंट दौड़ गया। हादसे में घरों के बिजली मीटर, कूलर, पंखे, फ्रिज समेत कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जल गए। ग्रामीणों के मुताबिक इस हादसे से करीब दो लाख रुपये से ज्यादा का नुकसान हुआ है। घटना के बाद ग्रामीणों ने सरपंच लूणाराम मेघवाल के नेतृत्व में गांव के 33 केवी जीएसएस पर पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने बिजली विभाग पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया और नुकसान का सर्वे करवाकर उचित मुआवजा दिलवाने की मांग की। पूर्व सरपंच टंवरसिंह राठौड़ ने बताया कि गांव में जर्जर बिजली के तारों को बदलवाने के लिए कई बार विभाग के अधिकारियों को अवगत करवाया गया। लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। पहले भी 11 हजार केवी लाइन का तार गिरने की घटना दो बार हो चुकी है। जिससे लाखों का नुकसान हो चुका है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर समय रहते विभाग ने ध्यान नहीं दिया तो कोई बड़ा हादसा हो सकता है। प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों ने कहा कि जब तक उचित मुआवजे का आश्वासन नहीं मिलेगा। तब तक उनका प्रदर्शन जारी रहेगा। इस मौके पर काशीराम, भंवरसिंह राजपूत, भंवरलाल, प्रकाश, गजानंद पारीक, गौरीशंकर पारीक, प्रभुसिंह, सतपालसिंह, पर विक्रमसिंह सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

गाड़ी लूटकर फरार हुए आरोपियों को चंद घंटों में दबोचा

अवैध देशी कट्टा व जिन्दा कारतूस

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। कस्बे से लूटी गई काले रंग की एक्सयूवी गाड़ी को पुलिस ने कुछ ही घंटों में बरामद कर लिया है। घटना की सूचना मिलते ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चूरू लोकेन्द्र दादरवाल व रोहित सांखला आरपीएस के सुपरविजन में भानीपुरा थानाधिकारी रायसिंह के नेतृत्व में टीम गठित की गई। टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए ईलाका भानीपुरा में आरोपियों की तलाश की और आमजन के सहयोग से जगह-जगह नाकाबंदी करवाई गई। नाकाबंदी के दौरान सावर से जैतसीसर सड़क पर पुलिस टीम ने दोनों आरोपियों को धरदबोचा। पकड़े गए आरोपियों में राकेश पुत्र महावीर जाट उम्र 23 वर्ष निवासी किकरालिया रावतसर व विनोद पुत्र ओमप्रकाश मेघवाल उम्र 19 वर्ष निवासी मानकखेड़ी पीलीबंगा शामिल हैं। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लूटी गई एक्सयूवी गाड़ी के अलावा एक अवैध देशी कट्टा व जिंदा कारतूस भी बरामद किए हैं। इस संबंध में अभियोग संख्या 125/25 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच जारी है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि दोनों आरोपी आपराधिक प्रवृत्ति के हैं। राकेश के खिलाफ पहले भी कई गंभीर मामले दर्ज हैं। जिनमें हत्या, मारपीट, षड्यंत्र जैसी धाराएं शामिल हैं। वहीं आरोपी विनोद पर भी पहले से ही मारपीट व धमकी देने के मामले दर्ज हैं। थाना भानीपुरा के थानाधिकारी रायसिंह के नेतृत्व में विनोद कुमार, रामचन्द्र बुडानिया, अनिल कुमार, पवन कुमार व हरेंद्रपाल ने आरोपियों को पकड़ने में अहम भूमिका निभाई है।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।